# रूपाणिमितं

## (निमित्तशास्त्रम्)

**मूल ग्रन्थकर्ता**

परम पूज्य आचार्य श्री ऋषिपुत्र जी महाराज

**अनुवादक एवं सम्पादक**

परम पूज्य युवामुनि श्री सुविधिसागर जी महाराज

**प्राप्तिस्थान**

भरतकुमार इन्दरचन्द पापडीवाल

एन-९, ए-११७ - ४१/४,

शिवनेरी कॉलनी, सिडको,

औरंगाबाद. (महाराष्ट्र)

फोन संपर्क :- (०२४०) २३८१०६१

आवृत्ति - १
प्रति - ५०००

पुनर्प्रकाशन
हेतु सहयोग राशि
२५ रु. मात्र

प्रकाशनकाल
५-११-२००३

# समर्पण

विश्ववन्द्य श्रमणपरम्परा के मुकुटमणि,
अनेक गुणों के समाधार,उदारमनस्वी,
गात्रमात्रपरिग्रही,स्व-परहितैषी,
चतुर्विधाराधनाराधक, विशिष्ट चिन्तक,
परिशुद्धमतिधारक,महागुणधनी,
जितमदनविलासी, व्यावृत्यवित्तस्पृह,
मानवता के मानद प्रतीक, महाप्राज्ञ,
शालीन व्यवहार के व्यवहर्त्ता, लोकज्ञ,
भक्तों के हृदयाभरण, अविचल संकल्प के
स्वामी, भक्ति-कर्म, ज्ञान-प्रतिभा-प्रेम-
परिश्रमादि अनेकानेक गुणरत्नों के रत्नागार,
प्रतिभापर, प्रशमाकर, गुरुद्वय अर्थात्
परमपूज्य आचार्य शिरोमणि
श्री सन्मतिसागर जी महाराज
और
परम पूज्य आचार्यकल्प श्री
हेमसागर जी महाराज के
पावन करकमलों में प्रस्तुत कृति
सभक्ति समर्पित

# मनोगत

श्रुतसमुद्र अत्यन्त विशाल है। केवलज्ञान और श्रुतज्ञान में विषयवस्तु की अपेक्षा कोई भिन्नत्व नहीं है। केवलज्ञान जितनी और जिन वस्तुओं को प्रत्यक्ष जानता है, उन्हीं और उतनी वस्तुओं को श्रुतज्ञान परोक्षरूप से जानता है। प्रत्यक्ष और परोक्षकृत अन्तर ही केवलज्ञान और श्रुतज्ञान में पाया जाता है।

श्रुतज्ञान अंगबाह्य और अंगप्रविष्ठ के भेद से दो प्रकार का है। अंगप्रविष्ठ श्रुतज्ञान आचारांग आदि बारह अंगों में विभाजित है। बारहवें अंग का नाम दृष्टिवाद है। उसके परिकर्म, सूत्र, प्रथमानुयोग, पूर्वगत और चूलिका ये पाँच भेद हैं। पूर्वगत चौदह भेदों वाला है। विद्यानुवाद पूर्वगत का दसवाँ पूर्व है। यह पूर्व समस्त जैनमन्त्रों व ज्योतिष का उद्गाता है। उसमें अष्टांग निमित्तों का वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त परिकर्म नामक दृष्टिवादांग में ज्योतिष से सम्बन्धित सम्पूर्ण रहस्य अंकित हैं।

उन्हीं अंगों और पूर्वों का अंश प्रस्तुत ग्रन्थ में प्राप्त होता है।

इस ग्रन्थ का नाम दव्वणिमित्तं अर्थात् निमित्तशास्त्रम् है।

ग्रन्थ के प्रारम्भ में ग्रन्थकर्त्ता ने भगवान आदिनाथ को नमस्कार किया है। तत्पश्चात् भगवान महावीर को नमन करके ग्रन्थकर्त्ता ने ग्रन्थ को रचने की प्रतिज्ञा की है।

चौथी गाथा में निमित्त के तीन भेद किये गये हैं। यथा -

**णमिऊण वड्ढमाणं णवकेवललद्धिमंडियं विमलं।**

**वोच्छं दव्वणिमित्तं रिसिपुत्तयणामदो तत्थ ॥२॥**

**अर्थ :-** नौ केवललब्धियों से मण्डित, अत्यन्त विमल श्री वर्धमान स्वामी को नमस्कार करके मैं (ऋषिपुत्र) दव्वणिमित्तं अर्थात् निमित्तशास्त्र नामक ग्रन्थ का कथन करता हूँ।

तत्पश्चात् ग्रन्थकर्त्ता लिखते हैं कि मैं चारणमुनियों के द्वारा दृष्ट, उन्हीं के द्वारा वर्णित तथा निमित्तज्ञानियों के द्वारा कथित निमित्तों

का वर्णन करूंगा।

अपनी प्रतिज्ञा का निर्वहण करते हुए ग्रन्थकर्त्ता ने चौदह प्रकार के निमित्तों का कथन करते हुए ग्रन्थ का विस्तार किया है।

१ :- यह प्रकरण गाथा ७ से २१ पर्यन्त अर्थात् १५ गाथाओं में विस्तृत है। इस प्रकरण में ग्रन्थकर्त्ता ने सूर्यसम्बन्धित निमित्तों का विस्तारपूर्वक कथन किया है।

२ :- यह प्रकरण गाथा २२ से ३२ पर्यन्त अर्थात् ११ गाथाओं में विस्तृत है। इस प्रकरण में ग्रन्थकर्त्ता ने मेघसम्बन्धित निमित्तों का विस्तारपूर्वक कथन किया है।

३ :- यह प्रकरण गाथा ३३ से ४३ पर्यन्त अर्थात् ११ गाथाओं में विस्तृत है। इस प्रकरण में ग्रन्थकर्त्ता ने चन्द्रसम्बन्धित निमित्तों का विस्तारपूर्वक कथन किया है।

४ :- यह प्रकरण गाथा ४४ से ६४ पर्यन्त अर्थात् २१ गाथाओं में विस्तृत है। इस प्रकरण में ग्रन्थकर्त्ता ने सामान्य उत्पातलक्षणों को देखकर उससे शुभाशुभ को जानने की विधि दर्शायी है।

५ :- यह प्रकरण गाथा ६५ से ६९ पर्यन्त अर्थात् ५ गाथाओं में विस्तृत है। इस प्रकरण में ग्रन्थकर्त्ता ने वर्षा से सम्बन्धित अनेक उत्पातों का वर्णन किया है।

६ :- यह प्रकरण गाथा ७० से ९२ पर्यन्त अर्थात् २३ गाथाओं में विस्तृत है। इस प्रकरण में प्रतिमाओं के विकृतरूप से हो जाने पर प्राप्त होने वाले फलों का कथन किया गया है।

७ :- यह प्रकरण गाथा ९३ से १०० पर्यन्त अर्थात् ८ गाथाओं में विस्तृत है। राजा के छत्र का भंग आदि होने पर क्या फल होते हैं ? इनका वर्णन करने के लिए इस प्रकरण की रचना हुई है।

८ :- यह प्रकरण गाथा १०१ से ११५ पर्यन्त अर्थात् १५ गाथाओं में विस्तृत है। इन्द्रधनुष के माध्यम से आगामी काल में होने वाले शुभाशुभ फल को जानने की विधि इस प्रकरण में प्रदर्शित की गयी है।

९ :- यह प्रकरण गाथा ११६ से १३३ पर्यन्त अर्थात् १८ गाथाओं में विस्तृत है। उल्काओं का पतन होने पर कौन-कौनसे शुभाशुभ फलों की प्राप्ति होती है ? इस विषय को प्रस्तुत प्रकरण में विशदरूप से स्पष्ट

किया गया है।

१० :- यह प्रकरण गाथा १३४ से १४७ पर्यन्त अर्थात् १४ गाथाओं में विस्तृत है। इस प्रकरण में गन्धर्वनगर के कारण से ज्ञात होने वाले शुभाशुभ फल का बोध कराया गया है।

११ :- यह प्रकरण गाथा १४८ से १५३ पर्यन्त अर्थात् ६ गाथाओं में विस्तृत है। उत्पलपतन की घटना को देखकर उसके द्वारा शुभाशुभ फल को जानने के उपाय इस प्रकरण में वर्णित है।

१२ :- यह प्रकरण गाथा १५४ से १६२ पर्यन्त अर्थात् ९ गाथाओं में विस्तृत है। विद्युल्लता को देखकर समस्त इष्टानिष्ट फलों को जानने के उपाय इस अध्याय में बताये गये हैं।

१३ :- यह प्रकरण गाथा १६३ से १७५ पर्यन्त अर्थात् १३ गाथाओं में विस्तृत है। इस प्रकरण में मेघविषयक योग प्रकट किये गये हैं।

१४ :- यह प्रकरण गाथा १७६ से १८५ पर्यन्त अर्थात् १० गाथाओं में विस्तृत है। धूमकेतु को देखकर उससे भविष्यकालीन फलों को जानने के उपायों का वर्णन इस प्रकरण में किया गया है।

इसके पश्चात् दो गाथाओं में ग्रन्थ का उपसंहार किया गया है।

इसप्रकार इस ग्रन्थ में कुल १८७ गाथायें हैं।

इस ग्रन्थ के रचयिता कौन हैं ? इस प्रश्न का उत्तर खोजना अतिशय सरल है क्योंकि ग्रन्थकर्त्ता ने इस ग्रन्थ में अपने नाम का प्रयोग तीन बार किया है।

द्वितीय गाथा में ग्रन्थ की रचना करने की प्रतिज्ञा करते हुए ग्रन्थकार ने अपना और ग्रन्थ का नाम लिखा है। उसके अतिरिक्त दो स्थानों पर उनके नाम का उल्लेख स्पष्टरूप से हुआ है। यथा :-

१:- अह खलुमारिसिपुत्तिय णाणणिमुत्तुपाय ।
पस्सयणं पक्खइस्सामि वग्गमुणि सिद्धकम्मं ॥
जोइसणाणो विहपणदिऊ णष्याव्वसव्वणितुप्पायं ।
तं खलु तिविहेण वोच्छामि ॥३॥

अर्थः- यह निश्चय है कि निमित्तशास्त्र तीन प्रकार का है। ज्ञानी पुरुषों ने निमित्तशास्त्र का जैसा निरूपण किया है, मैं ऋषिपुत्र भी वैसा ही निरूपण

करूंगा।

२ :- एवं बहुप्पयारं पुप्पायपरंपराय णाऊणं।

रिसिपुत्तेण मुणिणा सव्वप्पियं अप्पगंथेण ॥१८७॥

**अर्थ :- इसतरह अनेक प्रकार से उत्पातों का स्वरूप मुझ ऋषिपुत्र मुनि ने स्व-बुद्धि के अनुसार इस छोटे से ग्रन्थ में बताये है।**

ग्रन्थकर्त्ता इस ग्रन्थ का नाम **दव्वणिमित्तं** मानते हैं। यह तथ्य द्वितीय गाथा के **वोच्छं दव्वणिमित्तं** इस चरण से ज्ञात होता है।

## ग्रन्थप्राप्ति का इतिहास :-

ब्यावर चातुर्मास करके दिसम्बर १९९८ में मैं अजमेर पहुँचा। अजयमेरु नाम से प्रसिद्ध यह शहर सांस्कृतिक विरासतों का मुख्य केन्द्र है। यहाँ भट्टारक परम्परा की गद्दी भी थी। विशाल जैनमन्दिरो से सम्पन्न इस शहर में अनेक प्राचीन ग्रन्थभण्डारों का दर्शन करके मन अतिशय सन्तुष्ठ हुआ।

अजमेर गया हुआ कोई भी व्यक्ति सोनी जी की नसिया से अपरिचित नहीं रह सकता। चाहे जैन हो या अजजैन, सोनी जी की नसिया में स्थित अयोध्या नगरी की रचना को देखने के लिए अवश्य आता है।

उसी विशाल नसिया में एक विशाल ग्रन्थभण्डार (श्री सिद्धकूट चैत्यालय सरस्वती भण्डार) है। उसमें आधुनिक युग में प्रकाशित किये गये कृतियों का संकलन तो है ही, साथ में हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का भी संकलन है। ग्रन्थभण्डार इतना व्यवस्थितरूप में सुसज्जित था कि उसे देखकर मन व्यवस्थापकों की प्रशंसा करने का लोभ संवरण ही न कर पाया।

उससमय इन्दरचन्द जी पाटनी उस ग्रन्थभण्डार की देखभाल करते थे। उन्होंने हमारी इच्छा का आदर करते हुए हमें एक-एक करके भण्डार में स्थित सारी हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का दर्शन कराया। उन ग्रन्थों में हमें **निमित्तशास्त्रम्** नामक ग्रन्थ उपलब्ध हुआ। उसे देखकर हमें बहुत आश्चर्य हुआ, क्योंकि तबतक हमारे लिए **आचार्य श्री ऋषिपुत्र जी महाराज** का नाम अश्रुतपूर्व था। हमने ग्रन्थ को आद्योपान्त

पढ़ा। मंगलाचरण में भगवान आदिनाथ और जिन भगवान की स्तुति को पाया तो इस कृति का जैनत्व स्वयमेव सिद्ध हो गया। इस निश्चय के उपरान्त हमने इस ग्रन्थ का अनेकों बार स्वाध्याय किया।

देवलगाँव राजा के चातुर्मास में अनेक बार जैनज्योतिष विषयक चर्चा में इस ग्रन्थ का नाम आया। तब वे कुछ साधुओं में भी इस ग्रन्थ के मर्म को समझने की इच्छा जागृत हुई। उन्हें समझाने के उद्देश्य से ही इस कृति का प्रणयन हुआ।

इस बात को प्रामाणिकता से स्वीकार करने में मुझे कोई झिझक नहीं है कि यह अनुवाद मेरा स्वतन्त्र अनुवाद नहीं है। हस्तलिखित पाण्डुलिपि में ढूंढारी भाषा में अज्ञातकर्तृक एक अनुवाद है, जिसका प्रकाशन इसी कृति के परिशिष्ट में किया जा रहा है, उसका सहयोग लेकर मैंने इस अनुवाद को १९९७ में किशनगढ के वर्षायोग में किया था। देवलगाँव राजा में प्रत्येक प्रकरण के अन्त में प्रकरणवर्णित विषय का विशदीकरण किया गया है। इस कार्य के लिए भद्रबाहु संहिता और अन्य ज्योतिषीय ग्रन्थों का सहयोग लिया है।

सौभाग्य से मुझे श्री कल्याण पावर प्रिण्टिंग प्रेस (सोलापुर) से प्रकाशित वर्द्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री के व्दारा सम्पादित और पण्डित श्री लालाराम जी शास्त्री के व्दारा अनुवादित ग्रन्थ प्राप्त हुआ।

गुरुव्दय की अनुकम्पा से ही यह अनुवाद पूर्ण हुआ है। मैं ज्योतिष का ज्ञाता नहीं हूँ। फिर भी मैंने गुरुभक्ति से प्रेरित होकर इस कृति का अनुवाद किया है। इस अनुवाद में यदि कहीं तृटी रह गयी हो तो सुधीजन सुधारने का कष्ट करें।

ज्योतिष और कर्मसिद्धान्त दोनों का गम्भीरतापूर्वक विचार करने पर दोनों में किसीप्रकार का विरोधाभास परिलक्षित नहीं होता। इन दोनों की विषयविवेचना को समझना अनिवार्य है। उसे ज्ञात किये बिना इस ग्रन्थ का स्वाध्याय करने वाले भव्य के मन में अनेक प्रश्न जागृत हो सकते हैं।

संसार में जीव के साथ घटने वाली प्रत्येक घटना के पीछे किसी न किसी कर्म की गति कारणीभूत होती है। मनुष्य ने पूर्वभव में जो कुछ शुभ अथवा अशुभ कर्म उपार्जित किया था, इस भव में वह उन कर्मों का

उदय होने पर तद्रूप फल प्राप्त करता है, यह सर्वमान्य सिद्धान्त है।

कर्मसिद्धान्त के अनुसार कर्मों की स्थिति और अनुभाग में अन्तर लाया जा सकता है, क्योंकि कर्म द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव का निमित्त पाकर अपना फल देने में समर्थ होते हैं।

तीर्थंकर भगवान को जिन कर्मों का उदय होता है, उनमें एक असाता वेदनीय भी है। इसी कारण तत्त्वार्थसूत्रकार ने उपचार से उनके ग्यारह परीषह स्वीकार किये हैं। उनका असाता वेदनीय कर्म भी साता में संक्रमित होकर फल देता है।

मनुष्यगति में नाना जीवों की अपेक्षा से उदय में आने वाले कर्मों की संख्या १०२ है। प्रतिसमय कर्म उदय में आ रहे हैं। यदि उनका फल भोगना अनिवार्य हो जायेगा, तो अविपाक निर्जरा के और मोक्षमार्ग के कारणों का सेवन करना व्यर्थ ही ठहरेगा। नहीं, कर्मों में हम अपने पुरुषार्थ के प्रभाव से परिवर्तन ला सकते हैं।

बाह्यनिमित्तों को देखकर विशिष्ट श्रुतज्ञान के प्रभाव से उनका फल कर्मों के उदय से पूर्व भी जाना जा सकता है। आगम में श्रुतज्ञान के लिंगज और शब्दज ये दो भेद किये हैं। लिंगज श्रुतज्ञान अर्थ से अर्थान्तर का बोध कराता है। आगामी काल में होने वाली घटनाओं का आज ही संकेत करने वाला होने से ज्योतिषशास्त्र मात्र संकेतशास्त्र है।

व्यवहारनिपुण और पुरुषार्थकुशल भव्य ज्योतिषशास्त्र के बल पर कर्मों की गति को जानकर सजग हो जावें, यही इस ग्रन्थरचना का वास्तविक उद्देश्य है।

इस ग्रन्थ के संशोधन कार्य में मुझे संघ के साधुओं ने महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया है, उनके ही परिश्रम के फल से इस ग्रन्थ का प्रकाशन सम्भव हुआ है। इस ग्रन्थ के प्रकाशन में मुझे प्रत्यक्ष और परोक्षरूप से अनेक श्रुतभक्त भव्य श्रावक–श्राविकाओं ने सहयोग प्रदान किया है। उन समस्त सहयोगियों को विशिष्ट श्रुतज्ञान और निर्दोष चारित्ररत्न की प्राप्ति हो, यही मेरा आशीर्वाद है।

आइये, इस अपूर्व ग्रन्थ का स्वाध्याय करके ज्ञान का अर्जन करें, जिससे कि धर्मसाधना निर्विघ्न सम्पन्न हो सके।

**मुनि सुविधिसागर**

# अनुवादक का परिचय

औरंगाबाद शहर धार्मिक और सामाजिकदृष्टि से अनेक सन्तों, विचारकों तथा सुधारकों का जन्म या कार्यक्षेत्र रहा है। इसी शहर में ११-३-१९७१ को रात्रिकालीन अन्धःकार में तमस से द्वंद्व करने वाले जयकुमार नामक पूर्णचन्द्र का जन्म हुआ। श्रीमान् इन्दरचन्द जी पापडीवाल और माता कंचनबाई की आँखों का तारा यह सपूत एकदिन विश्ववन्द्य श्रमणेश्वर के पद पर आसीन हो जायेगा - यह शायद किसी ने सोचा तक नहीं होगा।

जयकुमार बचपन से ही विद्याभ्यासंगी, परिश्रमी, पराक्रमी, सुहास्यवदनी, प्रज्ञापुंज, विनयी और दृढप्रतिज्ञ थे। किसी भी कार्य को प्रारंभ करके पूर्णत्व तक ले जाना उनके स्वभाव में ही था। दया और सहयोग उनके गुणालंकार थे। बडों की विनय करना परन्तु अपनी बात स्पष्ट शब्दों में व्यक्त करना तो उनकी विशेषता थी। भय भी उनके नाम से भय खाता था। विनोदप्रियता और अजातशत्रुता उनको प्राप्त हुआ सृष्टिप्रदत्त उपहार ही था।

जो परिस्थितियों से दो हाथ करना नहीं जानता हो, वह कभी महान नहीं बन सकता। संघर्ष ही उत्कर्ष का बीज है। जन्म के उपरान्त तीसरे ही दिन आपकी आँखों में नासुर नामक रोग हुआ। अबतक उसकी छह बार शल्यचिकित्सा हो चुकी है। बचपन से आपकी कमर खराब है, फलतः पाँच वर्षपर्यन्त आप बैठ नहीं पाते थे। यद्यपि अनेकों उपचार किये गये, परन्तु आज भी उपर्युक्त ये दो अंग कमजोर अवस्था में हैं।

जयकुमार ने पाँचवीं कक्षा तक का अध्ययन औरंगाबाद में ही किया। तत्पश्चात् तीन वर्षों तक का अध्ययन उन्होंने बालब्रह्मचर्याश्रम-बाहुबली **(कुम्भोज)** में किया। शिक्षा के अन्तिम दो वर्ष पुनः औरंगाबाद में ही व्यतीत हुये। आपने लौकिकदृष्टि से मात्र दसवीं कक्षा तक ही अध्ययन किया है, परन्तु आपकी अध्ययनशीलता ने समस्त उपमानों को पीछे छोड दिया है। आप निजी अध्ययन के साथ-साथ अपनी बहन विजया व भाई भरतकुमार को भी पढाया करते थे। आप घर में अद्वितीय

**(प्रथम)** थे तो बुद्धि में भी अद्वितीय थे।

अति-बालपन से ही आपको धार्मिक संस्कारों से विभूषित किया गया था। आपने आयु के दसवें वर्ष में ही परम पूज्य आचार्य श्री समन्तभद्र जी महाराज से शुद्रजलत्याग, रात्रिभोजनत्याग, कन्दमूलत्याग और पच्चीस वर्ष का होने तक ब्रह्मचारी रहने का नियम लिया। जब आप दूसरी कक्षा में पढ़ते थे, तभी से आपने चाय का त्याग कर दिया था। आपका त्याग इतना सहज था कि दूसरों को कभी कष्ट नहीं हुआ। आप किसी वस्तु का त्याग करते थे तो उसके बदले में अन्य वस्तु की चाहना नहीं करते थे।

आप गुरु का अन्वेषण कर रहे थे। महाराष्ट्र प्रान्त के शेलू नामक गाँव में आपने परम पूज्य आचार्यकल्प श्री हेमसागर जी महाराज के दर्शन किये। उनकी चर्या एवं ज्ञान से अभिभूत होकर आपने उनके चरणों में श्रीफल भेंट किया एवं अपने विचारों से उन्हे अवगत कराया। उनकी अनुज्ञा से ही जयकुमार ने दसवीं तक की शिक्षा प्राप्त की। २८-४-८६ को घर का आजीवन त्याग करके चरित्रनायक ने गुरुचरणों की शरण को वरण किया।

जलगाँव जिले के नेरी नामक गाँव में आपने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया। रागियों के रंग-बिरंगे वस्त्रों को त्याग कर आपने श्वेतवस्त्र परिधान किये। वह अक्षयतृतीया का पावन दिवस था। गुरुदेव ने आपको **जैनेन्द्रकुमार** यह नवीन नाम प्रदान किया। गुरु का अनुगमन करते हुए आप अतिशय क्षेत्र कचनेर जी पहुँचे। आषाढ़ शुक्ला अष्टमी के दिन आपने चिन्तामणि पार्श्वनाथ प्रभु के समक्ष गुरु के द्वारा सप्तम प्रतिमाव्रत धारण किया। तदनन्तर आप गुरुदेव के चरणों में अध्ययनरत हो गये।

१३-३-८७ को आपने क्षुल्लक दीक्षा धारण की। जन्मभूमि से केवल ५५ कि.मी. दूरी पर स्थित शिऊर नामक गाँव में यह समारोह सम्पन्न हुआ। पूज्य गुरुदेव ने आपका नाम **रवीन्द्रसागर** रखा। सन् १९८७ का वर्षायोग न्यायडोंगरी (जि. नाशिक) में हुआ। वर्षायोग के तत्काल बाद २३-१०-१९८७ को आपने ऐलक दीक्षा स्वीकार की। गुरुदेव ने आपको **रूपेन्द्रसागर** इस नाम से अलंकृत किया। आपने

गुरु के साथ सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी के दर्शन किये तथा सौनज (मालेगाँव) से आपने अलग विचरण करना प्रारंभ किया।

विहार करते-करते आप अपने दादागुरु परमपूज्य आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज के चरणों में पहुँचे। अतिशय क्षेत्र ऋषभ (जि. डूंगरपुर) में आपने दादागुरु के करकमलों से ११-५-१९८९ को मुनिदीक्षा ग्रहण की। मुनिदीक्षा का प्रथम चातुर्मास गुरुदेव के साथ सम्पन्न करके आपने अलग विहार कर दिया। आत्मसाधना आपका ध्येय था तो सारा समाज प्रबोधित हो यह आपकी पवित्र इच्छा थी। इन दोनों ही लक्ष्यों को सिद्ध करते हुए आपने अनेक गाँवों और शहरों को अपनी चरणरज से पवित्र किया।

आपकी प्रवचनशैली बे-जोड है। आपके प्रवचन में केवल ओज ही नहीं, अपितु साथ में आगम की धाराप्रवाहिकता भी है। विषय की सर्वांगिनता, दृष्टान्त की सहजता और शैली में नयविवक्षा का होना आपके प्रवचनों का वैशिष्ट्य है। प्रवचनशैली की तरह ही आपकी अध्यापनशैली अनुपम है। प्रत्येक चातुर्मास में आप नवयुवकों को धार्मिक शिक्षण कराते हैं। फिजुलखर्चीपना आपको रुचिकर नहीं है तथा समय की पाबन्दी में आप सबके लिए एक आदर्श उदाहरण हैं।

आप अनेक विशेषताओं से सम्पन्न हैं और अनेक सद्गुणों के समाधार भी। आपकी समस्त विशेषताओं को विलोक कर दूरदृष्टिवान गुरुदेव ने १९९५ में आपको आचार्यपद प्रदान करने की घोषणा की। पदों के प्रति निरासक्त रहते हुए आपने गुरुदेव से निवेदन किया कि हे गुरुदेव! आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो आचार्यपद नहीं, अपितु अपने दो पद (चरणयुगल) प्रदान कीजिये ताकि चारित्रपथ का अनुगमन करते हुए मैं कभी थकावट का अनुभव न करूं। बालयोगी, शब्दशिल्पी जैसे कितने ही पदों को आपने ग्रहण नहीं किया।

आपकी रुचि प्राचीन शास्त्रों की सुरक्षा में है। आप जहाँ भी जाते हैं, वहाँ के हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के ग्रन्थागार का अवलोकन अवश्य करते हैं। अप्रकाशित ग्रन्थों का प्रकाशन कराना आपका ध्येय है। अबतक संघ से वेरग्गसार, दव्वसंग्गह आदि ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है जो कि मात्र पाण्डुलिपि में ही उपलब्ध थे। मिथ्यात्वनिषेध, श्रीपुराण,

[illegible] सामायिक पाठ, स्वानुभवरसनामृतम् आदि ग्रन्थ भी प्रकाशनाधीन हैं।

परिचय के लेखन तक आप ३ मुनि, ९ आर्यिका, एक क्षुल्लक एवं एक क्षुल्लिका दीक्षा दे चुके हैं। अबतक आपके सानिध्य में १ मुनि व ५ आर्यिकाओं की सल्लेखना हो चुकी है। इतने अपार वैभव के धनी होकर भी आपको अहंकार स्पर्श तक न कर पाया। आपकी चर्या सहज है और आपकी चर्चा अतिमार्मिक है। आपकी स्पष्टवादिता और सरलता ही ऐसा अद्भुत वशीकरण मन्त्र है कि श्रावकवर्ग आपके पास खिंचा चला आता है।

आपके कारण जैनों का धर्मध्वज गर्वयुक्त होकर लहरा रहा है - वह ऐसा ही लहराता रहें, आपकी धर्मप्रभावना व ज्ञानसाधना दिन दूगुणी और रात चौगुणी बढ़ती रहें, आपका शिष्य-परिवार दिनों-दिन विकसित होता रहें, आपको स्वास्थ्य-ऐश्वर्य की प्राप्ति हों, आपके द्वारा नित-नवीन ग्रन्थों का अनुवाद होकर प्रकाशन होता रहें, आपका नाम साधकशिष्यों के लिए आदर्श बनें, आपका यश दिग्दिगन्त में फैलता रहें तथा आप दीर्घायुषी बनकर निरन्तर आध्यात्मिक प्रगति करते रहें यही हम सबकी मंगल कामना है।

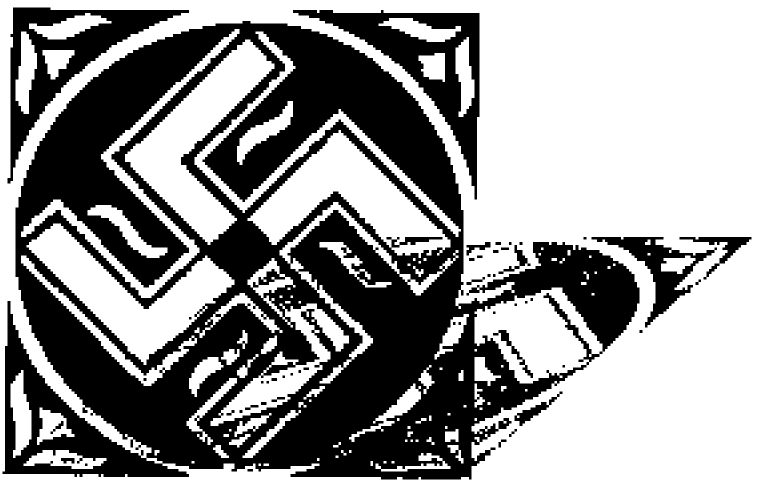

# अनुक्रमणिका


| क्रमांक | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १ | भगवान आदिनाथ की स्तुति | १ |
| २ | भगवान महावीर की स्तुति | १ |
| ३ | प्रतिज्ञा | २ |
| ४ | निमित्त के भेद | २ |
| ५ | निमित्तों का कथन करने की प्रतिज्ञा | ३ |
| ६ | सूर्य प्रकरण | ४ |
| ७ | मेघयोग प्रकरण | ११ |
| ८ | चन्द्र प्रकरण | १५ |
| ९ | उत्पातयोग प्रकरण | २० |
| १० | वर्षाविषयक उत्पात | ३० |
| ११ | देवोत्पात प्रकरण | ३३ |
| १२ | राजोत्पात प्रकरण | ४४ |
| १३ | इन्द्रधनुष प्रकरण | ४७ |
| १४ | उल्कापतन प्रकरण | ५२ |
| १५ | गन्धर्वनगर प्रकरण | ६० |
| १६ | उत्पलपतन प्रकरण | ६९ |
| १७ | विद्युल्लता प्रकरण | ७१ |
| १८ | मेघयोग प्रकरण | ८० |
| १९ | धूमकेतु प्रकरण | ९० |
| २० | ग्रन्थसमापन | ९४ |
| २१ | अन्तिम निवेदन | ९४ |
| २२ | अज्ञातकर्तृक अनुवाद | ९५ |
| २३ | श्लोकानुक्रमणिका | ११० |
| २४ | हमारे उपलब्ध प्रकाशन | ११३ |

# निमित्तशास्त्रम्

**सो जयउ जयउ उसहो अणंतसंसारसायणुत्तिण्णो।**
**झाणेणलेण जेयण लीला इङ्खिञ्जि जियमणो ॥१॥**

**अर्थ :-**

अनन्त संसार को इन्द्रियों के दमन का उपदेश देकर जो ध्यान में लीन हुए, वे भगवान आदिनाथ जयवन्त हो-जयवन्त हो ।

**भावार्थ :-**

ग्रन्थ के आरम्भ में ग्रन्थकार श्री ऋषिपुत्राचार्य आदिनाथ भगवान का जयघोष कर रहे हैं। कैसे हैं वे आदिनाथ ? संसार में संसरण करने वाले अनन्तानन्त भव्यजीवों को संसार के कारणभूत इन्द्रियों के व्यापार का दमन करने की शिक्षा देने वाले हैं तथा ध्यान में मग्न हैं।

**णमिऊण वड्ढमाणं णवकेवललद्धिमंडियं विमलं।**
**वोच्छं दव्वणिमित्तं रिसिपुत्तयणामदो तत्थ ॥२॥**

**अर्थ :-**

नौ केवललब्धियों से मण्डित, अत्यन्त विमल श्री वर्धमान स्वामी को नमस्कार करके मैं (ऋषिपुत्र) दव्वणिमित्तं अर्थात् निमित्तशास्त्र नामक ग्रन्थ का कथन करता हूँ ।

**भावार्थ :-**

क्षायिक भाव के नौ भेद हैं । यथा - केवलदर्शन, केवलज्ञान, क्षायिक सम्यग्दर्शन, क्षायिक सम्यक्चारित्र तथा पाँच क्षायिक लब्धियाँ (दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य) । इन्हीं नौ भावों को आगम में केवललब्धि इस संज्ञा से अलंकृत किया गया है ।

श्री वर्द्धमान स्वामी इन लब्धियों से मण्डित हैं। ग्रन्थकार चरम तीर्थंकर श्री वर्द्धमान भगवान को नमस्कार करके प्रतिज्ञा करते हैं कि

मैं निमित्तशास्त्र नामक ग्रन्थ का कथन करूंगा।

**अह खलुमारिसिपुत्तिय णाणणिमुत्तुपाय।**
**परसयणं पक्खइस्सामि वमामुणि सिद्धकम्मं॥**
**जोइसणाणो विहपणविऊगव्वाव्वसव्वणितुप्पायं।**
**तं खलु तिविहेण वोच्छामि॥३॥**

**अर्थ :-**

यह निश्चय है कि निमित्तशास्त्र तीन प्रकार का है। ज्ञानी पुरुषों ने निमित्तशास्त्र का जैसा निरूपण किया है, मैं ऋषिपुत्र भी वैसा ही निरूपण करूंगा।

**भावार्थ :-**

निमित्तशास्त्रों में तीन प्रकार के निमित्तों का कथन पाया जाता है। ग्रन्थकार कहते हैं कि मैं पूर्वाचार्यों के मत का अनुसरण करते हुए उन तीनों का वर्णन करूंगा।

इस गाथा के व्दारा ग्रन्थकार ने अपनी आत्मकर्तृता का निषेध किया है तथा स्वेच्छाचारिता को निरस्त करते हुए पूर्वाचार्यों के मत की पुष्टि की है। इससे इस ग्रन्थ की प्रामाणिकता भी सुस्पष्ट हो जाती है।

**जे दिट्ठ भुविरसण्ण जे दिट्ठा कुहमेण कत्ताणं।**
**सदसंकुलेण दिट्ठा वउसट्ठिय ऐण णाणधिया॥४॥**

**अर्थ :-**

जो भूमि पर दिखाई पड़ें, जो आकाश में प्रकट होते हों तथा जिसका शब्द सुनाई दे, इसतरह निमित्त तीन भेदों वाला है ऐसा ज्ञान से जाना जाता है।

**भावार्थ :-**

निमित्त तीन प्रकार के होते हैं -

१. जो भूमि पर दिखाई पड़ें। जैसे - चंचल पदार्थों का अचल हो जाना।

२. जो आकाश में प्रकट होते हो। जैसे- सूर्योदय के समय दिशायें लहू के समान लाल होना अथवा सूर्यास्त के समय सूर्य से धुआँ निकल रहा है ऐसा दिखाई देना।
३. जिसका शब्द सुनाई दे। जैसे- काकशब्द, उलूकशब्द आदि।

**जे चारणेण दिट्ठा अणं दो सायसहम्मणाणेण।**
**जो पाहुणेण भणिया तं खलु तिविहेण वोच्छामि ॥५॥**

**अर्थ :-**

चारणमुनियों ने जिसतरह देखा तथा उन्होंने अपने ज्ञान के द्वारा जिसप्रकार से उसके शुभाशुभ का कथन किया - अन्य पण्डितों ने भी जैसा वर्णन किया है, मैं उस तीन प्रकार के निमित्तज्ञान का वैसा ही वर्णन करता हूँ।

**भावार्थ :-**

जैनागम की परिपाटी पूर्वाचार्यों का अनुसरण करने वाली है। ग्रन्थकर्त्ता कहते हैं कि मैं अपने मन से कुछ भी नहीं कहूँगा। पूर्व में चारणऋद्धि के धारक मुनियों ने या अन्य विद्वान आचार्यों ने जैसा वर्णन किया है, मैं भी वैसा ही वर्णन करूंगा।

**सूरोदय अच्छमणे चंदमसरिक्खमग्गहचरियं।**
**तं पिच्छियं णिमित्तं सव्वं आएसिहं कुणहं ॥६॥**

**अर्थ :-**

सूर्योदय से पूर्व और सूर्यास्त के पश्चात् चन्द्र या नक्षत्र आदि के मार्ग का अवलोकन करके निमित्तों को जानना चाहिये।

**भावार्थ :-**

इस ग्रन्थ में सर्वप्रथम आकाशीय निमित्तों का कथन किया जा रहा है। आकाशमण्डल सूर्योदय व सूर्यास्त के समय आकाशमण्डल कैसा है ? चन्द्रगति व नक्षत्रादिकों की गति कैसी है ? इन सब का ज्ञान करके निमित्तज्ञानी उसका फल जान लेता है।

# सूर्य प्रकरण

**सूरोय उयव्वमणो रत्तुप्पलवण्णहोव्व दीसिज्ज।**
**सो कुणइ रायमरणं मंत्तीपुत्तं विणासेई॥७॥**

**अर्थ :-**

सूर्योदय के समय यदि सभी दिशायें मूंगे के समान लाल वर्ण की हो जावें तो उस देश का राजा अथवा मन्त्रीपुत्र मरण को प्राप्त होगा ऐसा जानना चाहिये।

**ससलोहिवण्णहोवरि संकुण इत्ति होइ णायव्वो।**
**संगामं पुण घोरं खग्गं सूरो णिवेदेई॥८॥**

**अर्थ :-**

सूर्योदय के समय दिशायें यदि माणिकमणि के समान वर्ण वाली अथवा रक्त के समान वर्ण वाली हो जाय तो वहाँ घोर युद्ध होगा तथा खूब तलवारें चलेगी ऐसा जानना चाहिये।

**हेमंतम्मिय उण्णं गिम्हे सीयं पमुच्चए सूरो।**
**लोयस्स वाहि मरणं काले कालं ण संदेहो॥९॥**

**अर्थ :-**

यदि हेमन्त ऋतु में सूर्य से गर्मी और ग्रीष्मकाल में सूर्य से सर्दी निकले तो मनुष्य बार-बार बीमारियों से मरेंगे। इसमें किसीप्रकार का सन्देह नहीं करना चाहिये।

**उदयच्छमणो सूरो अग्गिफुलिंगेव णाय मुच्चंतो।**
**दीसिज्ज जम्हि देसे तम्हि विणासो णिवेदेदि॥१०॥**

**अर्थ :-**

यदि सूर्योदय अथवा सूर्यास्त के समय जिस देश में ऐसा ज्ञात

होवे कि सूर्य से अग्नि की चिनगारियाँ निकल रही हैं तो उस देश में हर प्रकार से विनाश होगा ऐसा निवेदन करना चाहिये ।

**अह णिप्पहोव दीसइ उच्छंतो धूलिधूसरो छायो।**
**सो कुणइ राइमरणं वरिसदिणब्भंतरे सूरो ॥११॥**

**अर्थ :-**

यदि सूर्यास्त के समय ऐसा लगे कि सूर्य से धुआँ निकल रहा हो या धूलि निकल रही हो तो एक वर्ष के अन्दर उस देश के राजा की मृत्यु होगी ऐसा जानना चाहिये ।

**उदयच्छमणे सूरो वक्को इव दीसए णहयलम्मि।**
**सो अइरेण य साहदि मंत्तिवह रायमरणं च ॥१२॥**

**अर्थ :-**

यदि सूर्योदय व सूर्यास्त के समय सूर्य की आकृति टेढ़ी मालूम हो तो राजा या मन्त्री का मरण अवश्य होगा ऐसा समझो ।

**जइ मच्छासरिमेणं मज्झे णयमयरणुवि अब्भेण।**
**ठायज्जइ उड्डंतो लोयस्स भय णिवेएइ ॥१३॥**

**अर्थ :-**

सूर्यास्त के समय यदि सूर्य के भीतर से जाज्वल्यमान मछली के आकार का उठता हुआ चिह्न दिखाई पड़े तो वह मनुष्यों के लिए भय का कारण होता है ।

**णरणूवेणब्भेणं गीढो जइ दीसए समुड्डंतो।**
**जं देसम्मि जे दीसइ छम्मास विणासएणं च ॥१४॥**

**अर्थ :-**

सूर्य से लम्बी ज्वाला उठती हुई दिखाई पड़ती हो तो छह मास के भीतर-भीतर देश का विनाश हो जायेगा ।

**अह सूरपासउइवो दीसइ पडिसूर उज्जया विदिऊ।**

**मासे कुणइ पीडा रायाणं वाहि लोयं च॥१५॥**

**अर्थ :-**

सूर्यास्त के समय यदि सूर्य के समीप उद्योतवान द्वितीय सूर्य दिखाई दे तो जान लेना चाहिये कि एक माह में राजा और प्रजा दोनों को व्याधि के कारण कष्ट होगा।

**अह दीसइ जइ खंडो उद्धूलो धूलिधूसरो सूरो।**

**सो कुणइ वाहि मरणं देसविणासं च दुब्भिक्खं॥१६॥**

**अर्थ :-**

सूर्य में से धूलि और धुआँ उठता हुआ दिखाई दे तो ऐसा जानना चाहिये कि उस देश में व्याधि से पीड़ा होगी अथवा मरण होगा। देश का नाश होगा और अकाल पड़ेगा।

**अह मंडलेण णुद्धं पीयय मंजिट्ठ सरिस किण्हेण।**

**सो कुणइ णवरसभया पंचमदिवसे ण संदेहो॥१७॥**

**अर्थ :-**

सूर्यास्त के समय यदि सूर्य के चारों ओर पीला, मंजीठी रंग का अथवा श्यामवर्ण का मण्डल दिखाई दे तो पाँचवें दिन नौ रसों में विकार होगा। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

**अह हत्थिसरिस मेहो सूरं पाएणथिन्तु मक्कमई।**

**सो कुणइ राइमरणं छट्ठे दिवहे ण संदेहो॥१८॥**

**अर्थ :-**

यदि सूर्य साँप और हाथी के समान दिखाई देवे तो छठे दिन राजा का मरण होगा। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

**अह णच्चंता दीसइ पुरुसेहि बहुविदेहि भूवेहि।**
**सो पंचमम्मि मासं रोयं रण्णे णिवेदेहि॥१९॥**

**अर्थ :-**

यदि अस्त होते हुए सूर्य में से पुरुषों के आकार की बहुत सी शाखायें जाज्वल्यमान होकर निकल रही हैं ऐसा दिखाई दे तो पाँचवें माह में बहुत से मनुष्य रुदन को प्राप्त होंगे।

**उदयच्छमणो सूरो सूरिहि बहुएहि दीसए विद्धो।**
**मासे विदिए जुद्धं तद्देसो होई णायव्वं॥२०॥**

**अर्थ :-**

यदि सूर्योदय और सूर्यास्त होने के समय में सूर्य में छेद दिखाई दे तो वहाँ पर दो माह के अन्दर युद्ध होगा और उस युद्ध में बहुत से लोग मरेंगे।

**अह धूमो अच्छयणे गिम्हम्हि य दीसए जय सूरो।**
**देसम्मि इदं घोरं तेरस दिय हम्म जुज्झं च॥२१॥**

**अर्थ:-**

यदि सूर्यास्त के समय में सूर्य के भीतर से धुअें के गोले निकल रहे हैं ऐसा ज्ञात हो तो तेरहवें दिन वहाँ युद्ध होगा ऐसा जानो।

## प्रकरण का विशेषार्थ

सूर्य प्रकरण में सूर्य के निमित्त से होने वाले शुभाशुभ फलों का कथन किया गया है। इस प्रकरण में सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य के आकार और रंग के आधार पर शुभाशुभत्व प्रकट किया गया है।

यदि सूर्योदय के समय सारी दिशायें मूंगे के समान लाल दिखाई देती हो तो उस देश के राजा अथवा मन्त्री के पुत्र की मृत्यु हो सकती है। यदि सूर्योदय के समय में दसों दिशायें रक्त के समान लाल हो तो उस

देश में घोर युद्ध होगा और शस्त्रास्त्रों की धूम मचेगी।

हेमन्तऋतु के वातावरण में सर्दी होती है और ग्रीष्मऋतु के वातावरण में उष्मा होती है। इस स्वाभाविक दशा से विपरीत वातावरण होने पर उस देश में मनुष्यों की बीमारियों के कारण मृत्यु होगी।

जिस देश में ऐसा ज्ञात हो कि सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य के भीतर से अग्नि की चिनगारियाँ निकल रही है, उस देश का विनाश अवश्यम्भावी है। यदि सूर्य से धूलि या धूआँ निकलता हुआ [illegible] होता हो तो एक वर्ष के अन्दर उस देश के राजा की मृत्यु होगी।

सूर्यास्त के समय में उसके भीतर से मछली के आकार का जाज्वल्यमान चिह्न दिखाई पड़ने पर उस क्षेत्र के मनुष्यों को भय उत्पन्न होगा ऐसा जानना चाहिये। उस समय सूर्य से लम्बी ज्वाला उठती हुयी दिखाई देना उस देश का छह माह के अन्दर विनाश हो जायेगा इस बात को सूचित करता है। सूर्यास्त के समय सूर्य के पास उद्योतित दूसरा सूर्य दिखाई दें तो राजा और प्रजा दोनों को भी निकट भविष्य में कष्ट होने वाला है, ऐसा प्रकट करता है।

सूर्य के टुकड़े-टुकड़े दिखें, उसमें धूआँ या धूलि दिखाई देवें, सूर्य के चारों ओर पीले रंग का अथवा काले रंग का मण्डल दिखाई देवें तो उस देश में दुर्भिक्ष होगा व नौ रस में विकार हो जायेगा।

सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य में छेद दिखाई देने पर उस क्षेत्र में दो माह में यद्ध हो सकता है। सूर्यास्त के समय सूर्य के भीतर से धूएँ के गोले निकलते हुए दिखने पर उस दिन से तेरहवें दिन के अन्दर युद्ध हो सकता है।

सूर्योदय के समय में दसों-दिशायें पीत, हरित या अनेक वर्ण वाली दिखाई पड़ें तो प्रजा सात दिनों में रोग को प्राप्त होगी। सूर्योदय के समय में दसों-दिशायें नील वर्ण वाली हो तो समय पर वर्षा होगी। सूर्योदय के समय में दसों-दिशायें काले वर्ण वाली हो तो बालकों में रोग फैलते हैं।

सूर्योदय के उदयकाल में शुक्लवर्ण की परिधि दिखलाई देने पर राजा को विपदा प्राप्त होती है। सूर्योदय के उदयकाल में लालवर्ण की परिधि दिखलाई देने पर सेना के बल की वृद्धि होती है।

प्रतिदिन सूर्य के अर्धास्त हो जाने के समय को लेकर जब तक आकाश में नक्षत्र अच्छीतरह दिखाई न पड़े तब तक संध्या काल रहता है, उसी प्रकार अर्धोदित सूर्योदय से पूर्व तारादर्शन तक संध्या काल माना जाता है।

टूटी-फूटी, क्षीण ,विध्वस्त, विकराल, कुटिल, बाई ओर को झुकी हुई छोटी-छोटी तथा मलिन सूर्यकिरणें सायंकाल में हों तो उपद्रव या युद्ध होने की सूचना समझनी चाहिये। ऐसी सन्ध्या वर्षा का रोधन भी किया करती है।

यदि काला, पीला, कपिश, लाल, हरा आदि विभिन्न वर्णों की किरणें आकाश में फैल जाये तो अच्छी वर्षा होती है तथा सात दिन तक भय भी बना रहता है। यदि संध्या के समय में सूर्य की किरणें श्वेत वर्ण की हो तो मानव का अभ्युदय होगा और उसे शान्ति प्राप्त होगी।

सन्ध्या के समय में सूर्य किरणें ताम्ररंग की हो तो सेनापति की मृत्यु होती है। सन्ध्या के समय में सूर्य किरणें पीले या लाल रंग की हो तो सेनापति को दुःख पहुँचता है। सन्ध्या के समय में सूर्य किरणें हरित वर्ण की हो तो पशु और धान्य का नाश होता है। सन्ध्या के समय में सूर्य किरणें धूम्र वर्ण की हो तो गायों का विनाश होता है। सन्ध्या के समय में सूर्य किरणें मंजीठ के समान आभा और रंग वाली हो तो शस्त्र और अग्निकृत भय होता है। सन्ध्या के समय में सूर्य किरणें भस्म के समान रंग वाली हो तो अनावृष्टि का योग समझना चाहिये। सन्ध्या के समय में सूर्य किरणें मिश्रित एवं कल्माष रंग की हो तो वृष्टि का क्षीणभाव होता है। सन्ध्याकालीन सूर्यकिरणों का स्वच्छ और शुभ्र होना मंगलकारक माना गया है।

सूर्य की किरणें सन्ध्याकाल में जल और वायु से मिलकर दण्ड के आकार को धारण करें तो उसे दण्ड कहते हैं। तब यह दण्ड विदिशाओं में स्थिर होता है तब वह राजाओं के लिए अनिष्टकारी होता है और जब वह दण्ड दिशाओं में स्थित होता है, तब वह व्दिजातियों के लिए अनिष्टकारी होता है। दिन निकलने से पहले और मध्यसन्धि में दण्ड दिखने पर शस्त्र और रोगारों से भय उत्पन्न होता है

आकाश में सूर्य के ढकने वाले दही के समान किनारेदार नीले

मेघ को अभ्रतरु कहते हैं। यह नीले वर्ण का मेघ यदि नीचे की ओर मुख किये हुए पता चले तो बहुत अधिक वर्षा होती है। अभ्रतरु शत्रु के ऊपर आक्रमण करने वाले राजा के पीछे-पीछे चलकर अचानक शान्त हो जाय तो युवराज और मन्त्री का नाश होता है।

यदि शाम के समय गन्धर्वनगर, कुहासा और धूम छाये हुए दिखाई पड़ जाये तो वर्षा कम होती है। शाम के समय में शस्त्र को धारण किए हुए मनुष्य रूपधारी मेघ सूर्य के सामने छिन्न-भिन्न हो तो शत्रुभय होता है। श्वेतवर्ण और श्वेत किनारे वाले मेघ शाम के समय में सूर्य को आच्छादित करें तो वर्षा होने का योग समझना चाहिये। यदि सूर्योदय के काल में दिशायें पीत, हरित और चित्र-विचित्र रंग की हो तो सात दिन में प्रजा में भयंकर रोग फैलेंगे। यदि सूर्योदय के काल में दिशायें नीले रंग की हो तो समय पर वर्षा होगी और यदि सूर्योदय के काल में दिशायें काले रंग की हो तो बालकों में रोग फैलता है।

प्रातःकालीन और सायंकालीन सन्ध्याओं के रंग एक समान होने पर एक माह तक मसाला और तिलहन का भाव सस्ता, सोना और चाँदी का भाव महँगा होगा। प्रातःकालीन और सायंकालीन सन्ध्याओं के रंगों में परिवर्तन हो तो सभी प्रकार की वस्तुओं के भावों में अत्यधिक गिरावट की सम्भावना होती है।

यदि उदित होता हुआ सूर्य पूर्व दिशा में सामने की ओर विकृत उत्पात से सहित दिखलाई दे तो निवासी राजा के और पीछे की ओर विकृत दिखाई देवे तो आक्रामक राजा के विनाश का सूचक होता है।

यदि उदयकालीन सूर्य सुनहरे रंग का हो तो वर्षा का प्रमाण अच्छा होता है। यदि उदयकालीन सूर्य मधु के समान रंग का हो तो लाभप्रद माना गया है और उदयकालीन सूर्य सफेद रंग का हो तो सुभिक्ष और कल्याण की सूचना देता है।

हेमन्त और शिशिर ऋतु में लाल रंग, ग्रीष्म और वसन्त ऋतु में पीला एवं वर्षा और शरद ऋतु में सफेद रंग का सूर्य शुभदायक है, इन वर्णों से विपरीत वर्ण का हो तो उस सूर्य को भयदायक जानना चाहिये।

सूर्य की विविध आकृतियों के कारण भी फलादेश में भिन्नता आती है। अतः सूर्यप्रकरण का अध्ययन सूक्ष्मता से करना चाहिये।

# मेघयोगप्रकरण

**अह मेहोणहयलये पउमिणि सुरिसुघ दीसए जच्छं।**
**सो पंचम्मिय दिवहे वायं वरिसं च को वेई॥२२॥**

**अर्थ :-**

यदि सूर्य के चतुर्दिक में कमल के आकार का मण्डल दिखाई दे तो पाँचवें दिन हवा चलकर पानी बरसेगा।

**मुसलसरिच्छो मेहो दीसइ व जात पव्वयाभोया।**
**सो सत्तमम्हि दिवहे वायं वरिसं च को वेई॥२३॥**

**अर्थ :-**

सूर्य के चतुर्दिक में यदि मूसलाकार मण्डल दिखाई पड़े तो सातवें दिन अवश्य ही हवा चलकर पानी बरसेगा।

**अह दीसइ परधीओ उदयच्छवणम्हि उड्डितो घोरो।**
**तो तियरा पुणि दिवहे वायं वरिसं च को वेई॥२४॥**

**अर्थ :-**

सूर्योदय व सूर्यास्त के समय यदि सूर्य के चारों ओर वलयाकार मण्डल दिखाई देवे तो तीसरे दिन हवा चलकर अवश्य पानी गिरेगा।

**हेमंतक्तुणकगिण्हे सुख दक्खिणोय जय वाऊ।**
**अण्णुण्ण दिसा वायइ वरिसा मुत्तच्छ णायव्वो॥२५॥**

**अर्थ :-**

यदि हेमन्तऋतु में सर्दी मिली हुई दक्षिणी हवा चले तो शीघ्र ही वर्षा होगी ऐसा जानो।

**ववरुव सूरस्सुदयच्छमणे पडंति जलबिंद ऊगहयलाऊ।**

**तइहे दिवहे वरसइ तद्देसे णत्थि संदेहो॥२६॥**

**अर्थ :-**

यदि सूर्योदय अथवा सूर्यास्त के समय ओस के समान पानी पड़ जावे तो उस देश में उस दिन से तीसरे दिन पानी बरसेगा। इसमें किसीप्रकार का सन्देह नहीं है।

**जदि चंडवायु वायदि अह पुण मद्दमि वायवे वाऊ।**
**तर्हि होही जलवरसे पंचम दिवहे ण संदेहो॥२७॥**

**अर्थ :-**

यदि तेज हवा चले और बीच-बीच में मन्द हवा चले तो उस देश में पाँचवें दिन अवश्य पानी बरसेगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

**छित्तेण कोई पुच्छइ घरम्हि छायंत हद्द वसणो वा।**
**उदकुंभम्मियहच्छो वरसइ अज्जंत णायव्वो॥२८॥**

**अर्थ :-**

यदि कोई एकाएक आकर पूछे कि क्या आपने मकान छा लिया है ? कपड़े पहने हुए भी सर्दी मालुम होने लगे और घड़ों का पानी गरम हो, तो आज या कल में ही वर्षा होगी ऐसा जानो।

**सूहा पीययवण्णा मंजिट्ठराय सरिस वण्णा वा।**
**चारत्ता णीलयवण्णा वायं वरिसं णिवेदेहि॥२९॥**

**अर्थ :-**

सूर्योदय अथवा सूर्यास्त के समय यदि आकाश पीतवर्ण या मंजीठ के समान वर्ण वाला ज्ञात होवे तो हवा चलकर पानी बरसेगा- ऐसा निवेदन करना चाहिये।

**णुप्पयवण्ण सरिच्छा द्विकत्तिज्ज सण्णिवेदेति।**
**णियह धूसरवण्णा पाहीमरणं णिवेदेहि॥३०॥**

**अर्थ :-**

सन्ध्या के समय में बादल तम्बाकू के रंग का हो या खाकी रंग का हो अथवा बादल में छेद दिखाई पड़े तो पानी का अन्त हो गया ऐसा जानो।

**अह खंड भिण्णभिण्णा गोमुत्तसरिच्छ कपडवण्णाभा।**
**स कुणइ राइमरणं मंदं वरिसं णिवेदेहि॥३१॥**

**अर्थ :-**

यदि सूर्योदय अथवा सूर्यास्त के समय में बादल खण्ड-खण्ड और गोमूत्र के जैसी आकृति वाले काले रंग के दिखाई देवे तो राजमरण तथा अल्पवर्षा की सूचना देते हैं।

**का इच्छंती दीसइ अभेहि बहुविहेहि रुवेहि।**
**अक्खइ बालविणासं हेमंतरणिगायासस्सा॥३२॥**

**अर्थ :-**

सूर्योदय अथवा सूर्यास्त के समय यदि बादल के टुकडे-टुकडे कई रंग के परिज्ञात होवे तो बालकों की मृत्यु व पानी का अभाव ज्ञात होता है।

## प्रकरण का विशेषार्थ

वर्षाऋतु के समय में जिस दिन सूर्य अधिक दुस्सह और घी के समान वर्ण वाला हो उस दिन अवश्य वर्षा होगी।

जिस दिन उदयकालीन सूर्य अत्यन्त प्रकाश के कारण देखा न जा सके, पिघले हुए स्वर्ण के समान वर्ण वाला हो और तीव्र होकर तप रहा हो अथवा आकाश में बहुत ऊँचा चढ गया हो तो उस दिन बहुत अच्छी वर्षा होती है।

जिस दिन दिशाये निर्मल हों, आकाश कौओ के अण्डे की कान्ति को धारण करने वाला हो अथवा गाय के नेत्र के समान कान्ति को

धारण करने वाला हो, वायु का गमन रुक-रुक कर हो रहा हो तो उस दिन वर्षा निश्चित् होगी।

उदय अथवा अस्त के समय में चन्द्रमा अथवा सूर्य शहद के समान रंग वाला दिखाई पड़े तो प्रचण्ड वायु के साथ अतिवृष्टि होगी।

सूर्यपिण्ड से निकलने वाली सीधी रेखा को अमोघ किरण कहते हैं। ये अमोघ किरणें कभी-कभी निकलती हैं। जिस दिन अमोघ किरणें सन्ध्या के समय निकले उस दिन महावृष्टि होगी।

प्रातः काल उदित होता हुआ सूर्य लाल वर्ण का हो, बिना वर्षा के इन्द्रधनुष उदित हो जाय तो अतिशीघ्र वृष्टि होगी। नील रंग वाले बादलों में सूर्य के चारों ओर कुण्डलता हो, दिन के समय में ईशान कोण में बिजली चमक रही हो तो वर्षा अतिशीघ्र ही होगी।

सायंकाल में अनेक तह वाले बादल यदि मयूर, धनुष, लाल रंग के पुष्प और तोते के समान हों अथवा जलीय जन्तुओं, लहर या पहाड़ों के समान आकार वाले हों तो वर्षा अवश्य होगी।

घड़ों में रखा हुआ जल अपने आप गरम हो जाय, सभी लताओं का मुख ऊँचा हो जाय, सात दिन तक आकाश मेघ से आच्छादित रहें, रात्रि में जुगुनू जलाशय के समीप में जाते हों तो शीघ्र वर्षा की सूचना जाननी चाहिये। गोबर में कीटों का होना, अत्यन्त कठिन परिताप का होना, छाछ का एकाएक खट्टा हो जाना, मछलियों का भूमि की ओर कूदना, बिल्ली का पृथ्वी को खोदना, लोह की जंग से दुर्गन्ध निकलना, पर्वत का काजल के समान वर्ण वाला हो जाना, कन्दराओं से भाप का निकलना, गिरगिट आदि के व्दारा वृक्ष की चोटी पर चढकर आसमान को देखना, गायों का सूर्य को देखना, बगुलों का पंख फैलाकर स्थिरता से बैठ जाना, घर की छत पर चढकर कुत्तों का आसमान की ओर देखना, मेंढकों की जोर से आवाज आना, चिड़ियों का मिट्टी में स्नान करना, टिटिहरी का जल में स्नान करना, चातक का जोर-जोर से शब्द करना, छोटे पेडों की कलियों का जल जाना, बड़े पेडों में कलियों का निकल जाना, बड़ की शाखाओं का खोखला हो जाना, मक्खियों का अधिक घूमना, काँसे के बर्तन में जंग लग जाना, कागज पर लिखने के बाद स्याही का न सूखना इत्यादिक निमित्त तत्काल में होने वाली वर्षा की सूचना देते हैं।

# चन्द्र प्रकरण

**चंदो सरूवसरिसो ये यारिसणू विऊण हयलम्मि।**
**जइ दीसइ तस्स फलं भणम्मि इत्तो णिसामेहा॥३३॥**

**अर्थ :-**

अब चन्द्र का रूप देखकर शुभाशुभ फल को कहने का ज्ञान बतलाते हैं।

**भावार्थ :-**

अबतक की गाथाओं में सूर्य के दर्शन से होने वाले निमित्तों का कथन किया जा रहा था। अब आचार्य भगवन्त चन्द्रदर्शन से ज्ञात होने वाले निमित्तों का कथन कर रहे हैं।

**णायलंगलसरिसो दक्खिणउत्तर समं गऊ चंदो।**
**जुगदंडधणुसरिसा समसरित मण्डलो णोदू॥३४॥**

**अर्थ :-**

उदित होता हुआ प्रतिपदा या द्वितीया का बालचन्द्रमा धनुषाकार दक्षिण-उत्तर में समान हो तो सर्वत्र सुभिक्ष होगा।

**अबलं वियसी सधरो रूवे यसछलक्खणो चंदो।**
**णावाइ कुणइ वरिसं सुभिक्ख देइ हलसरिसो॥३५॥**

**अर्थ :-**

शुभ, स्वच्छ और समान चन्द्रमा बहुत पानी बरसाता है तथा हल के समान दिखने वाला चन्द्रमा सुभिक्ष की सूचना देता है।

**आरोगं दक्खिणवो जुगसंपत्ति जुगस्सयाणो य।**
**दंडम्मि दंडसरिसो धणुसरिसो ससहरो जुस्स॥३६॥**

**अर्थ :-**

यदि चन्द्रमा की किनारी दक्षिणदिशा की ओर ऊँची हो, तो वह आरोग्य, समान किनारी होने पर संपत्ति, सपाट किनारी होने पर (दण्ड के समान दिखाई देने पर) दण्ड और धनुषाकार दिखने पर सम को संसूचित करता है।

**समचलणो समवण्णं भयं च पीडं तहा णिवेदेहि।**
**लक्खारसपायासो कुणइ भयं सव्वदेसेसु ॥ ३७॥**

**अर्थ :-**

समवर्ण वाला समान चन्द्रमा भय और हानिकारक है तथा लाख के समान वर्ण वाला चन्द्रमा सम्पूर्ण देश में भय की सूचना देता है।

**विप्पाणं देइ भयं वाहिरण्णो तहा णिवेदेई।**
**पीलो खत्तियणासं धूसरवण्णो य वयसाणं॥३८॥**

**अर्थ :-**

चन्द्रमा यदि रक्तवर्ण वाला हो तो ब्राह्मणों को भय उत्पन्न करेगा। चन्द्रमा पीतवर्ण का होने पर क्षत्रियों को भय उत्पन्न करेगा और चन्द्रमा धूसर वर्ण का होने पर वैश्यवर्ण वालों को भय उत्पन्न करेगा।

**किण्णो सुद्द विणासो चित्तलवण्णो य हणइ पयईऊ।**
**दहिखीरसंखवण्णो सव्वम्हि य पाहिदो चंदो॥३९॥**

**अर्थ :-**

चन्द्रमा कृष्ण नजर आवे तो वह शुद्रों का विनाश करता है। चित्रलवर्ण वाला, दही, खीर या शंख वर्ण वाला चन्द्रमा समस्त दूधारु पशुओं का नाश करता है।

**रिक्खम्मि पास वछहरो रोहिणिमज्जे पयदये चंदो।**
**सो कुणइ पयविणासं पंचममासे ण संदेहो॥४०॥**

**अर्थ :-**

खण्डित आकार का कोई मण्डल यदि चन्द्रमा के चहुँ ओर दिखाई पड़े तो पाँचवें माह में दूध का नाश होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

**जे मंडलाय पछिया सूरो ससिणो य तित्तियचिवा।**
**वर सुप्पाइ णिमित्तं ते सव्वे हुंति णायव्वा॥४१॥**

**अर्थ :-**

पूर्व में जो कुछ सूर्य या चन्द्रबिम्ब के चिह्नों का कथन किया गया है, वे निमित्त अवश्य ही होते हैं।

**भावार्थ :-**

पूर्व गाथाओं में सूर्य और चन्द्र के चिह्नों का कथन विस्तारपूर्वक किया गया है। आचार्य भगवन्त कहते हैं कि निमित्त का अध्येता ध्यानपूर्वक प्रकाशबिम्बों को देखकर फल ज्ञात करता है। वे निमित्त अवश्य ही होते हैं।

**पव्वणि रहिओ चंदो राहूणय गाढिणूपयासिज्जू।**
**सो कुणइ देसपीडं भयं च रणा णिवेदेहि॥४२॥**

**अर्थ :-**

जो चन्द्रमा पर्वरहित हो परन्तु ग्रहण लगा हुआ हो अर्थात् राहु के द्वारा ग्रसित किया गया हो तो वह चन्द्रमा देश में पीड़ा और भय को बताता है।

**मेहाणय जेणूवा जे भणिया पढमसूर जोयस्स।**
**ते विय ससिणो सव्वे णायव्वा वण्णतूवेण॥४३॥**

**अर्थ :-**

जो चिह्न वर्षा के लिए पूर्व में सूर्य प्रकरण में कह आये हैं, वे ही चिह्न चन्द्रमा के भी हैं ऐसा जानना चाहिये।

# प्रकरण का विशेषार्थ

इस प्रकरण में चन्द्र के निमित्त से ज्ञात होने वाले शुभाशुभ फल का वर्णन किया गया है। चन्द्र का आकार, रंग और ग्रहयुति के निमित्त से फल में अन्तर आता है।

यदि चन्द्रमा लाल दिखाई देवें तो ब्राह्मणों के लिए भयप्रद है। यदि चन्द्रमा पीला दिखाई देवें तो क्षत्रियों के लिए भयप्रद है। यदि चन्द्रमा खाखी दिखाई देवें तो वैश्य के लिए भयप्रद है। यदि चन्द्रमा काला दिखाई देवें तो शूद्र के लिए भयप्रद है। यदि चन्द्रमा पंचरंगा अथवा दूध के रंग का दिखाई देवें तो दूधारु पशुओं का विनाश अवश्य होता है। यदि चन्द्रमा लाख के रंग का दिखाई देवें तो सम्पूर्ण देश के लिए भयप्रद है।

आचार्य श्री भद्रबाहु का मत है कि –

**शस्त्रं रक्ते भयं पीते, धूमे दुर्भिक्षविद्रवे।**
**चन्द्रे तदोदिते ज्ञेयं, भद्रबाहुवचो यथा ॥**

**(भद्रबाहु संहिता :- १४/१३६)**

**अर्थात् :-** उदित होते हुए चन्द्रमा का वर्ण लाल होने पर मनुष्यों को शस्त्र का भय होता है। उदित होते हुए चन्द्रमा का वर्ण पीला होने पर मनुष्यों को दुर्भिक्ष का भय होता है और उदित होते हुए चन्द्रमा का वर्ण धूम के समान होने पर वह मनुष्यों के लिए आतंक का सूचक होता है, ऐसा भद्रबाहु स्वामी का वचन है।

आषाढ मासीय शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को चन्द्रमा के दोनों श्रृंग (किनारी) समान दिखलाई पडे तथा मण्डल भी समान हो तो वह निस्सन्देह राजा के लिए भय करने वाला होता है। यदि इसी दिन दोनों श्रृंग समान दिखलाई पडे तो अनाज की उत्पत्ति कम होती है तथा वर्षा भी कम होती है। चन्द्रमा का बायाँ श्रृंग उन्नत होनेपर लोक में दारुण भय का संचार होता है, इसमें संशय नहीं है।

यदि चन्द्रमा के उदयकाल में चन्द्रमा के दक्षिण श्रृंग पर शुक्र हो तो राजा का ससैन्य विनाश होता है। विकृत मंगल यदि चन्द्र के श्रृंग पर स्थित हो तो पुरोहित और राजा के चंचल हो जाने से प्रजा को अत्यन्त कष्ट होता है। चन्द्रश्रृंग पर शनि के होने पर वर्षा का भय होता है और

भयंकर दुर्भिक्ष का सामना करना पड़ सकता है। किसी भी ग्रह के द्वारा भय के कारण से चन्द्रमा का भेदन होता है तो राजभय होता है और प्रजा को दारुण दुःख होता है। क्रुरग्रह से युक्त चन्द्रमा यदि राहु के द्वारा ग्रहण किया गया हो या देखा गया हो तो राजा और सामन्त क्षुब्ध होते हैं और प्रजा को पीड़ा होती है।

ऊपर में स्थित चन्द्रमा मनुष्यों के पापों का विनाश करता है। तिर्यक्स्थ चन्द्रमा राजा और मन्त्री के पाप का विनाश करता है। अधोगत चन्द्रमा समस्त पृथ्वी के पापों का विनाश करता है।

चन्द्रमा के चारों ओर खण्डित मण्डल दिखाई पड़ना सम्पूर्ण देश के लिए भयप्रद है। उससे पाँचवें माह में दूध का विनाश भी जानना चाहिये। पर्वरहित ग्रहणयुक्त चन्द्रमा भय और पीड़ा का कारण है।

यदि चन्द्रमा स्वच्छ और सम हो तो अच्छा पानी बरसता है। चन्द्रमा हलसदृष हो तो सुभिक्ष को प्रकट करता है। बाल धनुषाकार चन्द्रमा भी सुभिक्ष को प्रकट करता है।

यदि चन्द्रमा की किनारी दक्षिणदिशा की ओर ऊँची हो तो वह आरोग्य के वर्धन की सूचना देती है। चन्द्रमा की किनारी समान हो तो वह सम्पत्ति की सूचना देती है।

यदि चन्द्रमा सपाट आकार वाला हो तो मनुष्यों को दण्ड की सूचना देता है।

आचार्य श्री भद्रबाहु के मतानुसार जिस व्यक्ति के जन्मनक्षत्र पर राहु चन्द्रमा का ग्रहण करे अर्थात् चन्द्रग्रहण हो तो उस मनुष्य के लिए रोग और मृत्यु का भय अवश्य होता है।

आचार्यश्री के शब्दों में –

**राहुणा गृह्यते चन्द्रो, यस्य नक्षत्रजन्मनि।**
**रोगं मृत्युभयं वापि, तस्य कुर्यान्न संशयः॥**

**(भद्रबाहु संहिता :- १४/९४)**

पूर्व प्रकरण में सूर्य के आकार-प्रकारों को देखकर मेघविषयक योग बताया गया है। वही वर्षा विषयक योग चन्द्र से सम्बन्धित भी जानना चाहिये। केवल सूर्यप्रकरण में जहाँ सूर्य लिखा है, वहाँ चन्द्र समझना चाहिये।

# उत्पातयोग प्रकरण

**अह अंतरिक्ख सद्दो सुव्वइ बहुमाणवेक पुरिसाणं।**
**पंचममासे मारी होई देसे ण संदेहो ॥४४॥**

**अर्थ :-**

जिस देश में अनेक मनुष्यों की आवाज सुनाई देवे परन्तु बोलने वाले दिखाई न देते हो तो ऐसा निश्चित् समझना चाहिये कि उस देश में पाँचवें माह में मारी की बीमारी होगी।

**अह बहु सति धावंति सवदो जुज्झणुपवदंति।**
**रोवाराव कुणंता भूया लोयस्स णासाय ॥४५॥**

**अर्थ :-**

जिस देश में अनेक मनुष्यों के दौड़ने और लड़ने की आवाजें ज्ञात हों अथवा रुदन का शब्द सुनाई दे तो यहाँ हजारों मनुष्यों का नाश होगा ऐसा जानना चाहिये।

**संझावेला समये रवयं सिवा चउदस गामपासेसु।**
**कहदिग्गामुपाद रत्थि विणासंण संदेहो ॥४६॥**

**अर्थ :-**

यदि संध्या की बेला में गीदड या लोमड़ी गाँव के चारों ओर रोवे तो ऐसा जानना चाहिये कि राजा का मरण होगा।

**मज्झण्णे परचक्कं संझाए कुणइ रोगवाहिभयं।**
**सेसेसु सिवा काले रोवंती सोहना रत्ती ॥४७॥**

**अर्थ :-**

यदि अर्द्धरात्रि के समय में गीदड़ रोवे तो परचक्र के भय की सूचना माननी चाहिये। यदि शाम के समय गीदड़ रोवे तो रोग और

व्याधि के भय को सूचित करते हैं। इन दोनों समयों को छोड़कर शेष समय में गीदड़ रोवे तो उससे कोई हानि नहीं होती।

**अह तूरवो सुव्वइ अणाहवो जम्मि कम्मि देसम्मि।**
**तद्देसे जुद्धभयं होही घोरं ण संदेहो ॥४८॥**

**अर्थ :-**

जिस देश में सदैव कोलाहल का शब्द सुनाई देवे, उस देश में अवश्य महायुद्ध होगा ।

**अह जत्थ धुवो चलदी चालिज्जंतो वि णिच्चलो होई।**
**होहइ तस्स विणासो गाम्मस्स य तीहि मासेहि ॥४९॥**

**अर्थ :-**

जिस नगर में ध्रुव वस्तुयें चलायमान हो जाये और चंचल वस्तुयें अचल हो जाये तो तृतीय माह में उस गाँव का नाश होगा।

**णाणा वइत्तमणा वज्जंति अताडिया चउदी।**
**णासं तद्देसगमो वरपुरिसंणा ण संदेहो ॥५०॥**

**अर्थ :-**

जिस गाँव के चारों ओर बिना बजाये ही वाद्य की आवाज सुनाई देवे तो उस गाँव का निःसन्देह नाश हो जायेगा।

**अहिजुत्ताविय सपडा वच्चंति णमुड्डिया चिवच्चंति।**
**वित्तंति गामघादे भयं च रणो णिवेदेहि ॥५१॥**

**अर्थ :-**

सांप जुते हुए हैं जिसमें, ऐसी गाड़ी गाँव की ओर आती हुई दिखाई देवे तो समझो कि गाँव का कुभाग्य आया है।

**जूवो हलो विदीसइ णच्चंतो खित्तमज्झयारम्मि।**

**होई णयरविणासो परचक्काऊण संदेहो ॥५२॥**

**अर्थ :-**

यदि बिना बैलों का हल अपने आप खड़ा होकर नाचने लगे तो ऐसा जानना चाहिये कि परचक्र के द्वारा इस गाँव का नाश होगा ।

**णाणा दुमउयणयिदि णायंतो जइ पडेदि भूमीए।**
**तो [illegible] संदेहो ॥५३॥**

**अर्थ :-**

यदि कोई वृक्ष बिना हवा ही चले अथवा बिना किसी कारण गिर पड़े तो उस गाँव में भारी रोग अवश्य फैलेगा। इसमें किसीप्रकार का सन्देह नहीं है ।

**णयरस्स रच्छमज्झे साणा रोवंति णुद्धतुडाणं।**
**होइ णयरविणासो परचक्काऊण संदेहो ॥५४॥**

**अर्थ :-**

शहर के मध्य में कुत्ते ऊँचा मुँह करके रोवे तो परचक्र से नगर का नाश होगा । इसमें कोई सन्देह नहीं है ।

**णम्मि यदि तं कंकालज्जइ विदीसए जत्थ।**
**राइविणासो होही परचक्काऊ ण संदेहो ॥५५॥**

**अर्थ :-**

जिस नगर में पुरुष कंकाल के समान (हड्डियों के ढांचे के समान) ज्ञात होने लगे तो परचक्र से वहाँ के राजा का नाश होगा । इसमें कोई सन्देह नहीं है ।

**आमिगपक्खी गामे णयरे य जत्थ दीसंति।**
**होही णयरविणासो परचक्काऊ ण संदेहो ॥५६॥**

**अर्थ :-**

जिस नगर में बहुत से मांसभक्षी पक्षी बिना किसी कारण के ही उड़ते हुए दिखाई देवें तो वह नगर परचक्र से अवश्य ही नष्ट होगा।

**अह बाला कीलंता मिलिया जइ सव्वदेसि धावंति।**
**जुज्झंति पुणो सव्वे तयहवि जुज्झंति णायव्वो॥५७॥**

**अर्थ :-**

जहाँ पर बच्चे खेलते-खेलते आपस में लड़ते हुए अधिक क्रोध में लड़ाई करने लगे तो वहाँ युद्ध अवश्य होगा।

**गेहोणि ते कुणंतं अग्गी लायंति बहु रमंति।**
**तम्मिय गामे अग्गी पंचमदिवहे ण संदेहो॥५८॥**

**अर्थ :-**

यदि खेलते-खेलते बच्चे आग लेकर आवे और उससे खेले तो पाँचवें दिन उस गाँव में आग अवश्य लगेगी।

**अह कीलमाणचोरं तवालया सव्वदो य धावंति।**
**तइयम्मि तच्च दिवहे चोरस्सभयं मुणेयव्वं॥५९॥**

**अर्थ :-**

जहाँ पर बच्चे खेलते हुए यह चोर आया, इसे पकड़ो आदि शब्द बोले तो उस गाँव में तीसरे दिन चोर का भय होगा।

**अह माणुसीय गाएय हथिणी घोडियाय सुणहीणा।**
**पसवंति अब्भदाई देसविणासं णिवेदंति॥६०॥**

**अर्थ :-**

जहाँ पर गाते हुए मनुष्य का गीत सुनने के लिए घोडी, हथिनी अथवा कुतिया आवे तो उस देश का नाश होगा ऐसा जानो।

**अह माणसीए मास गावी एहाय पक्ख एक्केण।**

**छम्मासेण य घोडी वरिसेण य हत्थिणी कुणई॥६१॥**

**अर्थ :-**

जहाँ पर पन्द्रह दिन तक घोड़ी या हथिनी गाना सुने तो छह माह में घोड़ी और एक वर्ष में हथिनी उस देश का नाश करेगी।

**सुणही पणमासेहि जइ पसवइतो वियाण उप्पादं।**
**गामविणासं एए छट्ठे मासे पकुव्वंति॥६२॥**

**अर्थ :-**

यदि घोड़ी और हथिनी पाँच माह तक गीत सुने तो छह माह में उस गाँव का नाश अवश्य होगा।

**जइ छेलएहि गीढो कुक्कूरो मूसएहि मज्जारो।**
**पिक्खिय एय णिमित्तं गावविणासं णि णायव्वो॥६३॥**

**अर्थ :-**

जहाँ पर गीदड़ कुत्ते को तथा चूहा बिल्ली को मारे तो उस देश का नाश अवश्य होगा।

**जइ सुक्खो वि य रुक्खो उल्लहमाणो य दीसई जत्थ।**
**गामे वा णयरे वा तत्थ विणासं ति णायव्वो॥६४॥**

**अर्थ :-**

जिस ग्राम में अथवा नगर में सूखा पेड उखड़ता हुआ दिखाई पड़े तो उस ग्राम अथवा नगर का नाश अवश्य होगा।

## प्रकरण का विशेषार्थ

उत्पातशब्द को परिभाषित करते हुए आचार्य श्री भद्रबाहु जी लिखते हैं -

**प्रकृतेर्या विपर्यासः स चोत्पातः प्रकीर्तितः।**

**(भद्रबाहु संहिता :- १४/२)**

**अर्थात् :-** प्रकृति के विपर्यास (विपरीत कार्य के होने) को उत्पात कहते हैं।

भट्टारक श्री कुन्दकुन्द जी लिखते हैं –

**प्रकृतस्यान्याभावं, उत्पातः स त्वनेकधा।**
**स यत्र तत्र दुर्भिक्षं, देश–राष्ट्र–प्रजाक्षयः॥**

**(कुन्दकुन्द श्रावकाचार :- ८/६)**

**अर्थात् :-** वस्तु या देश आदि के स्वाभाविक स्वरूप का अन्यथा होना उत्पात कहलाता है। वह उत्पात अनेक प्रकार होता है। वह उत्पात जहाँ पर होता है, वहाँ पर दुर्भिक्ष, देश का विनाश, राष्ट्र और प्रजा का क्षय होता है।

भट्टारक श्री कुन्दकुन्द जी के मतानुसार जहाँ पर देवों का आकार विकृत हो जाय, चित्रों में और धर्मस्थानों में देव–मूर्तियाँ भंग को प्राप्त होवे और जहाँ पर फहरती हुई ध्वजा ऊर्ध्वमुखी होकर उड़ने लगे, वहाँ पर राष्ट्र आदि का विप्लव होता है। जलभाग, स्थलभाग, नगर और वन में अन्य स्थान के जीवों का दर्शन हो तथा श्रृगालिनी, काकादि आक्रन्दन नगर के मध्य में हो तो वे नगरविच्छेद के सूचक उत्पात हैं।

जिस देश में राजछत्र, नगर–प्राकार ( परकोटा ) और सेना आदि का दाह हो तथा शस्त्रों का जलना और म्यान से खड्ग का स्वयं निर्गमन हो, अन्याय और दुराचार का प्रचार हो, लोगों में पाखण्ड की अधिकता हो और सभी वस्तुयें अकस्मात् विकृत हो जावें, उस देश का नाश अवश्य होता है।

इन्द्रधनुष दोषयुक्त दिखे, अग्नि सूर्य के सम्मुख हो, रात्रि में और प्रदोष काल में सदा दुष्ट जीवों का संचार हो तो वर्णव्यवस्था के कारण से उपद्रव होता है।

यदि वृक्ष अकाल में फूलें और फलें तो अन्य राजा के साथ महान् युद्ध होता है। पीपल, उदुम्बर, वट और प्लक्ष (पिलखन) वृक्ष यदि अकाल में फूलें और फलें तो क्रम से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण के लोगों को भय होता है।

यदि वृक्ष में, पत्र में, फल में, और पुष्प में, क्रम से अन्य वृक्ष, अन्य पत्र, अन्य फल और अन्य पुष्प उत्पन्न हो तो लोक में दुर्भिक्ष आदि का महाभय होता है।

यदि रात्रि में गाय-बैलों का रंभाना व चिल्लाना हो, अथवा परस्पर कलह हो तथा प्रचुरता से मेंढक, मयूर, श्वेतकाक, और गीध आदि पक्षियों का परिभ्रमण हो तो उस देश का विनाश होता है।

यदि अपूज्य लोगों की पूजा होने लगे और पूज्य पुरुषों की पूजा न हो, हथिनी के गण्डस्थलों से मद झरने लगे, दिन में श्रृगाल रोवें-चिल्लावें और तीतरों का विनाश हों तो जगत् में भय उत्पन्न होता है।

गर्दभ के रेंकने के समकाल में ही अन्य गर्दभ रेंकने लगे अथवा अन्य नाखूनी पंजे वाले जीव चिल्लाने लगे, तब दुर्भिक्ष आदि होता है।

अन्य जाति के पशु-पक्षी का अन्य जाति के पशु-पक्षी के साथ बोलना, अन्य जाति से प्रसव में शिशु होना, अन्य जाति के पशु-पक्षी के साथ अन्य जाति के पशु-पक्षी का मैथुन करना और गर्दभ की प्रसूति का देखना भी भयप्रद होता है।

**(उपर्युक्त वर्णन कुन्दकुन्द श्रावकाचार से यथावत् लिया गया है।)**

उत्पात के कारण होने वाले अनिष्टों का क्षेत्र बहुत विस्तृत है, क्योंकि उत्पातों के कारण से सभी क्षेत्रों में मनुष्य अथवा प्रकृति को हानि होती है। फिर भी सुविधा की दृष्टि से कुछ क्षेत्रों का चयन करके उनसे सम्बन्धित उत्पातों का वर्णन करना सामयिक ही होगा।

**१ :- वैयक्तिक हानि और लाभसूचक उत्पात =** यदि किसी व्यक्ति को कहीं बाजा न बजते हुए भी बाजों के बजने की आवाज लगातार सात दिनों तक आती रहे तो चार माह में उसकी मृत्यु हो सकती है।

साधारणतया किसी जीव को अपने नाक के अग्रभाग पर बैठी हुई मक्खी दिखाई नहीं देती है। फिर नहीं होने पर दिखाई देने की बात तो हास्यास्पद ही है। जिसे यह दृश्य दिखता है, उसे चार माह तक व्यापार में हानि होती है।

जो व्यक्ति स्थिर वस्तुओं को चलायमान और चलायमान वस्तु को स्थिररूप में देखता हो उसे व्याधि, धनक्षय का भय और मरणभय सताता है।

यदि प्रातःकाल जागने पर किसी की दृष्टि अपने हाथों की हथेलियों पर पड़ जाय तथा हाथ में कलश, ध्वजा और छत्र सहज ही दिखलाई पड़ें तो उसे सात महीने तक निरन्तर धन का लाभ होता है तथा

भावी उन्नति भी होती है।

गन्धद्रव्य के आसपास में न होनेपर भी यदि सुगन्धि का अनुभव हो तो मित्रमिलन, धनलाभ और शान्ति की प्राप्ति होती है।

**२ :- धन-धान्य नाशसूचक उत्पात =** रात या दिन के समय में उल्लू किसी के घर में प्रविष्ट होकर बोलने लगे तो उस व्यक्ति की सम्पत्ति छह महीने में नष्ट हो जाती है। घर के दरवाजे पर लगा हुआ वृक्ष रोने लगें तो उस घर की सम्पत्ति विलीन होती है, घर में अनेक प्रकार के रोग फैलने से कष्टों की वृद्धि होती है। घर की छत के ऊपर बैठकर सफेद कौआ पाँच बार जोर-जोर से काँव-काँव करे, पुनः चुप होकर तीन बार धीरे-धीरे काँव-काँव करे तो उस घर की सम्पत्ति एक वर्ष में नष्ट हो जाती है। यदि यही घटना नगर के बाहर पश्चिमी द्वार पर घटित हो तो उस नगर की सम्पत्ति का विनाश हो जाता है।

जंगल में गयी हुई गायें मध्याह्न में ही रंभाती हुई लौटकर आ जायें और वे अपने बछड़ों को दूध न पिलायें तो सम्पत्ति का विनाश समझना चाहिये।

लगातार तीन दिनों तक प्रातकालीन सन्ध्या काली, मध्याह्नकालीन सन्ध्या नीली और सायंकालीन सन्ध्या मिश्रित वर्ण की दिखलाई पड़े तो उसे भय, आतंक के साथ द्रव्य विनाश की सूचना समझनी चाहिये।

रात को निरभ्र आकाश में ताराओं का अभाव दिखलाई पड़े या तारायें टूटती हुई दिख पड़े तो रोग और धननाश ये दोनों ही फल प्राप्त होते हैं।

पशुओं की वाणी मनुष्य के समान प्रतीत होने लगे तो धन-धान्य के विनाश के साथ संग्राम की सूचना भी मिलती है।

जिस घर पर कबूतर अपने पंखों को पटकते हुए उल्टा गिर पड़ता है और मृत जैसा दिखने लगता है उस घर का धनक्षय हो जायेगा।

नगर की दक्षिणदिशा की ओर से श्रृगाल रोते हुए नगरप्रवेश करे तो उस नगर का अकूत धन भी अतिशीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

**३ :- रोगसूचक उत्पात=** जिस नगर में चन्द्रमा कृष्णवर्ण का दिखाई पड़े, विभिन्न वर्ण की तारायें टूटती हुई ज्ञात हो तथा सूर्य उदयकाल में

कई दिनों तक लगातार काला और रोता हुआ दिखलाई पड़े तो उस नगर में दो महीने उपरान्त महामारी का प्रकोप होता है।

बिल्ली तीन बार रोकर एकाएक चुप हो जाय तथा नगर के भीतर आकर श्रृगाल तीन बार रोकर चुप हो जाय तो उस नगर में भयंकर हैजा फैलने वाला है ऐसा जानना चाहिये।

उल्कापात हरे वर्ण का हो, चन्द्रमा हरे वर्ण का दिखाई पड़े तो सामूहिक रूप में ज्वर का प्रकोप होता है।

यदि सूखे हुए वृक्ष अचानक बिना किसी कारण के हरे हो जाये तो उस नगर में सात महीने के भीतर महामारी फैलती है।

चूहों का समूह अपनी सेना बनाकर किसी नगर के बाहर जाता हुआ दिखलाई पड़े तो उस नगर में प्लेग का प्रकोप होने वाला है ऐसा समझना चाहिये।

जिस नगर में पीपल के वृक्ष और वटवृक्ष में असमय में पुष्प और फल आवे तो उस नगर में पाँच महीनों के भीतर संक्रामक रोग फेलने से नागरिकों को कष्ट होगा ।

गोधा, मेंढक और मोर रात्रि के समय में विचरण करें तथा श्वेत काक एवं गृद्ध घरों में घुस आयें तो उस नगर में तीन महीने के भीतर बीमारी फैलती है।

कौओ का मैथुन देखने वाला पुरुष छह मास के भीतर मृत्यु को प्राप्त होता है।

**४ :- राजनीतिक उपद्रवसूचक =** जिस स्थान पर मनुष्य गाना गा रहे हो, वहाँ गाना सुनने के लिए यदि घोड़ी, हथिनी, कुतियाँ आदि पशु एकत्र होते हो तो वहाँ राजनीतिक महान उपद्रव होने वाला है ऐसा जान लेना चाहिये।

जिस नगर में बच्चे खेलते-खेलते अकारण ही आपस में लड़ाई करने लग जाय और क्रोधपूर्वक लड़ने लग जायें तो वहाँ युद्ध अवश्य होता है तथा राजनीति के सरदारों में आपस में फूट पड़ जाने से देश की हानि भी होती है।

जिस नगर में बैलों के बिना ही हल अपने आप खड़ा होकर नाचने लग जाय तो वहाँ जिस पक्ष का शासन है, उससे विपरीत पक्ष का शासन

स्थापित हो जाता है। उस नगर में शासक का पराजय और अपमान दोनों ही होने लगते हैं। शहर के मध्य में कुत्ते ऊँचे मुँह करके लगातार आठ दिनों तक भूँकते दिखलाई पड़े तो उसका फल भी पूर्ववत् ही जानना चाहिये। जिस नगर में गीदड़ कुत्ते को और चूहा बिल्ली को मारते हुए दिख पड़े, उस नगर में राजनीतिक उपद्रव अवश्य होते हैं। उन उपद्रवों के कारण से जनसामान्य में अशान्ति और भय समाया हुआ रहता है। यह स्थिति घटना के बाद भी दस महीनों तक रहती है।

जिस नगर में सूखा वृक्ष स्वयं ही उखड़ता हुआ दिखलाई पड़े, उस नगर में राजनीतिक पक्षपात प्रारंभ हो जाता है। नेताओं और मुखिया में परस्पर वैमनस्य हो जाता है, जिससे उस नगर की अत्यधिक हानि होती है। जनता में भी परस्पर फूट पड़ जाती है। इस फूट के कारण से स्थिति की गंभीरता और अधिक बढ़ जाती है।

जिस नगर में बहुत से मनुष्यों की आवाज सुनाई पड़े, पर बोलने वाला कोई भी दिखलाई नहीं पड़े, उस नगर में आने वाले पाँच महीनों के कार्यकाल में अशान्ति का विस्तार रहेगा। यह उत्पात रोगों के प्रकोप का भी संकेत देता है।

यदि सायंकाल के समय में गीदड़ अथवा लोमड़ी किसी नगर या ग्राम के चारों ओर रुदन करें तो भी राजनीतिक झंझट बढ़ने की संभावना होती है।

इसप्रकार के अशुभसूचक उत्पातों को देखने पर उनकी शान्ति के लिए क्या करना चाहिये ? इस प्रश्न का उत्तर देते समय आचार्य श्री भद्रबाहु लिखते हैं –

**देवान् प्रव्रजितान् विप्रांस्तस्माद्राजाभिपूयेत्।**
**तदा शाम्यति तत्पापं यथा साधुभिरीरितम्॥**
**(भद्रबाहु संहिता :– १४/१८०)**

**अर्थात्** :- उत्पात से उत्पन्न हुए दोषों की शान्ति के लिए देव, दीक्षित, मुनि और विप्रों की पूजा करनी चाहिये। इससे जिस पाप से उत्पात उत्पन्न होते हैं, वह पाप मुनियों के द्वारा उपदिष्ट होकर शान्त हो जाता है।

आगम की व्यवस्था को समझकर जो भव्य अपनी दिनचर्या का परिपालन करता है, उसका जीवन सुखी रहता है।

# वर्षा विषयक उत्पात प्रकरण

**गामे वा णयरे वा जइ रिसइ बहु विहाय वरिसाइ।**
**वसमंसपूयवरिसं तिल्लं सप्पे च णुहिरं वा॥६५॥**

**अर्थ :-**

किसी ग्राम अथवा नगर में वर्षा सम्बन्धी उत्पात होते हैं, जैसे कि - रक्त की वर्षा, मांस की वर्षा अथवा तेल की वर्षा।

आगे इनके फलों को कहते हैं।

**भावार्थ :-**

इस गाथा से आगे वर्षा के उत्पातों को बताने की प्रतिज्ञा की है।

वर्षा अनेक प्रकार की होती हैं- रक्तवर्षा, मांसवर्षा, घीवर्षा अथवा तेलवर्षा। इनका फल आगामी गाथाओं में बतायेंगे।

**मारी हाड्डी घोरा जत्थे हे एहाति वरिस उप्पाया।**
**तद्देसे वज्जिजहा कालपमाणं वियाणित्ता॥६६॥**

**अर्थ :-**

उपर्युक्त वर्षायें जहाँ पर होती हैं, वहाँ पर घोर मारी की बिमारी होती है। उस देश का त्याग करो। आगे उसकी अवधि बतलाते हैं।

**भावार्थ :-**

कुवर्षा जहाँ पर होती है वहाँ अवश्यमेव भारी रोग फैलता है। उस देश का त्याग कल्याणेच्छु भव्य को करना चाहिये।

कुवर्षा का फल कितने समय में मिलता है ? इस प्रश्न का उत्तर आचार्य भगवन्त स्वयं ही अगली गाथाओं में देंगे।

**मासेऊमासेणं दोमासे सोणियस्स णायव्वो।**
**विड्डाए छम्मासं विय तिल्ले सत्तरत्तेण॥६७॥**

**अर्थ :-**

यदि मांस की वर्षा हो, तो वह एक माह में अपना फल देती है। रक्तवर्षा दो माह में अपना फल देती है। विष्ठा की वर्षा छह माह में अपना फल देती है तथा घी अथवा तेल की वर्षा होने पर वह वर्षा सात दिनों में ही अपना फल देती है।

**परचक्कभवो घोरो मारी वा तत्थ होइ देसम्मि।**
**णररस्स विणासो वा देसविणासो य णियमेण ॥६८॥**

**अर्थ :-**

यह सम्पूर्ण उत्पात परचक्र का भय, घोर मारी, राजमृत्यु, नगर का नाश अथवा देश का नाश अवश्य करते हैं।

**भावार्थ :-**

गाथा ६६ में बताया गया था कि जहाँ पर वर्षा होती है, वहाँ पर भारी रोग फैलता है।

इस गाथा में वर्षा के अन्य दुष्परिणाम बताते हुए कहते हैं कि उससे परचक्र का भय, भयंकर मारी रोग, राजा की मृत्यु, नगर का विनाश अथवा देश का विनाश होगा।

**अण्णह काले वल्ली फुल्लंती महणुव्व सुरोयाणं।**
**सेठव्वा असदीसइ देसविणासो ण संदेहो ॥६९॥**

**अर्थ :-**

यदि अकाल में लताओं, फूल और वृक्षों से खून की धारा निकलती हुई दिखाई पड़े, तो उस देश का अवश्य नाश होगा।

## प्रकरण का विशेषार्थ

यद्यपि मेघयोग आदि में वर्षाविषयक चर्चा की जा चुकी है, परन्तु यदा-कदा कुवर्षायें भी हुआ करती हैं। रक्तवर्षा, मांसवर्षा, घी की वर्षा, तेलवर्षा आदि वर्षाओं को कुवर्षा कहा जाता है। जिस नगर में उपर्युक्त वर्षायें होती हैं, उस नगर में महामारी फैलती है। परचक्रभय, राजमृत्यु, नगर या देश का विनाश और अराजकता का विस्तार ये सब

उन्हीं कुवर्षाओं के फल हैं।

मांस की वर्षा अपना फल एक माह में प्रकट करती है। रक्त की वर्षा अपना फल दो माह में प्रकट करती है। विष्ठा की वर्षा अपना फल छह माह में प्रकट करती है। घी की वर्षा अपना फल सात दिनों में प्रकट करती है। तेल की वर्षा अपना फल सात दिनों में प्रकट करती है।

कुवर्षाओं के विषय में आचार्य श्री भद्रबाहु लिखते हैं -

**मद्यानि रुधिरास्थीनि, धान्यङ्गारवसास्तथा।**
**मघावान् वर्षते यत्र, तत्र विन्द्यात् महद्भयम्॥**
**सरीसृपा जलचराः, पक्षिणो व्दिपदास्तथा।**
**वर्षमाणा जलधरात्, तदाख्यान्ति महाभयम्॥**

**(भद्रबाहु संहिता :- १४/१३-१४)**

**अर्थात् :-** जहाँ मेघ मद्य, रुधिर, अस्थि, अग्नि की चिनगारियाँ और चर्बी की वर्षा करते हैं, वहाँ चार प्रकार का भय होता है।

जहाँ मेघों से सरीसृप जन्तु, जलचर जीव एवं व्दिपद पक्षियों की वर्षा होती हो, वहाँ घोर भय की सूचना समझनी चाहिये।

इसके अतिरिक्त अकाल में लतायें फूलें या वृक्षों से खून की धारा निकलती हुई दिखाई पड़े तो जान लेना चाहिये कि अतिशीघ्र उस नगर का विनाश होना है।

भट्टारक श्री कुन्दकुन्ददेव का मत है -

**अकाले पुष्पिता वृक्षाः, फलिताश्चान्यभूभुजः।**
**अन्योन्यं महती प्राज्यं, दुर्निमित्तफलं वदेत्॥**

**(कुन्दकुन्द श्रावकाचार :- ८/१३)**

**अर्थात् :-** यदि वृक्ष अकाल में फूलें और फलें तो अन्य राजा के साथ महान युद्ध होगा ऐसा उक्त दुर्निमित्त का फल कहना चाहिये।

अकाल में पीपल, उदुम्बर, वटवृक्ष और प्लक्ष के वृक्ष का फलना और फूलना क्रम से ब्राह्मणवर्ण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्रवंश वाले मनुष्यों की अपार हानि को प्रकट करता है।

एक वृक्ष में अन्य वृक्षादिकों का फलना और फूलना भी हानिकारक है। ऐसा उत्पात भयंकर अकाल की सूचना देता है।

# देवोत्पात प्रकरण

**तित्थयरछत्तभंगे रथभंगे पायहत्थसिरभंगे।**
**भामण्डलस्स भंगे सरीरभंगे तहच्चेव ॥७०॥**

**अर्थ :-**

यदि तीर्थंकर के छत्र का भंग हो, रथ का भंग हो अथवा हाथ,पाँव, मस्तक, भामण्डल या शरीर का भंग हो।

**भावार्थ :-**

अब तीर्थंकर की प्रतिमा से जो उत्पात होते हैं, उनको आचार्य भगवन्त बताते हैं। तीर्थंकर की प्रतिमा का छत्रभंग, रथभंग, हाथ, पाँव, मस्तक या शरीर के किसी भी अंग का भंग हो जावे या भामण्डल का भंग हो जावे, तो उसका क्या फल होगा ? इसका वर्णन आगे आने वाली गाथाओं में बतायेंगे ।

**एए देसस्स पुणो चलणे तह णच्चणे य णिग्गमणे।**
**जे हुंति य तद्दोसा ते सव्वे कत्तइस्सामि ॥७१॥**

**अर्थ :-**

जिस देश अथवा नगर में प्रतिमा जी स्थिर या चलते हुए भंग हो जाये, उनके शुभाशुभ फलों को कहता हूँ।

**भावार्थ :-**

जिस देश में अथवा जिस नगर में चल प्रतिमा भंग हो जाये अथवा अचल प्रतिमा भंग हो जाये, तो उसका क्या फल होता है ? प्रतिमा के भंग हो जाने पर प्राप्त होने वाले शुभ और अशुभ फल का वर्णन मैं करुंगा। ऐसी प्रतिज्ञा ग्रन्थकर्त्ता ने की है।

**छत्तस्स पुणो भंगो णरवइभंगो रहस्स भंगेण।**
**होहइ णरवइमरणं छट्ठे मासे पुरविणासो ॥७२॥**

**अर्थ :-**

छत्र का भंग होने के कारण राजा को हानि होती है। जिनेन्द्रदेव की प्रतिमा का रथभंग होने से राजा का मरण होता है तथा छह माह में उस नगर का भी नाश होता है।

**भामंडलस्स भंगे णरवइपीडा य मरणंसा य।**
**होहइ तइए मासे अहवा पुण पंचमे मासे ॥७३॥**

**अर्थ :-**

भामण्डल के भंग हो जाने पर तीसरे या पाँचवें माह में राजा को यावज्जीवन के लिए कष्ट होता है।

**हत्थत्त पुणो भंगे कुमारमरणं च तइए मासेण।**
**पायस्स पुणो भंगे जणपीडा सत्तमे मासे ॥७४॥**

**अर्थ :-**

प्रतिमा का हाथ टूटने से तीसरे माह में राजकुमार की मृत्यु होगी और पाँव टूटने से सातवें माह में मनुष्यों को कष्ट होगा।

**एकद्देसे चलिए यव्वययाणं वियाण पीड्डइ।**
**णयरस्स हवइ पीडा णच्चंतो तइयमासेण ॥७५॥**

**अर्थ :-**

यदि प्रतिमा स्वयं ही चलायमान हो जावे तो तीसरे माह में नगर के मनुष्यों को और राजा को अचानक कष्ट होगा।

**णरवइपहाणमरणं सत्तममासेण हवइ सिरभंगे।**
**वउवण्णस्स पुणो जणवइपीडा हवइ घोरा ॥७६॥**

**अर्थ :-**

यदि प्रतिमा का मस्तक भंग हो जावे तो सातवें माह में राजा के

प्रधान की मृत्यु होगी और प्रतिमा जी की भुजा टूटने से मनुष्यों को घोर पीड़ा होगी ।

**पडिमा विणिगामेण य रायामरणं च चोर अग्गिभयं।**
**जायइ तइए मासे पाडेए पुण लक्खइ पडणं ॥७७॥**

**अर्थ :-**

यदि प्रतिमा से आग निकलते हुए दिखाई पड़े अथवा मूर्ति सिंहासन से गिर पड़े तो जान लो कि तृतीय माह में राजा की मृत्यु होगी तथा नगर में चोर व अग्नि का भय होगा ।

**जइ पुण एए सव्वे पक्खब्भंतरेण उप्पाया।**
**जायंति तया खिप्पं दुब्भिक्खभयं णिवेदंति ॥७८॥**

**अर्थ :-**

यदि उपर्युक्त उत्पात बराबर पन्द्रह दिन होता रहे तो बहुत शीघ्र दुष्काल का भय अवश्य होगा ।

**देवा णच्चंति जिहं परिस्सिज्जंतीय तहय रोवंति।**
**जय घूमंति चलंति य हसंति वा विधिहरूवेहि ॥७९॥**

**अर्थ :-**

यदि देव की प्रतिमा नाचने लगे, जीभ निकाले, रोने लगे, घूमने लगे, चलने लगे, हँसने लगे या कई प्रकार के भाव दिखाती हो तो–

**भावार्थ :-**

प्रतिमा विकृतरूप से दिखाई पड़े तो अवश्य ही कुफल की प्राप्ति होती है ।

प्रतिमा विकृतरूप में कैसे होगी ?

देव की प्रतिमा नाचने लगे, जीभ निकाले, रोने लगे, घूमने लगे, चलने लगे, हँसने लगे या इस तरह कोई भाव प्रकट करने वाली होगी, तो क्या फल होगा ? इसका वर्णन आगे लिखा जायेगा ।

**लोयस्स दित्ति मारी दुब्भिक्खं तह य रायपीडं च।**
**चित्तं तीहा पावं पुरस्स तह णयररायस्स ॥८०॥**

**अर्थ :-**

जानो कि मनुष्यों को मारी की बीमारी, देश में अकाल अथवा शहर के लोगों को व राजा को नाना प्रकार का कष्ट होगा।

**रुइयेण राइमरणं हसियेन पदेसविब्भमो होई।**
**चलियेण कंपिएण य संगामो तत्थ णायव्वो ॥८१॥**

**अर्थ :-**

प्रतिमा जी के रोने से राजा की मृत्यु होगी। प्रतिमा जी के हँसने से देश में विक्षेप फैलेगा। प्रतिमा जी के चलित हो जाने से अथवा काँपने से उस नगर में संग्राम होगा ऐसा जानो।

**पस्सिणे तह वाही धूमेण य बहुविहाणि एयाणि।**
**बंभाण वियाणासं रुद्दे मुपणासणं कुणइ ॥८२॥**

**अर्थ :-**

प्रतिमा से धुआँ युक्त पसीना निकलना अनेक तरह के फलों को बताता है।

यदि यह कार्य शिवप्रतिमा से दिखाई पड़े तो ब्राह्मणों का नाश होगा।

**वणियाणच्च कुबेर खंदो पुण भोइये विणासेई।**
**कायच्छाणं विसहो इंदो राइं विणासेई ॥८३॥**

**अर्थ :-**

यदि कुबेर की प्रतिमा से धुवें से सहित पसीना निकलता हो तो वैश्यों का नाश होगा।

यदि कुबेर की प्रतिमा के कन्धों से धुवें से सहित पसीना निकले

तो भोइयों का विनाश होगा।

कुबेर की प्रतिमा के हाथों से धुवें से सहित पसीना निकले तो कायस्थों का नाश होगा।

यदि इन्द्र की प्रतिमा से धुवें से सहित पसीना निकले तो राजा का नाश होगा।

**भोगवइण कामो किण्णो पुण सइलोपणा णयरे।**
**अरहंत सिद्धबुद्धा जईण णासं पकुव्वंति ॥८४॥**

**अर्थ :-**

कामदेव की प्रतिमा से धुआँ निकले तो आगम के बातों की हानि होगी।

कृष्ण की प्रतिमा से धुआँ निकले तो समस्त जाति के मनुष्यों की हानि होगी।

अरिहन्त, सिद्ध और बुद्ध की प्रतिमा से धुआँ निकले तो समस्त जातियों का विनाश होगा।

**कच्छाइ नझे सियचडियाय पहणंति सव्वमहिलाणं।**
**उपमालियाय पहणइ वाराही हणइ हत्थीणं॥८५॥**

**अर्थ :-**

चण्डिका देवी के बालों से धुआँ निकले तो स्त्रियों का नाश होता है।

वराही देवी के बालों से धुआँ निकले तो हाथियों का नाश होता है।

**णाइणि गब्भविणासं करेइ पइणाण णासयरो।**
**एदे जेसि य वुत्ता असुहं कुव्वंति तेसु सया ॥८६॥**

**अर्थ :-**

नागिनी देवी के बालों से धुआँ निकले तो गर्भ का सर्वनाश

होगा। ये जो बातें बताई गई हैं, वे नियमतः अशुभ ही हैं।

**जइ सिवलिंगं फुट्टइ अग्गी जालवमुइफुल्लिंगं।**
**वसतिल्ल रुहिरधारा होहइ जो जाण उत्पायं ॥८७॥**

**अर्थ :-**

यदि शिवलिंग फूटे और उसके अन्दर से अग्निज्वाला निकले या रक्त की धारा निकले तो उसका फल बतलाते हैं।

**भावार्थ :-**

शिवलिंग फूटने पर, शिवलिंग से अग्निज्वाला निकलने पर या शिवलिंग से रक्त की धारा निकलने पर उसका फल अशुभ होता है। उन फलों का वर्णन आगे आचार्यदेव स्वयं करेंगे।

**फुडिए णयंति भेऊ अग्गीजालेण देसणासो य।**
**वसतिल्लरुहिरधारा कुणंति रोयं ण खद्दस्स ॥८८॥**

**अर्थ :-**

शिवलिंग फूट जाने से आपसी फूट बढ़ेगी, अग्निज्वाला से देश का नाश होगा और रक्त की धारा से घर-घर में रुदन होगा।

**मासे हि तीइयेहि रुवं दंसंति अप्पणा सव्वे।**
**जइण विकीरह पूया देवाणं भक्ति एएणं ॥८९॥**

**अर्थ :-**

ऐसा उत्पात होने पर मनुष्यों को चाहिये कि तीन माह तक भक्तिसहित जिनेन्द्रदेव की पूजन करें।

**भावार्थ :-**

उपर्युक्त उत्पात होने पर अर्थात् शिवलिंग फूट जाने पर, प्रतिमाओं में से पसीना निकलने पर मनुष्यों को चाहिये कि तीन मासपर्यन्त भक्ति से युक्त होकर जिनेन्द्रदेव की पूजन करें।

**भल्लेहि गंध धूवेहि पुज्जवलि बहुविहार देवेहिं।**
**तूसंति तव्व देवा सति तत्थं णिवेदंति॥९०॥**

**अर्थ :-**

पुष्प, गन्ध, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से देवता की पूजन करनी चाहिये।

**अवमाणिया विणासं करंति तह पूइया अपूएहिं।**
**देवं णिच्चं पूया तम्हा पुण सोहणा भणिया॥९१॥**

**अर्थ :-**

देवों का अपमान करना हानि का कारण है। इसलिए देवों को अपूज्य न रखें और उनका प्रतिदिन पूजन करें।

**णय कुव्वंति विणासं णय रोये येण दुक्खसंतावं।**
**देवा वि आइ विरुधा हवंति पुण पूइया संत॥९२॥**

**अर्थ :-**

सन्तुष्ट हुए देव किसी का विनाश नहीं करते और दुःखादिक नहीं देते। अतः शान्ति के इच्छुक मनुष्यों को देवताओं की पूजन करते रहना चाहिये।

**भावार्थ :-**

यद्यपि तत्त्वतः विचार किया जावे, तो यह परिलक्षित होता है कि भगवान किसी का भला या बुरा नहीं करते। सम्पूर्ण इष्ट या अनिष्ट कार्य अपने पूर्वकृत कर्म के उदयानुसार प्राप्त होते हैं। कर्मों के तीव्र उदय को मन्द करने में देवपूजनादि शुभक्रियायें सहयोग प्रदान करती हैं। अतः अनिष्ट निमित्तों के देखने पर शान्ति के इच्छुक मनुष्यों को जिनेन्द्रदेव की पूजन करनी चाहिये।

## प्रकरण का विशेषार्थ

देवों की प्रतिमा अपनी-अपनी साम्प्रदायिक मान्यता के

अनुसार बनायी जाती है। उनमें विकृतियों का आना अनिष्ट का सूचक है। इस प्रकरण में इसी अनिष्टों का विस्तृत वर्णन किया गया है।

तीर्थंकर का छत्र भंग होने से राज्य का विनाश होता है। तीर्थंकर का रथ टूटने से राजा का मरण होता है और छठे माह में राज्य का नाश होता है। तीर्थंकर का सिंहासन गिर पड़े तो तीन माह में राजा की मृत्यु होगी। तीर्थंकर के भामण्डल का भंग होने से तीन से पाँच माह के अन्दर राजा को मारणान्तिक कष्ट होगा।

जिनप्रतिमा का हाथ टूटने से तीन माह में राजकुमार की मृत्यु होगी। जिनप्रतिमा का पैर टूटने से सातवें माह में प्रजा को अपार कष्ट होगा। जिनप्रतिमा का मस्तक भंग हो जाय तो एक माह में राजा के प्रधान पुरुष की मृत्यु होगी। जिनप्रतिमा की भुजा टूट जाने से मनुष्यों को घोर पीड़ा होगी। तीर्थंकर की प्रतिमा से आग निकलने पर नगर में अग्नि और चोरों का भय होगा और तीसरे माह में राजा की मृत्यु होगी।

ये उत्पात लगातार पन्द्रह दिनों तक होते रहे तो उस नगर में अकाल का भय रहता है।

प्रतिमा रोते हुए दिखाई देवे तो राजा की मृत्यु होगी। प्रतिमा हँसते हुए दिखाई देवे तो राज्य में महान विद्वेष का प्रसार होगा। प्रतिमा चलती हुई और काँपते हुई दिखाई देवे तो उस देश में महासंग्राम होगा।

शिव की प्रतिमा से धूआँ सहित पसीना निकले तो ब्राह्मणों का नाश होगा। कुबेर की प्रतिमा से धूआँ सहित पसीना निकले तो वैश्यों का नाश होगा। इन्द्र की प्रतिमा से धूआँ सहित पसीना निकले तो राजा का नाश होगा। कामदेव की प्रतिमा से धूआँ सहित पसीना निकले तो आगम के वाक्यों की हानि होगी। कृष्ण की प्रतिमा से धूआँ सहित पसीना निकले तो मनुष्यों को अपार कष्ट होगा। अरिहन्त अथवा सिद्ध की प्रतिमा से धूआँ सहित पसीना निकले तो मनुष्य जाति की अत्यधिक क्षति होगी। बुद्ध की प्रतिमा से धूआँ सहित पसीना निकले तो मनुष्य जाति की हानि होगी। कुबेर की प्रतिमा के कन्धे से धूआँ सहित पसीना निकले तो भोइयों का नाश होगा। कुबेर की प्रतिमा के हाथों से धूआँ सहित पसीना निकले तो कायस्थों का नाश होगा। विश्वकर्मा की मूर्ति से विकृति के दर्शन होने पर शिल्पियों को कष्ट होता है। धन्वन्तरी की

प्रतिमा में विकृति के देखने पर वैद्यों को पीड़ा होगी।

चण्डिकादेवी के बालों से धूआँ निकले तो स्त्रियों का नाश होता है। वाराहीदेवी के बालों से धूआँ निकले तो हाथियों का नाश होता है। नागिनीदेवी के बालों से धूआँ निकले तो गर्भ का नाश होता है।

शिवलिंग फूटे तो परस्पर में फूट बढ़ेगी। शिवलिंग में से अग्निज्वाला निकले तो देश का विनाश होगा। शिवलिंग में से रक्त की धारा निकले तो घर-घर रोना होगा।

देवताओं के हँसने, रोने, नृत्य करने और चलने आदि को निमित्त अशुभ माने जाते हैं। ऐसे अशुभ निमित्त के घटित होने पर छह माह से लेकर एक साल तक जनता के लिए महान भय होने वाला है ऐसा जानना चाहिये।

चन्द्रमा अथवा वरुण इन दोनों में से किसी एक के साथ कोई विकृति दिखाई पड़े तो सिन्धु देश, सौवीर देश, गुजरात और वत्सभूमि में मनुष्यों का मरण होगा। भोजन की सामग्री में भय रहता है और राजा का मरण समय से पूर्व में ही हो जाता है। पाँच महीने के बाद वहाँ घोर भय का संचार होता है अर्थात् भय व्याप्त होता है।

शिव और वरुणदेव की प्रतिमा में किसी भी प्रकार का उत्पात दिखाई पड़े तो वहाँ पर ब्राह्मणों के लिए एक सौ पाँच दिनों तक महाभय होता है। इन्द्र की प्रतिमा में कोई भी उत्पात दिखाई पड़ जाय तो तीन महीने में युद्ध होता है और राजा अथवा सेनापति का वध होता है। यदि बलदेव की प्रतिमा या उसके उपकरण-छत्र, चमर आदि में किसी भी प्रकार का उत्पात दिखाई पड़ जाय तो सात महीनों तक उस राष्ट्र के योद्धाओं को पीड़ा होती है।

वासुदेव की प्रतिमा और उसके उपकरणों में किसी भी प्रकार का उत्पात दिखलाई पड़े तो सारी प्रजा में षड्यन्त्रकारियों का वर्चस्व बना रहता है और चार माह के भीतर ही राजा का वध हो जाता है। प्रद्युम्न की प्रतिमा में किसी भी प्रकार का उत्पात दिखाई पड़ना वेश्याओं के लिए अत्यन्त भयकारक होता है। कुशील व्यक्ति भी आठ माह तक भय का पात्र बना रहता है। सूर्य की प्रतिमा में कुछ उत्पात दिखाई देता हो तो एक महीने या डेढ़ महीने में चोरों का विनाश हो जाता है या वे रुदन

करते हुए बहुत दुःख को प्राप्त होते हैं।

भूतों की मूर्ति में उत्पात दिखाई पड़े तो दास-दासियों को सदा पीड़ा होती है। इस उत्पात को देखने वाला व्यक्ति भी एक महीने तक अधिक पीड़ा को प्राप्त होता है।

चन्द्रमा, वरुण, शिव और पार्वती की प्रतिमाओं में उत्पात हो तो राजा की पट्टरानी को मरण का भय होता है। सुलसा की मूर्ति में उत्पात दिखाई पड़ने पर सपेरों को कष्ट पहुँचता है। भद्रकाली की प्रतिमा में उत्पात परिलक्षित होने पर व्रती स्त्रियों को पीड़ा होती है। कामदेव की स्त्री की प्रतिमा अर्थात् रति की प्रतिमा अथवा किसी भी स्त्री की प्रतिमा में किसीप्रकार का उत्पात दिखाई पड़ने पर नगर की प्रधान स्त्रियों में भय का संचार होता है। लक्ष्मी के मूर्ति की विकृति वैश्यवर्णीय स्त्रियों के लिए भयकारक मानी गयी है।

जहाँ देवों द्वारा नाचना, बोलना, हँसना, कीलना और पलक झपकना आदि क्रियायें की जाती हैं, वहाँ अत्यन्त भय होता है।

स्थिर प्रतिमा अपने आप अपने स्थान से हटकर दूसरे स्थानपर जावे अथवा चलती हुई ज्ञात हो तो तीसरे महीने में उस नगरवासियों के समक्ष अचानक विपत्ति आती है। उस नगर या प्रदेश के प्रमुख अधिकारी को मृत्युतुल्य कष्ट भोगना पड़ता है। जनसाधारण को भी आधि-व्याधि आदि से उत्पन्न कष्ट उठाने पड़ते हैं।

प्रतिमा सिंहासन से नीचे उतर आये अथवा सिंहासन से नीचे गिर जाये तो उस प्रदेश के मुखिया की मृत्यु हो जाती है। उस प्रदेश में अकाल, महामारी फैलती है और वर्षा का अभाव रहता है।

यदि उपर्युक्त उत्पात लगातार सात दिन अथवा पन्द्रह दिनों तक होते रहे तो निश्चयरूप से प्रतिपादित फल की प्राप्ति होती है परन्तु एक या दो दिन उत्पात होकर शान्त हो जावे तो पूर्ण फल की प्राप्ति नहीं होती है।

किसी भी देवता की प्रतिमा जीभ निकालकर कई दिनों तक रोती हुई दिखाई पड़े तो उस नगर में अत्यन्त उपद्रव होता है। प्रशासक और प्रशास्यों में वैमनस्य हो जाता है। धन-धान्य की क्षति होती है। चोर और डाकुओं का उपद्रव अधिक बढ़ जाता है। संग्राम, मारकाट और

संघर्ष की स्थिति बढ़ती जाती है।

प्रतिमा का रोना राजा, मन्त्री या किसी महान नेता की मृत्यु का सूचक है। प्रतिमा का हँसना पारस्परिक विद्वेष, संघर्ष एवं कलह का सूचक है। प्रतिमा का चलना अथवा काँपना बीमारी, संघर्ष, कलह, विषाद, आपसी फूट का सूचक है। प्रतिमा का गोलाकार चक्कर काटना भय, विद्वेष, असम्मान, आर्थिकहानि तथा देश की जनहानि का सूचक है। प्रतिमा का हिलना तथा रंग बदलना अनिष्टसूचक है। इस निमित्त को तीन महीनों में अनेक प्रकार के कष्टों के आगमन की सूचना ही समझनी चाहिये।

किसी भी देवता के प्रतिमा का पसीजना अग्निभय, चोरभय और नगर में महामारी का सूचक है। धुएँ सहित प्रतिमा से पसीना निकले तो जिस प्रदेश में यह घटना घटित होती है, उसके सौ कोस की दूरी तक चारों ओर धन और जन की क्षति का कारण होती है। उस स्थानपर अतिवृष्टि या अनावृष्टि के कारण जनता को महान कष्ट होगा।

तीर्थंकर की प्रतिमा से पसीना निकलने पर धार्मिक विद्वेष फैलेगा, जिससे मुनियों और श्रावकों को विधर्मियों के द्वारा उपसर्ग सहन करना पड सकता है। राम की प्रतिमा से पसीने को निकलते हुए देखने से उस स्थानपर लूटपाट और उपद्रवों के द्वारा अपार धन का विनाश हो जाता है। सूर्यप्रतिमा से पसीने के निकलने पर मनुष्यों को अचानक ही अपार कष्ट भोगने पड़ते हैं।

ब्रह्मा की प्रतिमायें, शासनदेवी-देवताओं की प्रतिमा और दिक्पाल देवों की प्रतिमाओं में किसी भी प्रकार की विकृति दिख पड़ने पर समाज की हर तरह से हानि होती है।

प्रतिमा का विकृतरूप दिखने पर प्राप्त होने वाले अशुभ फलों की शान्ति का उपाय बताते हुए ग्रन्थकार ने लिखा है -

**मासे हि तीइयेहि रूवं दंसंति अप्पणा सव्वे।**

**जइण विकीरह पूया देवाणं भत्ति एएणं॥८९॥**

**अर्थ :-** ऐसा उत्पात होने पर मनुष्यों को चाहिये कि तीन माह तक भक्तिसहित जिनेन्द्रदेव की पूजन करें।

# राजोत्पात प्रकरण

**छत्तोणुज्जलदंतो जइ पडइ णरवइस्स पासम्मि।**
**अह पंचमम्मि दिवसे णरवइ णासुत्ति णायव्वो॥९३॥**

**अर्थ :-**

यदि छत्र अथवा चमर अपने आप टूट कर राजा के पास आकर पड़े, तो राजा की पाँचवें दिन मृत्यु होगी।

**अहणंदि तूर संखा वज्जंति अनहया वि फुट्टंति।**
**अह पंचमम्मि मासे णरवइ मरणं च णायव्वो॥९४॥**

**अर्थ :-**

जहाँ ढोलक, तुरंग, तुरई और शंख के अपने आप बजने की आवाज कानों में सुनाई पड़ती हो, वहाँ अवश्य ही पाँचवें माह में राजा की मृत्यु हो जायेगी।

**चावं मुसली सत्ती सतो णच्चंता णवर जच्छ दीसंति।**
**अह पंचमम्मि मासे णरवइ णासुत्ति णायव्वो॥९५॥**

**अर्थ :-**

जिस स्थान पर यक्ष मूस से लड़ते हुए दिखाई देवें, वहाँ पर पाँचवें माह में राजा की मृत्यु होगी।

**कोट णयरस्सदोर देवल चउप्पहे य रायगिहे।**
**अह तो रणेय इंदो णिद्धसण सोहणं णीऊ॥९६॥**

**अर्थ :-**

नगर या कोट के दरवाजे पर, देव के मन्दिर पर, राजमहल पर अथवा चौराहे पर पक्षी लड़ते हुए दिखें अथवा नाचते हुए दिखें, तो उसका फल निम्नरूप से जानना चाहिये।

**भावार्थ :-**

नगर के दरवाजे पर, कोट के दरवाजे पर, मन्दिर पर, राजमहल पर अथवा चौराहे पर पक्षियों को लड़ते हुए देखना या नाचते हुए देखना अशुभ होता है। उसका फल आगामी गाथाओं में बतायेंगे।

**पायारवालवहो तोरणमज्झे य गब्भयाऊ य।**
**गयसाल अस्स साले कुणइ वहं साहणस्स सया ॥९७॥**

**अर्थ :-**

पक्षी यदि कोट पर नाचे, तो बच्चों की हानि होती है। पक्षी यदि दरवाजे पर नाचे, तो गर्भवती महिलाओं की हानि होती है। पक्षी यदि गौ-शाला अथवा घुड़शाला पर नाचे, तो साहूकारों की हानि होगी।

**देवणुले विप्पभओ रायगिहे रायणासणं कुणई।**
**शक्कधये सुयपड्विो पुरस्स णासं णिवेदेई ॥९८॥**

**अर्थ :-**

देवमन्दिर पर पक्षियों के नाचने से ब्राह्मणों को दुःख होता है। राजमन्दिर पर पक्षियों के नाचने से राजा का मरण होता है और चौराहे पर पक्षियों के नाचने से सम्पूर्ण शहर का नाश होता है।

**आइच्चो जइ छिद्दो अह अक्वीरे य दीसए मज्झे।**
**तो जाण रायमरणं संगामो होई वरिसेण ॥९९॥**

**अर्थ :-**

यदि सूर्य के मध्य में छेद मालुम होने लगे और सूर्य के मध्य में कुंजाकृति (लताओं और पौधों से आच्छादित स्थान के आकार के समान आकृति का धारक) मनुष्य ज्ञात हो, तो एक वर्ष में राजा की मृत्यु होगी और महाभयंकर संग्राम होगा।

**दिवसे उलूय हिंडति सव्वण वायसऊ रयणीसु।**

अरवंति पुरविणासं भयं च रण्णं णिवेदेहि ॥१००॥

**अर्थ :-**

यदि दिन में उल्लू और रात में कौवे रोवें तो नगर का विनाश व संग्राम का भय बना रहेगा।

## प्रकरण का विशेषार्थ

छत्र या चमर अपने आप टूट जाये और राजा के पास आकर गिरे तो पाँचवें दिन राजा की मृत्यु होगी।

आचार्य श्री भाद्रबाहु का मत है -

**राजोपकरणे भग्ने, चलिते पतितेऽपि वा।**
**क्रव्यादसेवने चैव, राजपीडां समादिशेत् ॥**

**(भद्रबाहु संहिता :- ४/५५ )**

**अर्थात् :-** राजा के उपकरण (छत्र, चमर, मुकुट आदि) के भंग होने पर, चलित होने पर , गिरने पर अथवा मांसाहारी के व्दारा सेवा करने से राजा को पीड़ा होगी ऐसा कहना चाहिये।

जहाँ पर बिना बजाये भी ढोलक आदि की आवाजें सुनाई दें, वहाँ के राजा की मृत्यु पाँचवें माह में होती है। यही फल यक्ष को भूरे के साथ लड़ते हुए देखकर कथान करना चाहिये।

कोट पर पक्षियों के नाचते अथवा लड़ते हुए देखने से बच्चों की हानि होती है। दरवाजे पर पक्षियों के नाचते अथवा लड़ते हुए देखने से गर्भवती स्त्रियों की हानि होती है। गउशाला या घुड़साल पर पक्षियों के नाचते अथवा लड़ते हुए देखने से साहूकारों की हानि होती है। देवमन्दिर पर पक्षियों के नाचते अथवा लड़ते हुए देखने से ब्राह्मणों की हानि होती है। राजमन्दिर पर पक्षियों के नाचते अथवा लड़ते हुए देखने से राजा का मरण होता है। चौराहे पर पक्षियों के नाचते अथवा लड़ते हुए देखने से सम्पूर्ण शहर का विनाश होता है।

यदि ऐसा प्रतीत हो कि सूर्य में छेद हैं तो एक वर्ष के अन्दर उस नगर के राजा की मृत्यु हो जायेगी। दिन में उल्लू और रात्रि में कौवें यदि रोवें अथवा घूमें तो संग्राम होकर उस नगर का नाश हो जायेगा।

# इन्द्रधनुष प्रकरण

रत्तिम्मिय इंदधणु जइ दीसं एसो य सुक्किलभं।
सो कुणइ रत्थभंगं रणस्स वीरो य पीडंच ॥१०१॥

**अर्थ :-**

रात्रि के समय में यदि श्वेत इन्द्रधनुष दिखाई देवे तो वहाँ पर संग्राम में रथभंग होंगे व मनुष्यों को कष्ट होगा।

दिवहे दीसइ धणुओ पुव्वेण य दक्खिणेण वामेण।
सो कुणइ णीरणासं वायं च व मुंचय बहुयं ॥१०२॥

**अर्थ :-**

यदि दिन के समय में इन्द्रधनुष पूर्व से दक्षिण की ओर वक्र मालुम होवे तो खूब हवा चलेगी परन्तु पानी नहीं बरसेगा।

पच्छिमभाये पुणओ वरिसं च विमंचए अइ बहुयं।
उत्तर उइवो अहवा दीसंति ण सोहणा धण्णू॥१०३॥

**अर्थ :-**

यदि इन्द्रधनुष पूर्व से पश्चिम की ओर टेडा दिखाई देवे तो पानी बहुत बरसेगा। यदि धनुष पूर्व से उत्तर की दिशा में टेढ़ा दिखाई पडे तो शुभ नहीं है।

धणियं णइएविन्ना कण्णा कुव्वंति मंडलं णिउअं।
साहंति अग्गिदाहं चोर भयं च णिवेदत्ति ॥१०४॥

**अर्थ :-**

यदि इन्द्रधनुष मण्डलाकार ज्ञात होवे तो अग्नि व चोर का भय अवश्य बतावेगा।

**इंदुद्धवणेय पुणो जं दोसा हुंति णयरमज्जम्मि।**
**ते हुंति णरिंदस्स दु वरिसदिणब्भंतरे णियदं॥१०५॥**

**अर्थ :-**

इन्द्रधनुष के ये दोष जिस नगर में अथवा जिस राजा के राज्य में दिखाई पड़े, उस स्थान पर इसका फल मिलता है।

**उड्ढंतो जइ कंपइ परिधो लभइ वलययाणमइं।**
**तो जाणइं वलसोहं रजब्भंसंचरणस्सं॥१०६॥**

**अर्थ :-**

जो धनुष उठता हुआ या काँपता हुआ दिखाई देवे अथवा कभी लम्बा या कभी चौड़ा दिखाई देवे तो राजभय होगा ऐसा जानो।

**इंदो कीलविणासं मंत्तिविरुद्धो दुपरियणे होई।**
**उड्ढंते पुण पडइय णरवइपडणं णिवेदेई॥१०७॥**

**अर्थ :-**

यदि इन्द्रधनुष खड़ा दिखाई देवे तो मन्त्री व राजा में विरोध होता है। यदि वह उठता हुआ दिखाई पड़े और तत्काल गिर पड़े तो राजा का राजभंग होता है।

**भंगे णरवइभंगं फुणियेण रोयपाडिउंन्होई।**
**पावग्गहस्स णु गहिए उड्ढंतो कुणइ संगामं॥१०८॥**

**अर्थ :-**

टूटता हुआ इन्द्रधनुष दिखाई पड़ने पर उस नगर के राजा की मृत्यु होती है। यदि इन्द्रधनुष बिखरता हुआ दिखाई पड़े तो रोग की पीडा होती है और यदि इन्द्रधनुष से अग्निज्वाला निकलती हुई दिखाई देवे तो संग्राम होगा।

**जइ मुंचइ धूमं वा अग्गिजालं च णुड्ढिओ संतो।**

**तो कुणइ राइमरणं देसविणासं पुणो पच्छा ॥१०९॥**

**अर्थ :-**

यदि इन्द्रधनुष से धूआँ निकलता हुआ दिखे और उसके चारों ओर अग्नि की चिनगारियाँ उठती दिखाई देवे तो राजा की मृत्यु होगी और बाद में उस देश का नाश होगा।

**वेठिज्जइ एहिज्जइ महुजालेहिं फीडए हिं वा।**
**तो जाण मारि घोरा जणसरोगं च दुब्भिक्खं ॥११०॥**

**अर्थ :-**

यदि मधुमक्खी के छत्ते के समान इन्द्रधनुष नगर को घेर लेवे तो ऐसी घोर महामारी होगी जिससे मनुष्यों को कष्ट होगा व राज्य में अकाल पड़ेगा ऐसा जानो।

**इंदद्दयमारुढो रिठोज्जइ कुणइ बहुविहारावं।**
**अक्खइ सो पुरभंगं चणो य मेणा ------॥१११॥**

**अर्थ :-**

यदि एक के ऊपर एक दो इन्द्रधनुष दिखाई देवे तो मनुष्यों की हर तरह से हानि होगी एवं नगर का विनाश होगा।

**एदे पुण उप्पादा सव्वे णासंति वरिसदे संति।**
**पंचदिणब्भंतरदो अहवा पुण सत्तरत्तेण ॥११२॥**

**अर्थ :-**

इन्द्रधनुष सम्बन्धित ये कुफल पाँच दिन, सात दिन या एक वर्ष के अन्दर अवश्य दिखाई देंगे।

**यदि सो मोणिसुद्दो उड्डदि णुप्पादवज्जिदो संतो।**
**रण्णे पुरा स होहदि खेमसिवं तम्मि देसम्मि ॥११३॥**

**अर्थ :-**

यदि यह उत्पात दोषों से रहित हो तो राजा को शान्तिदायक होते हैं एवं नगर में भी शान्ति होती है।

**अह उत्तमेहि णीया वमाणिया सोहणंति णायव्वं।**
**अहमेलि णुत्तमा पुण देसविणासं परि कहंति॥११४॥**

**अर्थ :-**

उत्तम पुरुष उत्पातों का अच्छीतरह से विचार करके देश के विनाश का कारण बताते हैं।

**जइ बाला हिंडंता भिक्खं देहिंति मुकुरावित्ता।**
**दुब्भिक्खभयं होहइ तद्देसे णत्थि संदेहो॥११५॥**

**अर्थ :-**

जहाँ बच्चे खेलते-खेलते रोने लगे और मुझे भीख दो ऐसा मुँह से कहने लग जायें, उस देश में दुष्काल पड़ेगा। इसमें किसीप्रकार का सन्देह नहीं है।

## प्रकरण का विशेषार्थ

श्वेतप्रकाश का सात रंगों में धनुषाकार विभाजित होने को इन्द्रधनुष कहते हैं। सामान्यतः किसी भी समय एक ही इन्द्रधनुष दिखाई देता है। यद्यपि क्वचित एक साथ दो इन्द्रधनुष भी दिखाई देते हैं।

इन्द्रधनुष में किस रंग का बाहुल्य है? इन्द्रधनुष कौनसी दिशा में दृष्टिगोचर हो रहा है? इन्द्रधनुष का आकार कैसा है? आदि बातों को देखकर शुभाशुभ फल जाने जा सकते हैं।

इन्द्रधनुष के रंगों का प्रभाव बताते हुए आचार्य श्री भद्रबाहु जी लिखते हैं -

**इन्द्रायुधं निशिश्वेतं, विप्रान् रक्तं च क्षत्रियान्।**
**निहन्ति पीतकं वैश्यान् , कृष्णं शुद्रभयङ्करान्॥**

(भद्रबाहु संहिता :- १४/५८)

**अर्थात् :-** यदि रात्रि के समय में श्वेतवर्ण का इन्द्रधनुष दिखाई देता हो तो वह ब्राह्मणों के लिए भयदायक होता है। यदि रात्रि के समय में रक्तवर्ण का इन्द्रधनुष दिखाई देता हो तो वह क्षत्रियों के लिए भयदायक होता है। यदि रात्रि के समय में पीतवर्ण का इन्द्रधनुष दिखाई देता हो तो वह वैश्यों के लिए भयदायक होता है। यदि रात्रि के समय में श्यामवर्ण का इन्द्रधनुष दिखाई देता हो तो वह शूद्रों के लिए भयदायक होता है।

भट्टारक श्री कुन्दकुन्द जी महाराज भी इस बात की पुष्टि करते हुए लिखते हैं -

**सितं रक्तं पीतकृष्णं, सुरेन्द्रस्य शरासनम्।**
**भवेद् विप्रादि वर्णानां, चतुर्णां नाशनं क्रमात्॥**

(कुन्दकुन्द श्रावकाचार :- ८/१२)

इन्द्रधनुष के श्वेतरंग से सम्बन्धित फलादेश में प्रस्तुत ग्रन्थकार का मतभेद है। ग्रन्थकार के अनुसार श्वेतरंग का इन्द्रधनुष संग्रामकारक और मनुष्यों के लिए कष्टसूचक है।

इन्द्रधनुष का कम्पित होना अथवा भग्न होना राजा और राज्य के लिए हानिकारक है। इस विषय में आचार्य श्री भद्रबाहु जी का मन्तव्य इसप्रकार है -

**भज्यते नश्यते तत्तु, कम्पते शीर्यते जलम्।**
**चतुर्मासं परं राजा, म्रियते भल्यते तथा॥**

(भद्रबाहु संहिता :- १४/५९)

**अर्थात् :-** यदि इन्द्रधनुष भग्न होता हो, नष्ट होता हो, काँपता हो और जल की वर्षा करता हो तो राजा चार महीने के उपरान्त मृत्यु को प्राप्त होता है अथवा आघात को प्राप्त होता है।

इन्द्रधनुष टूटता हुआ, बिखरता हुआ अथवा अग्नि से युक्त होता हुआ दिखाई पड़ना अशुभकारक है। मधु के छत्ते के समान आकार का धारक इन्द्रधनुष महामारी का सूचक है। एक के ऊपर एक ऐसे दो इन्द्रधनुष दिखाई देने पर उस नगर के मनुष्यों को हर प्रकार की अपार हानि सहन करनी पड़ेगी।

# उल्कापतन प्रकरण

**पुव्वे उत्तरमुण्णाणुक्का वा जत्थ दीसए थपडा।**
**तत्थ विणासो होहइ गामे णयरे ण संदेहो॥११६॥**

**अर्थ :-**

यदि उल्का पूर्व और उत्तरदिशा में दिखाई पड़े तो उस गाँव अथवा नगर का नाश होगा। इसमें किसीप्रकार का सन्देह नहीं है।

**उक्का यत्थ जलंति मासे–मासे सुसव्वकालेसु।**
**छम्मासं पडमाणं तत्थोपाणं णिवेदेई॥११७॥**

**अर्थ :-**

जहाँ पर हर माह में उल्का दिखाई देवे इसतरह वह लगातार छह माह तक दिखाई देवे तो अवश्य ही उस देश में रहने वाले मनुष्यों के प्राणों का हरण होगा।

**सुक्किदवा धूमाभा जइ वाणिच्चाइ धूसरा उक्का।**
**पडमाणो दिरिज्झाणं हम्मि तं जाण उप्पादं॥११८॥**

**अर्थ :-**

सफेद धूसर रंग वाली उल्कापात जहाँ होती है, उसे बड़ा भारी उल्कापात जानो।

**सुक्का हणेइ विप्पा रत्ता पुण खत्तइं विणासेई।**
**पीया हणेइ वइसे किण्हा पुण सुद्दणासयरी॥११९॥**

**अर्थ :-**

सफेद उल्का विप्रों का संहार करती है। लाल उल्का क्षत्रियों का संहार करती है। पीली उल्का वैश्यों का संहार करती है तथा काली उल्का शुद्रों का संहार करती है।

**चित्तलयं तिल्लाणं वाहिं मारि च ताण को वेइ।**
**सामासम्मि पडंती सोहण उक्का णवेराइ॥१२०॥**

अर्थ :-

पंचरंगी उल्का मारी की बीमारी करती है और जो उल्का इधर उधर से टकरा जाये, वह प्राणनाश करती है।

**मज्झणिए संज्झाए वायग्गिभयं णिवेइ पडंती।**
**अह अण्णवेलदिट्ठा उक्का रणस्स णासयरा॥१२१॥**

अर्थ :-

सन्ध्या व अर्धरात्रि की उल्का हवा व अग्नि का भय करती है तथा सूर्योदय की प्रथम उल्का राजा का नाश करती है।

**पडमाणी णिद्दिट्ठा धुव सुवण्णस्स णासिणी उक्का।**
**अंगारायेण जुत्ता अग्गीदाइं णिवेदेई॥१२२॥**

अर्थ :-

जो उल्का गिरती हुई दिखाई देवे तो वह सुवर्ण का नाश करती है तथा यदि वह अंगारे लिये हुए गिरे तो वह अग्निदाह करती है।

**अह सुक्केणय जुत्ता जम्हा जइ पडइ कहव पलजंती।**
**तोरणमंडविणासं कच्छुकंडुच्च सा णिवेएई॥१२३॥**

अर्थ :-

यदि शुक्र के उदय में जलती हुई उल्का दिखाई देवे तो वह रस के बर्तनों को नष्ट करती है और खुजली के रोग को उत्पन्न करती है।

**....................................................।**
**राहूण विसयघादं जलणासय रहिवे उक्का॥ १२४॥**

अर्थ :-

यदि राहु के उदय में उल्का का पतन होता है तो वह पानी का नाश करती है।

**परकम्मि जस्स पडिया तस्स घोरा हवेइ पुण्णाणी।**
**इंद दिसाए सुपडिया खेम सुभिक्खं णिवेदेहि॥१२५॥**

**अर्थ :-**

पश्चिमदिशा में पडी हुई उल्का घोर पीड़ा उत्पन्न करती है। उत्तरदिशा में पड़ी हुई उल्का कुशल और सुभिक्ष को उपजाती है।

**अग्गेई अग्गिभयं जम्माए एण सोसयं जणणी।**
**अह णरइये पडिया दव्वविणासं णिवेदेहि॥१२६॥**

**अर्थ :-**

यदि उल्का अग्नेयकोण में पडे तो अग्निभय को उत्पन्न करती है। यदि उल्का दक्षिणदिशा में पडे तो पीड़ा को उत्पन्न करती है और नैऋत्यकोण में पडी हुई उल्का द्रव्य का नाश करती है।

**अह वारुणीय पडिया वरिसं वायं च बहु णिवेएई।**
**वायव्वे रोयभयं सोभा पुण सो तया होई॥१२७॥**

**अर्थ :-**

यदि नीची या ऊपर चलती हुई उल्का पड़ जाती है तो वर्षा और हवा चलाती है। वायव्यकोणीय चलती उल्का रोगभय को करती है, परन्तु यदि उल्का वायव्यकोणीय हो तो वह शुभ भी है।

**ईसाणाए पडिया घादं गब्भस्स कुणइ महिलाणं।**
**दित्तदिसासु य पडिया भयजणणी दारुणी उक्का॥१२८॥**

**अर्थ :-**

ईशानकोण में पडी हुई उल्का गर्भ का नाश करती है और यदि वह पूर्वदिशा में पडे तो घोर भय को उत्पन्न करती है।

**सूरम्मि तावयंती पुहवी तावेइ णियणियाणुक्का।**
**सोमे पुण सोममुही खेमसुभिक्खंकरी उक्का॥१२९॥**

**अर्थ :-**

यदि रविवार के दिन उल्कापतन हो तो पृथ्वी पर गर्मी से सम्बन्धित पीड़ा होगी और यदि सोमवार को उल्कापतन हो तो सुभिक्ष का निर्माण करती है।

**जस्स य रिक्खे पडिया तस्सेव य सोहणं बहु कुणई।**
**अण्णस्सवि कुणई भयं थोवं-थोवं ण संदेहो॥१३०॥**

**अर्थ :-**

उल्कापात जो जहाँ से उठा हो वहीं पर लौट जाये तो अच्छा है, अन्यथा वह पुनः - पुनः भयोत्पादन करती है। इसमें किसीप्रकार का सन्देह नहीं है।

**कित्तिय रोहिणिमज्झे पडमाणी कुणइ पुहइसंतावं।**
**डहइय पुरगामाई रायगिहं णत्थि संदेहो॥१३१॥**

**अर्थ :-**

यदि उल्कापतन कृतिका व रोहिणी नक्षत्र में हो तो पृथ्वी के लिये सन्तापदायक है, शहर या गाँव को, राज्य या राजमहल को नष्ट कर देती है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

**चोरा लुंपंति मही रायकुलापयाची लुप्पया होंति।**
**विलयंति पुत्तदारा पापविणस्सते तथा सव्वं॥१३२॥**

**अर्थ :-**

धरातल पर चोरों का भय बढ़ेगा। माता पुत्र को और स्त्री पति को छोड़ देगी।

**इंदो वरसइ मंदं सस्साण विणासणो हवइ लोए।**

## इयणुप्पाप णिमित्तं जाणेयव्वं च पयत्तेण ॥१३३॥

**अर्थ :-**

पानी मन्द बरसेगा। गेहूँ आदि धान्य नाश को प्राप्त होंगे। यह सब उत्पात इस प्रकार के उल्कापात से होता है।

## प्रकरण का विशेषार्थ

निमित्तशास्त्रों में आकाश से पतित होने वाले ताराओं को उल्कापतन कहते हैं। आधुनिक वैज्ञानिकों के लिए उल्कापतन का विषय आश्चर्यकारक रहा है। वे इसके रहस्य को अवगत करने का प्रयत्न कर रहे हैं। कुछ वैज्ञानिक इसे टूटने वाला नक्षत्र {Shooting Stars} कहते हैं तो कुछ वैज्ञानिक इसे अग्निगोलक {Fire Balls} मानते हैं। अन्य वैज्ञानिक इसको उपनक्षत्र {Asterides} कहते हैं।

संहिता ग्रन्थों में उल्कापतन का विस्तारपूर्वक वर्णन पाया जाता है। यहाँ उसका वर्णन संक्षेप से किया जा रहा है।

लालवर्णीय वक्र, टूटी हुई उल्का को पतित होते हुए देखने वाले व्यक्ति को भय, पाँच माह के अन्दर परिवार के किसी इष्ट व्यक्ति की मृत्यु, धन की हानि, दो माह के बाद किये गये व्यापार में हानि, राजकीय कर्मचारियों से विवाद, मुकदमा और अनेक प्रकार की चिन्ताओं से ग्रस्त होना पड़ता है।

श्यामवर्णीय उल्का का पतन देखने से व्यक्ति के किसी आत्मीय की मृत्यु सात माह के अन्दर-अन्दर ही होगी। उसे हानि, अशान्ति, झगड़ा और परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। यदि कृष्णवर्णीय उल्का का पतन सन्ध्याकाल में दिखाई पड़ता है तो उसे भय, विद्रोह और अशान्ति का सूचक जानना चाहिये। यदि सन्ध्याकाल के तीन घटिका के बाद (७२ मीनट के बाद) उल्कापतन दिखाई दे तो विवाद, कलह, पारिवारिक कलह, किसी इष्ट व्यक्ति को कष्ट आदि का संसूचक है। मध्यरात्रि का उल्कापतन देखने पर स्वयं को अपार को कष्ट होगा, ऐसा प्रकट करता है। उससे किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु, आर्थिक संकट और अशान्ति का बोध होता है।

श्वेतवर्ण वाली उल्का का पतन सन्ध्या के समय में दिखना सुखदायक है। इससे धनलाभ, आत्मसन्तोष, मित्रमिलन और सौख्य की प्राप्ति होती है। यदि श्वेत उल्का दण्डाकार हो तो लाभ की स्थिति सामान्य होती है। यदि श्वेत उल्का मुसलाकार हो तो लाभ अतिशय अल्प होता है। शकटाकार अथवा गजाकार उल्का पुष्कल लाभ को सूचित करती है। अश्व के आकार की उल्का विशेष लाभदायक है। उक्त उल्का मध्यरात्रि के समय में दिखाई पड़ने पर पुत्र स्त्री और वस्त्रादिकों का लाभ होता है। इतना ही नहीं, अपितु अभीष्ट कार्य की सिद्धि होती है।

यदि श्वेत उल्काओं का पतन रोहिणी, पुनर्वसु, धनिष्ठा और तीनों उत्तराओं में (उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराभाद्रपदा) दिखाई पड़े तो अधिक लाभ मिलता है। उस दृष्टा को धन-धान्यादि की प्राप्ति के साथ-साथ स्त्री व पुत्र का भी लाभ होता है। आश्लेषा, भरणी, रेवती और तीनों पूर्वाओं में (पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वा भाद्रपदा) नक्षत्र में उल्का का पतन दिखने पर सामान्य लाभ होता है। आर्द्रा, पुष्य, मघा, धनिष्ठा, श्रवण और हस्त नक्षत्रों में श्वेत उल्का का पतन भारी लाभ को सूचित करता है। मघा, रोहिणी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपदा, मूल, मृगशिर और अनुराधा नक्षत्रों में उल्का का पतन स्त्री तथा सन्तानलाभ को प्रकट करता है। पुनर्वसु और रोहिणी इन दो नक्षत्रों में मध्यरात्रि में श्वेत उल्का का पतन देखने से इष्टकार्य की सिद्धि होती है।

पीतवर्ण की उल्का शुभ फलदायक है। सन्ध्या के तीन घटिका के बाद पीतवर्णीय उल्कापात देखने पर मुकदमें में विजय, परीक्षाओं में उत्तीर्णता और राज्यकर्मचारियों से मैत्री होने के अवसर को प्रकट करता है। आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य और श्रवण नक्षत्र में पीतवर्ण की उल्का का पतन देखने से स्वजाति और स्वदेश में सम्मान की वृद्धि होती है।

उक्त उल्का मध्यरात्रि में दिखने पर हर्ष की प्राप्ति होती है। रात को लगभग एक बजे उक्तप्रकार की उल्का का पतन देखने पर सामान्य पीड़ा, आर्थिक लाभ और प्रतिष्ठित व्यक्तियों से प्रशंसा का लाभ प्राप्त होता है।

विचित्रवर्ण वाली उल्का का पतन देखना अर्थहानि को सूचित करती है। धूम्रवर्ण वाली उल्का का पतन देखने से वैयक्तिक हानियों का सामना करना पड़ता है।

उल्काओं के आकार से भी फल में अन्तर पाया जाता है। हाथी, घोड़ा और बैल आदि पशुओं के आकार को धारण करने वाली उल्कायें सुख की सूचिकायें हैं। साँप, शूकर और चमगीदड़ आदि के समान आकार वाली उल्काओं का पतन भय और रोग को सूचित करती हैं। सूक्ष्म आकार वाली उल्कायें शुभ और स्थूल आकार वाली उल्कायें अपना अशुभ फल देती हैं। तलवार की द्युति के समान उल्कायें व्यक्ति के अवनति को सूचित करती है। कमल, वृक्ष, चन्द्र, सूर्य, आदि रूप वाली उल्कायें यदि रविवार, मंगलवार और गुरुवार के दिन गिरते हुए दिखाई पड़े तो व्यक्ति को आकस्मिक लाभ अत्यधिक मात्रा में होता है। उसे सन्तान का लाभ और अनेक मांगलिक सूचनाओं की प्राप्ति होती है। मंगलवार, शनिवार और सोमवार को उल्कापात का दिखना अनिष्टकारक है। मंगलवार और आश्लेषा नक्षत्र में शुभसंकेत को सूचित करने वाली उल्काओं का पतन देखने से अनिष्ट ही होता है।

मंगलवार और रविवार को अनेक व्यक्ति मध्यरात्रि में उल्कापात देखें तो राष्ट्र की भयंकर हानि होगी। श्वेत, पीत और रक्तवर्ण की उल्का का पतन शुक्रवार और गुरुवार को दिखें तो वह राष्ट्रीय बल के बढ़ाने वाली सूचना देती है।

शुक्रवार की मध्यरात्रि में अनुराधा नक्षत्र में उल्का का पतन कृषि के लिए अतिशय उत्तम है। सोमवार की मध्यरात्रि में श्रवणनक्षत्र के समय में होने वाला उल्का का पतन देखने से गेहूँ और धान की फसल अच्छी होगी ऐसा जान लेना चाहिये। मंगलवार के दिन श्रवण नक्षत्र हो और उसदिन उल्का का पतन दिखे तो जान लेना चाहिये कि गन्ने की फसल अच्छी होगी परन्तु चने की फसल को रोग लगेगा।

गुरुवार अथवा शुक्रवार के दिन पुष्य या पुनर्वसु नक्षत्र हो और रात्रि के पूर्वार्ध में श्वेत या पीत वर्ण की उल्का का पतन दिखे तो अन्नादि वस्तुओं के भाव सामान्य ही रहेंगे ऐसा जानना चाहिये। गुरुपुष्यामृत योग में उल्कापात दिखाई पड़े तो यह सोने-चाँदी के भावों में विशेष

घट–बढ़ के सूचक है। रविपुष्यामृत योग में पीतवर्णीय उल्का का पतन सोने के भाव को पहले तीन माह तक गिरना और उसके बाद बढ़ने की सूचना देता है।

श्यामवर्ण की उल्का का पतन रविवार की रात्रि के पूर्वार्ध में दिखें तो काले रंग की वस्तुओं के भाव बढ़ेंगे। पीतवर्ण की उल्का का पतन रविवार की रात्रि के पूर्वार्ध में दिखें तो गेहूँ और चने के व्यापार में अधिक घटा–बढ़ी होगी।

श्वेतवर्ण की उल्का का पतन रविवार की रात्रि के पूर्वार्ध में दिखे तो चाँदी के भाव में बहुत गिरावट होगी। रक्तवर्ण की उल्का का पतन रविवार की रात्रि के पूर्वार्ध में दिखे तो सोने के भाव में बहुत गिरावट होगी। यदि कोई व्यापारी रविवार, मंगलवार और शनिवार के दिन पूर्वदिशा में गिरती हुई उल्का देखें तो उसे माल बेचने से बड़ा भारी लाभ हो सकता है।

इन्हीं रात्रियों में यदि पश्चिमदिशा में उल्कापतन दिख जाये तो उन्हें माल खरीदना चाहिये। दक्षिण से उत्तर की ओर गमन करने वाली उल्का देखने से मोती, हीरा, पन्ना आदि में अपार लाभ होता है। इन रत्नों के मूल्य में आठ माह तक घट–बढ़ होती रहेगी।

स्निग्ध, श्वेत, प्रकाशमान और सीधे आकार का उल्का का पतन शान्ति, सुख और निरोगता को सूचित करती है।

प्रायः सभी प्रकार की उल्काओं के पतन को सन्ध्याकाल में देखने पर चतुर्थांश फल प्राप्त होता है। उल्कापतन को रात्रि के प्रथम प्रहर में देखने से उसका षष्ठांश फल प्राप्त होता है। उल्कापतन को रात्रि के दूसरे प्रहर में देखने से उसका तृतीयांश फल प्राप्त होता है। ठीक मध्यरात्रि में अर्थात् रात्रि के बारह बजे उल्का का पतन देखने पर उसका फल आधा मिलता है।

रात्रि में बारह से एक बजे के मध्य में उल्का का पतन देखने पर फलप्राप्ति पूर्णरूप से होती है। रात्रि को एक बजे उल्का का पतन देखने पर उसका अर्धाधिक फल प्राप्त होता है। उल्कापतन को रात्रि के अन्तिम प्रहर में देखने से उसका फल न्यूनरूप में प्राप्त होता है।

अनिष्टकारी उल्का का पतन देखने पर अनिष्ट की शान्ति के लिए चिन्तामणि पार्श्वनाथ भगवान की पूजन करनी चाहिये।

# गन्धर्वनगर प्रकरण

**पुव्वदिस्सम्मिय भाए दीसदि गंधव्वसण्णिहो णयरो।**
**पच्छिमदेस विणासो होहइ तत्थेव णायव्वो॥१३४॥**

**अर्थ :-**

यदि गन्धर्वनगर पूर्वदिशा में दिखाई देवे तो पश्चिम देश का नाश होगा ऐसा जानो।

**दक्खिणदिसम्मि दिट्ठो रायाण विणासणो हवे णियरे।**
**अह पच्छिमेण दीसइ हणइ पुण पुव्वदेसोई॥१३५॥**

**अर्थ :-**

दक्षिणदिशा में यदि गन्धर्वनगर दिखाई देवे तो राजा का नाश होगा और पश्चिमदिशा में गन्धर्वनगर दिखाई देने पर पूर्वदिशा के देशों का नाश शीघ्र ही होगा।

**णुत्तरणुत्तरियाणं णयराण विणासणो हवइ दिट्ठो।**
**हेमंते रोयभयं वसंतमासे सुभिक्खयरे॥१३६॥**

**अर्थ :-**

उत्तरदिशा में यदि गन्धर्वनगर दिखाई देवे तो उत्तरदिशा वालों का नाश होता है। यदि हेमन्तऋतु में गन्धर्वनगर दिखाई पड़े तो रोग का भय व वसन्तऋतु में गन्धर्वनगर दिखाई देने पर सुकाल करता है।

**गीम्मेण णयरघादी पाउसकाले असोहणो दिट्ठो।**
**वरिसाभय दुब्भिक्खं सरए पुणवहि पीड्यरो॥१३७॥**

**अर्थ :-**

ग्रीष्मऋतु में दिखाई देने वाला गन्धर्वनगर नगर का नाश करने वाला है। यदि गन्धर्वनगर वर्षाऋतु में दिखे तो पानी कम होगा अर्थात्

दुष्काल पड़ेगा। यदि शरदऋतु में गन्धर्वनगर दिखाई पड़े तो मनुष्यों को पीड़ा देता है।

**रिउकाल मऊ एसो रयक्खय हिंडमाणणूवस्स।**
**मज्झणे रायाणे छम्मासे सो विणासेई॥१३८॥**

**अर्थ :-**

शेष ऋतुओं में गन्धर्वनगर दिखाई देने पर उसके फलस्वरूप राजा का नाश छह माह के अन्दर होगा।

**तद्देसं सो णासदि जत्थ पहिडंति दीसए राई।**
**पच्चूसे चोरभयं णरवइणासं च पुण एहं॥१३९॥**

**अर्थ :-**

गन्धर्वनगर यदि रात को दिखे तो वह देश का नाश करेगा। यदि कुछ रात्रि शेष रहने पर गन्धर्वनगर दिखे तो चौरभय और राजा का नाश होगा।

**अणकालम्मि दिट्ठे सुभिक्ख य रोग उहदेसयरो।**
**जइमं वण्णाइ दीसए हणऊ अणेयाय विसयाइ॥१४०॥**

**अर्थ :-**

उपर्युक्त समय से अन्य समयों में दिखाई देने वाला गन्धर्वनगर सुभिक्ष की और रोग दूर करने की सूचना देता है।

**चित्तलवो भयजणणो सामारोयस्स संभवा होई।**
**घिय तिल्ल खीरघादी सुक्किल उव्होय लोयस्स॥१४१॥**

**अर्थ :-**

यदि गन्धर्वनगर पंचरंग का होवे तो वह नगरभय और रोगभय को करने वाला होता है। श्वेतवर्ण वाला गन्धर्वनगर घी, तेल और दूध के नाश को सूचित करता है।

**किण्हो वच्छविणासो रत्तो पुण उदय णासणो भणिओ।**
**अइकाल रत्तवण्णो दीसंत असोहणो णयरो॥१४२॥**

**अर्थ :-**

गन्धर्वनगर यदि काले वर्ण का हो तो वह वस्त्र का नाश करता है। लालरंग का गन्धर्वनगर उदय के नाश को दर्शाता है। यदि गन्धर्वनगर लालरंग का हो और अधिक देर तक दिखाई देवे तो वह अधिक अशुभ है।

**एए दरसण णूवा णयरी असुहावहा मुणेयव्वा।**
**जम्मि दिसे दिसिज्जा तम्मि दिसे तत्तु णायव्वा॥१४३॥**

**अर्थ :-**

गन्धर्वनगर जिस शहर व जिस दिशा में दिखाई पड़े, वह उसी शहर और उसी दिशा का नाश करता है अर्थात् उसे हानि पहुँचाता है।

**अह रिक्खमज्झ वच्चह छायंतो तारयाणि बहुयाणि।**
**सो मज्झदेसणासं कुणइ पुणो णत्थि संदेहो॥१४४॥**

**अर्थ :-**

आकाश में तारों की तरह बीच में छाया हुआ गन्धर्वनगर दिखाई देने पर वह मध्य देश का नाश करता है। इसमें किसीप्रकार का सन्देह नहीं है।

**एयंते णउ वच्चइ एयंत वि णाउ हवइ दिट्ठो।**
**यच्च तद्देसणासं वाहीमरणं च दुब्भिक्खं॥१४५॥**

**अर्थ :-**

यह गन्धर्वनगर जितनी दूरी तक फैला हुआ दिखाई पड़े, उतनी दूरी तक देश का नाश, रोग से मरण और दुर्भिक्ष को दर्शाता है।

**इंदपुरणयर सहिऊ दीसइ जइ पुक्खरोय हिंडंतो।**

**चिंतेइ देसणासं वाहीमरणं च दुब्भिक्खं ॥१४६॥**

**अर्थ :-**

यदि गन्धर्वनगर इन्द्रधनुषाकार अथवा सर्प के बांबी के आकार का हो तो देशनाश, व्याधि से मरण और दुर्भिक्षकारक होगा।

**छाइज्जइ महेणं पव्वइ मित्तेण बहुपयारेण।**
**छिज्जंत जच्छ दीसइ रायविणासो हवे णियमा ॥१४७॥**

**अर्थ :-**

यदि नगर के ऊपर नगर के आकार का गन्धर्वनगर दिखाई देवे और उसके चारों ओर कोट घिरा हुआ दिखाई देवे तो निश्चय ही राजा की मृत्यु होगी।

## प्रकरण का विशेषार्थ

गगनमण्डप में उदित होने वाले इष्ट और अनिष्ट के सूचक पुरविशेष को गन्धर्वनगर कहा जाता है। पुद्गल के आकार विशेष ही आकाश में नगर के रूप में निर्मित हो जाते हैं। उनके रूप, आकार व स्थानादि का अवलोकन करके इष्टानिष्ट फल ज्ञात किया जाता है।

ज्योतिषग्रन्थों के अनुसार यदि किसी भी माह के रविवार को गन्धर्वनगर दिखलाई पड़े तो जनता को कष्ट, दुर्भिक्ष, अन्न के भाव में तेजी, घास की कमी, विषैले जन्तुओं की वृद्धि, व्यापार में लाभ, कृषि का विनाश और अन्य अनेक प्रकार के उपद्रव होते हैं।

यदि रविवार को सायंकाल में गन्धर्वनगर दिखलाई पड़े तो भूकम्प का भय होता है। यदि रविवार को मध्याह्न में गन्धर्वनगर दिखलाई पड़े तो जनता में अराजकता फैलती है। यदि रविवार को प्रातःकाल में गन्धर्वनगर दिखलाई पड़े तो साधारणतः सामान्य वातावरण होता है। सन्ध्याकाल में दिखाई देने वाला गन्धर्वनगर अधिक बुरा समझा जाता है। रात में दिखाई देने वाला गन्धर्वनगर अल्पफल को प्रदान करता है।

चैत्र मास में मंगलवार को सन्ध्याकाल में यदि गन्धर्वनगर

दिखाई देता है तो नगर में अग्नि का प्रकोप, पशुओं में रोग, नागरिकों में कलह और अर्थ की हानि होती है। चैत्र मास में बुधवार को मध्याह्नकाल में यदि गन्धर्वनगर दिखाई देता है तो अर्थ का विनाश, असन्तोष की उत्पत्ति, रसादि पदार्थों का अभाव और पशुओं के लिए चारे की कमी को प्रकट करता है। चैत्र मास में गुरुवार को रात्रि में यदि गन्धर्वनगर दिखाई देता है तो जनता को अत्यन्त कष्ट, व्यसनों का प्रचार और अर्थ की क्षति होती है। चैत्र मास में शुक्रवार को यदि गन्धर्वनगर दिखाई देता है तो चातुर्मास की अच्छी वर्षा, उत्तम फसल, अनाज का भाव सस्ता, गोरस की अधिकता और व्यापारियों को लाभ होता है। चैत्र मास में शनिवार को मध्यरात्रि अथवा मध्यदिन में यदि गन्धर्वनगर दिखाई देता है तो जनता में घोर संघर्ष एवं अशान्ति होती है। इससे सर्वत्र अराजकता फैलती है।

वैशाख माह में मंगलवार को प्रातःकाल या अपराह्न काल में गन्धर्वनगर दिखलाई पड़े तो चातुर्मास में अच्छी वर्षा और सुभिक्ष का विस्तार होता है। वैशाख माह में बुधवार को गन्धर्वनगर दिखलाई पड़े तो व्यापारियों में मतभेद, आपस में विवाद और आर्थिक क्षति होती है। वैशाख माह में गुरुवार को गन्धर्वनगर दिखलाई पड़े तो अनेक प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं। वैशाख माह में शुक्रवार को गन्धर्वनगर दिखलाई पड़े तो समय पर वर्षा, धान्य की अधिक उत्पत्ति और वस्त्र के व्यापार में लाभ होगा। वैशाख माह में शनिवार को गन्धर्वनगर दिखलाई पड़े तो सामान्यतया फसल अच्छी होती है।

जेष्ठ माह में मंगलवार को गन्धर्वनगर दिखलाई पड़ने पर उस वर्ष आषाढ़ में अच्छी वर्षा होती है। श्रावण और भाद्रपद में वर्षा की कमी रहेगी। अश्विन मास में अच्छी वर्षा होगी। इसके अतिरिक्त फसल अच्छी होती है। लोहा, सोना और वस्त्र के व्यापार में हानि होती है। कागज का मूल्य बढ़ता है। जेष्ठ माह में बुधवार को गन्धर्वनगर दिखलाई पड़ने पर अशान्ति, कष्ट, भूकम्प, वज्रपात, रोग और धनहानि जैसी आपदाओं का सामना करना पड़ता है। जेष्ठ माह में गुरुवार को गन्धर्वनगर दिखलाई पड़ने पर जनता को लाभ, शान्ति का विकास, पारस्परिक प्रेम और सुभिक्ष का विस्तार होता है। जेष्ठ माह में शुक्रवार को गन्धर्वनगर दिखलाई पड़ने पर कलाकारों को कष्ट, नेता की मृत्यु, प्रशासक वर्ग को

हानि, धनी-मानियों को विपत्ति और साधारण जनता में विशेष लाभ की स्थिति रहती है। जेष्ठ माह में शनिवार को गन्धर्वनगर दिखलाई पड़ने पर वर्षा का अभाव, जनता को कष्ट, अग्निभय की प्राप्ति, विषैले जन्तुओं का आतंक और तूफानों का वर्चस्व बना रहता है।

आषाढ माह में मंगलवार को गन्धर्वनगर के दर्शन होने पर अन्न सस्ता होता है, सोना और चाँदी के भाव में गिरावट आती है, देश का आर्थिक विकास होता है, सामाजिक सौहार्द्रता बढ़ती है और वर्षा अच्छी होती है। केवल लोहे के व्यापारियों को आर्थिक हानि सहन करनी पड़ती है। आषाढ माह में बुधवार को गन्धर्वनगर के दर्शन होने पर अच्छी वर्षा होती है, जनता को साधारण कष्ट होता है, व्यापार में साधारण लाभ मिलता है और वज्रपात का भय अधिक रहता है। आषाढ माह में गुरुवार को गन्धर्वनगर के दर्शन होने पर सभी प्रकार की सुख-शान्ति प्राप्त होती है। आषाढ माह में शुक्रवार को गन्धर्वनगर के दर्शन होने पर वर्षा साधारण होती है। वस्त्र और कल-पुर्जों के व्यापार में अधिक लाभ होता है। प्रतिदिन प्रयोग में आने वाली वस्तुयें महँगी हो जाती है। आषाढ माह में शनिवार को गन्धर्वनगर के दर्शन होने पर वर्षा साधारण होगी और व्यापारियों को कष्ट होगा।

श्रावण के महिने में गन्धर्वनगर यदि मंगलवार के दिन दिखलाई पड़े तो उस माह में वर्षा की कमी होगी। फसल साधारण होगी और आपस में कलह की वृद्धि होगी। श्रावण के महिने में गन्धर्वनगर यदि बुधवार के दिन दिखलाई पड़े तो अल्पवर्षा होगी। वस्त्र, सोना और चाँदी का भाव कम हो जायेगा परन्तु सभी प्रकार के अन्न के भावों में वृद्धि होगी। श्रावण के महिने में गन्धर्वनगर यदि गुरुवार के दिन दिखलाई पड़े तो वर्षा अच्छी होगी और जनसामान्य के आनन्द में वृद्धि होगी। श्रावण के महिने में गन्धर्वनगर यदि शुक्रवार के दिन दिखलाई पड़े तो व्यापार में हानि और जनता को कष्ट होगा। श्रावण के महिने में गन्धर्वनगर यदि शनिवार के दिन दिखलाई पड़े तो घोर दुर्भिक्ष होगा ऐसा जानना चाहिये।

भाद्रपद माह में गन्धर्वनगर मंगलवार के दिन दिखाई देने पर अल्पवर्षा के कारण जनता को कष्ट और आर्थिक हानि का सामना

करना पड़ता है। भाद्रपद माह में गन्धर्वनगर बुधवार के दिन दिखाई देने पर सुभिक्षता का विस्तार होता है, व्यापार में लाभ बहुत होता है परन्तु पशुओं में रोग फैलने की सम्भावना बढ़ जाती है। भाद्रपद माह में गन्धर्वनगर गुरुवार के दिन दिखाई देने पर अतिवृष्टि, राजा की मृत्यु और नागरिकों में अशान्ति होती है। भाद्रपद माह में गन्धर्वनगर शुक्रवार के दिन दिखाई देने पर जनता को विपदा, व्यापार में हानि और अनेक प्रकार के उपद्रव होते हैं। भाद्रपद माह में गन्धर्वनगर शनिवार के दिन दिखाई देने पर वर्षा कम होने के कारण धान्य महँगा हो जायेगा।

आश्विन माह में मंगलवार को गन्धर्वनगर दृष्टिगोचर होने पर शीत का प्रकोप बढ़ेगा, देश का विकास और खनिज पदार्थों में बहुलता होती है। आश्विन माह में बुधवार को गन्धर्वनगर दृष्टिगोचर होने पर अच्छी वर्षा होगी परन्तु धान्य महँगा होगा। आश्विन माह में गुरुवार को गन्धर्वनगर दृष्टिगोचर होने पर उससे आठवें दिन घोर वर्षा होगी। व्यापारी वर्ग के लिए उसदिन गन्धर्वनगर देखना शुभ माना गया है। आश्विन माह में शुक्रवार को गन्धर्वनगर दृष्टिगोचर होने पर धन और जन की वृद्धि होकर नागरिकों में आनन्द विकसित होता है। आश्विन माह में शनिवार को गन्धर्वनगर दृष्टिगोचर होने पर जनता को साधारण कष्ट होता है। वर्षा अच्छी होती है।

कार्तिक मास में मंगलवार को गन्धर्वनगर दिखलाई पड़े तो अग्नि का प्रकोप, व्यापार में हानि और देश में अशान्ति होती है। कार्तिक मास में बुधवार को गन्धर्वनगर दिखलाई पड़े तो शीत के प्रकोप से मनुष्य और प्राणियों को अपार कष्ट होता है। कार्तिक मास में गुरुवार को गन्धर्वनगर दिखलाई पड़े तो जनता को अपार कष्ट होता है। कुछ ज्योतिर्विदों के मतानुसार ऐसा गन्धर्वनगर देखना औद्योगिक विकास के लिए उत्तम है। कार्तिक मास में शुक्रवार को गन्धर्वनगर दिखलाई पड़े तो जनता में सहयोगभावना की वृद्धि होती है। कार्तिक मास में शनिवार को गन्धर्वनगर दिखलाई पड़े तो हिंस्रपशुओं के व्दारा मनुष्यों को कष्ट होगा। ऐसे गन्धर्वनगर का दिखना व्यापार के लिए भी शुभ नहीं है।

मार्गशीर्ष के महिने में मंगलवार को गन्धर्वनगर देखने से अच्छी वर्षा के कारण फसल उत्तम होती है। मार्गशीर्ष के महिने में बुधवार को

गन्धर्वनगर देखने से जनता को कष्ट होता है। मार्गशीर्ष के महिने में गुरुवार को गन्धर्वनगर देखने से देश का सर्वांगीण विकास होता है। मार्गशीर्ष के महिने में शुक्रवार को गन्धर्वनगर देखने से सुख और आरोग्य का वर्द्धन होता है। मार्गशीर्ष के महिने में शनिवार को गन्धर्वनगर देखने से सुख और आरोग्य की हानि होती है। यदि उसदिन सायंकाल में पश्चिम दिशा में गन्धर्वनगर दिखें तो मारकाट और लूटपाट की स्थिति बनने की पूर्ण सम्भावना होती है।

पौष मास में मंगलवार के दिन दिखाई देने वाला गन्धर्वनगर जनता को कष्ट पहुँचाता है। पौष मास में बुधवार के दिन दिखाई देने वाला गन्धर्वनगर धान्य के भाव में सस्तापन और सोने-चाँदी के भाव में वृद्धि का संकेत देता है। पौष मास में गुरुवार के दिन दिखाई देने वाला गन्धर्वनगर जनता के सौख्य का वर्द्धन करता है। पौष मास में शुक्रवार के दिन दिखाई देने वाला गन्धर्वनगर घनघोर वर्षा और आर्थिक कष्ट को सूचित करता है। पौष मास में शनिवार के दिन दिखाई देने वाला गन्धर्वनगर राजा और प्रजा के लिए अपार हानिकारक है।

माघ मास में गन्धर्वनगर यदि मंगलवार को दिखाई देवें तो चैत्रीय फसल अति उत्तम होगी, लौहव्यापार में लाभ होगा , रबर या गोंद के व्यापार में हानि होगी, राजनीतिक उपद्रव होंगे और देश में अशान्ति फैलेगी। माघ मास में गन्धर्वनगर यदि बुधवार को दिखाई देवें तो उत्तम वर्षा, आर्थिक विकास और शान्ति की वृद्धि को प्रकट करता है। माघ मास में गन्धर्वनगर यदि गुरुवार को दिखाई देवें तो सुभिक्षता और प्रसन्नता का कारण समझना चाहिये। माघ मास में गन्धर्वनगर यदि शुक्रवार को दिखाई देवें तो शान्ति, लाभ और आनन्द के विकास का सूचक है। माघ मास में गन्धर्वनगर यदि शनिवार को दिखाई देवें तो अपार कष्ट होगा। लेकिन उस दिन प्रातःकाल गन्धर्वनगर का दिखना शुभ है।

फाल्गुन मास में मंगलवार के दिन गन्धर्वनगर का दिखाई देना गेहूँ, धान, ज्वार, जौ, गन्ना आदि के भावों के बढ़ने का संकेतकारी माना गया है। ऐसा गन्धर्वनगर व्यापारियों , राजनेताओं एवं कलाकारों की दृष्टि से उत्तम माना गया है। फाल्गुन मास में बुधवार के दिन

गन्धर्वनगर का दिखाई देना फसल की कमी, राजा या शासकीय अधिकारी का विनाश, पंचायत में मतभेद और सोने-चाँदी के व्यापार में लाभ का संकेत है। फाल्गुन मास में गुरुवार के दिन गन्धर्वनगर का दिखाई देना पीले वस्तुओं के भाव का गिरने का संकेत करता है। इससे यह भी जाना जाता है कि लाल रंग की वस्तुओं के भाव बढ़ेंगे। फाल्गुन मास में शुक्रवार के दिन गन्धर्वनगर का दिखाई देना वर्षा के समय पर पड़ने की सम्भावना को अभिव्यक्त करता है। ऐसे गन्धर्वनगर से पत्थर और चूने के व्यापार में विशेष लाभ होता है परन्तु जूट आदि के व्यापार में घाटा होता है। फाल्गुन मास में शनिवार के दिन गन्धर्वनगर का दिखाई देना शुभ वर्षा और अच्छी फसल का संकेत करता है।

गन्धर्वनगर के विषय में इतना विशेष जानना चाहिये कि उसका फलादेश अवगत करते समय उसकी आकृति, रंग, सौम्यता अथवा कुरूपता पर भी ध्यान देना पड़ता है।

जो गन्धर्वनगर जितना अधिक स्वच्छ होगा उसका फल उतना ही अच्छा और पूर्ण होगा। कुरूप और अस्पष्ट दिखने वाले गन्धर्वनगर का फल अतिशय अल्प होता है। पूर्वाह्नादि काल के कारण से फल में भी अन्तर होता है।

ग्रन्थकर्त्ता ने दिशा, ऋतु और रंग के आधार से गन्धर्वनगर के फल का वर्णन विस्तार से किया ही है।

वराहमिहिर ने उत्तर, पूर्व, दक्षिण और पश्चिम दिशा के गन्धर्व-नगर का फल क्रमशः पुरोहित, राजा, सेनापति और युवराज को विघ्नकारक माना है। श्वेत, रक्त, पीत और कृष्णवर्ण के गन्धर्वनगर को क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्रों के नाश का कारण माना है।

यदि सभी दिशाओं में गन्धर्वनगर दिखाई देवें तो राजा और राज्य इन दोनों के लिए अत्यन्त भयप्रद है। यदि गन्धर्वनगर धूम, अग्नि या इन्द्रधनुष के समान हो तो चोर और वनवासियों के लिए महान कष्टकारक है।

पाण्डुरंग का गन्धर्वनगर वज्रपात का सूचक है। अनेक वर्णों की पताका से युक्त गन्धर्वनगर मुख्यरूप से महाभयंकर युद्ध होने की सूचना देता है।

# उत्पलपतन प्रकरण

**उप्पलयाणय पडणं उप्पाय णिमित्तकारणं छाणं।**

**जइ उपलया पडंता बहुविहरूवेहि सव्वत्थ॥१४८॥**

**अर्थ :-**

पत्थरों का पड़ना कई तरह से होता है और पत्थर भी अनेक तरह के होते हैं। इसलिए उनका निमित्त बताता हूँ।

**माला सरिच्छसरिसं खज्जूरीफलसमाणरूवाव।**

**जय णिवडंतियकरया तत्थ सुभिक्खंति णायव्वं॥१४९॥**

**अर्थ :-**

जहाँ पर चावल, सरसों अथवा खजूर के फल के समान पत्थर गिरें, वहाँ पर सुभिक्ष होगा।

**वाधीफलसरिसावा मंजूसावारसरिस रूवाव।**

**जय णिवडंतिय करया तत्थ सुभिक्खंति णायव्वं॥१५०॥**

**अर्थ :-**

बेर, मूंग और अरहर के समान पत्थरों का पड़ना सुभिक्ष को करने वाला है ऐसा जानना चाहिये।

**संबुक्क सुत्तिसरिसा घोरं वरिसंकरं णिवेइत्ति।**

**जइ णिवडंति रसाणां वभूद वरिसागमा भणिया॥१५१॥**

**अर्थ :-**

शंख और शुक्ति के समान शुभ्र व छोटे अथवा मसूर के समान पत्थर गिरें तो वे पानी बरसने की सूचना देते हैं।

**मंडुक्ककुंभसरिसा गजदंतसमाण रूवसे कासा।**
**जइ दीसंत पडंता देसविणासं तु णायव्वं॥१५२॥**

**अर्थ :-**

मेंढक, घडे या हाथी के दाँत के समान पत्थर बरसने पर देश का अवश्य नाश होगा।

**करिकुंभछत्तसरिसा थाली वज्जोयमा जइ पडंति।**
**कुव्वंति देसणासं रायाणं सव्वा विणासंति॥१५३॥**

**अर्थ :-**

घड़ा, हाथी, छत्र, थाली और वज्र के आकार को धारण करने वाले पत्थर गिरने पर देश का नाश होता है व राजा की मृत्यु होती है।

## प्रकरण का विशेषार्थ

आकाश से अकस्मात् पत्थरों की वर्षा होती है। उनके कारण से प्राप्त होने वाले शुभ और अशुभ फलों का वर्णन इस उपलपतन नामक प्रकरण में किया गया है।

जिस क्षेत्र में चावल के समान आकार वाले पत्थर बरसते हैं, उस देश में सुभिक्ष फैलेगा।

यही फल सरसों के समान, खजूर के समान, बेर के समान, मूंग के समान और अरहर के समान पत्थरों के पड़ने पर होता है।

जिस क्षेत्र में शंख और शुक्ति के समान आकार वाले अथवा मसूर के समान पत्थर बरसते हैं, उस देश में निकट भविष्य में अच्छी वर्षा होने वाली है ऐसा जानना चाहिये।

जिस क्षेत्र में मेंढक, घड़े और हाथियों के दाँतों के समान आकार वाले पत्थर बरसते हैं, उस देश का नाश अवश्य ही होगा।

जिस क्षेत्र में हाथी, छत्र, थाली और वज्र के समान आकार वाले पत्थर बरसते हैं, उस देश का नाश तो अवश्य होगा, साथ में राजा की मृत्यु भी हो जायेगी।

# विद्युल्लता प्रकरण

**इंदम्मि दिसाभाए जइ विज्जु संपया सए जत्थ।**
**चाउम्मासिय वरिसं तत्थय होहिंति णायव्वं॥१५४॥**

**अर्थ :-**

यदि उत्तरदिशा की ओर बिजली चमके तो हवा चलकर पानी पड़ेगा।

**अग्गीये जइ दीसइ वाही मरणं च तत्थको वेदि।**
**तयमासियं च वरिसं मासं तु ण वरसए देवो॥१५५॥**

**अर्थ :-**

अग्नेयकोण में बिजली चमके तो व्याधि व मृत्यु की सूचक है तथा तीन माह तक पानी बरसेगा ऐसा वह बताती है।

**विसए गामे णयरे तस्स विणासो हवइ णिद्दिट्ठो।**
**अहि दंसमसयमूसय उपत्ती णत्थि संदेहो॥१५६॥**

**अर्थ :-**

उससे शहर अथवा गाँव का अवश्य नुकसान होगा और सर्वत्र डांस, मच्छर व चूहों की उत्पत्ति होगी। इसमें किसीप्रकार का सन्देह नहीं है।

**जम्मा दु पुणो दिट्ठो सुभिक्ख अरोगिया हवइ विज्जू।**
**सा कुणइ गब्भणासं बालविणासं च णियमेण॥१५७॥**

**अर्थ :-**

दक्षिणदिशा में बिजली चमकने पर सुभिक्ष और निरोगता की सूचना देती है, परन्तु गर्भ का नाश व बच्चों को दुःख भी होता है।

**चाउम्मासिय वरिसं काले काले य वारिसये देवो।**

**जइ णेरइइदिसाये विज्जलवंती य दीसिज्ज ॥१५८॥**

**अर्थ :-**

यदि नैऋत्यकोण में बिजली चमके तो हवा अधिक चलेगी तथा समय पर पानी बरसेगा।

**अह वायव्व दिसाए वायदिवादं विणासए वरिसं।**
**चोरा हुंति य बहुया दंसविणासं कुणइ राया ॥१५९॥**

**अर्थ :-**

यदि वायव्यकोण में बिजली चमकें तो हवा अधिक चलेगी परन्तु पानी कम पड़ेगा। चौर अधिक होंगे व राज्य व देश का नाश होगा।

**अह वारुणीय दिट्ठु बहुवरिसइ कुणइ खेम सुभिक्खं।**
**वायव्वे रोगभयं विप्पाण भयंकरो विज्जू ॥१६०॥**

**अर्थ :-**

वरुणदिशा में चमकती हुई बिजली कुशल और सुभिक्ष का कारण है। वायव्यदिशा की बिजली रोग का भय और ब्राह्मणों को भय का कारण है।

**बहु परिसइ जइ इंदो सस्साण य तस्स होइ णिप्पत्ती।**
**सोमाए जइ दीसइ सीयलवायुव्व विज्जू ॥१६१॥**

**अर्थ :-**

यदि बिजली पश्चिमदिशा में चमक रही हो तो वर्षा बहुत अच्छी होगी। उस नगर में अच्छा अनाज होगा और हवा ठण्डी चलेगी।

**अहवा रायविणासं चोराणभयं अह णिवेदेइ।**
**ईसाणीणु सुब्भिक्खं रोगो हाणी य वाहि णासयरी ॥१६२॥**

**अर्थ :-**

ईशानकोण की बिजली राजमृत्यु, चोरभय, सुभिक्ष व रोगहानि को बतलाती है।

## प्रकरण का विशेषार्थ

बिजली के चमकने को विद्युल्लता योग कहते हैं।

पूर्वदिशा में श्वेत या पीतवर्ण की बिजली कड़के तो वर्षा नियम से होगी। पूर्वदिशा में रक्तवर्णीय बिजली कड़कने पर वायु चलेगी पर मन्द वर्षा होगी। मन्द-मन्द चमकने के साथ जोर-जोर से बिजली कड़के और एकाएक आकाश से बादल हट जावें तो वर्षा के साथ ओले पड़ेंगे। पूर्वदिशा में केशरिया रंग की बिजली चमकने पर अगले दिन तेज धूप पड़ेगी व मध्याह्नोत्तर काल में अत्यधिक वर्षा होगी।

यदि पश्चिमदिशा में साधारणरूप से मध्यरात्रि में बिजली चमकती है तो तेज धूप पड़ेगी। स्निग्ध विद्युत् यदि पश्चिमदिशा में कड़ाके के शब्द के साथ चमकती है तो धूप होने के बाद जल की वर्षा होती है। यहाँ पर इतनी बात और समझ लेना चाहिये कि जल की वर्षा के साथ-साथ तूफान भी रहता है। अनेकों वृक्ष धराशायी हो जाते हैं, और पशु-पक्षियों को अनेक प्रकार के कष्ट भी होते हैं।

जिस समय आकाश बादलों से आच्छादित हो, चारों ओर अन्धकार छाया हुआ हो, उस समय नीले रंग का प्रकाश करती हुई बिजली चमके, साथ ही भयंकर शब्दों की आवाज भी हो तो अगले दिन तीव्र वायु बहने की सूचना समझनी चाहिये और वर्षा भी तीन दिनों के बाद होती है ऐसा इस निमित्त से समझना चाहिये। फसल के लिए इस प्रकार की बिजली विनाशकारी मानी गई है।

यदि पश्चिमदिशा की ओर से विचित्रवर्ण की बिजली निकलकर चारों ओर घूमती हुई चमकती हो तो अगले तीन दिनों में वर्षा होगी। इस प्रकार की बिजली फसल में भी वृद्धि करने वाली होती है। गेहूँ, जौ, धान और ईख की वृद्धि विशेषरूप से होती है। यदि पश्चिमदिशा में रक्तवर्ण की प्रभावयुक्त बिजली धीमे-धीमे शब्द के साथ उत्तरदिशा की ओर गमन करती हुई दिखाई पड़े तो अगले दिन तेज हवा चलती है और बहुत तेज धूप पड़ती है। इसप्रकार की बिजली दो दिनों में वर्षा होने की

सूचना देती है । जिस बिजली से रश्मियाँ निकलती हों, ऐसी बिजली पश्चिमदिशा में गड़गड़ाहट शब्द के साथ चमके तो निश्चित रूप से अगले तीन दिनों तक वर्षा का अवरोध होता है । आकाश में बादल तो छाये रहते हैं, परन्तु वर्षा नहीं होती ।

काले रंग के बादलों में पश्चिमदिशा से पीले रंग की विद्युत् धारा प्रवाहित हो और यह अपने तेज प्रकाश के द्वारा आँखों में चकाचौंध उत्पन्न कर दे तो वर्षा कम होगी ऐसा समझना चाहिये । हवा के साथ बूँदा-बाँदी ही होकर रह जाती है । धूप भी इतनी तेज पड़ती है कि इस बूँदा-बाँदी का भी कुछ प्रभाव नहीं होता । पश्चिमदिशा की ओर से बिजली निकलकर पूर्वदिशा की ओर जाये तो प्रातः में कुछ वर्षा होती है और इस वर्षा का जल फसल के लिए अत्यधिक लाभयुक्त सिद्ध होता है । अतः फसल के लिए इसप्रकार की बिजली उत्तम मानी गई है ।

उत्तरदिशा में बिजली चमके तो नियम से वर्षा होती है । उत्तर दिशा में कड़कड़ाहट के साथ बिजली चमके और आकाश में मेघ छाये हुए हो तो प्रातःकाल में बहुत तेज वर्षा होती है । जब गगन में नीले रंग के बादल छाये हो और उसमे पीले रंग की बिजली चमकती हो तो साधारण वर्षा के साथ हवा का भी प्रकोप समझना चाहिये ।

जब उत्तरदिशा में मन्द-मन्द शब्द करती हुई बिजली कड़कती है, उस समय हवा चलने की ही सूचना समझनी चाहिये । हरे और पीले रंग के बादल आकाश में हों तथा उत्तरदिशा में रह-रहकर बिजली चमकती हो तो वर्षा का योग विशेषरूप से समझना चाहिये । यह वृष्टि स्थान से सौ कोस की दूरी तक होती है तथा पृथ्वी जल से पूरित हो जाती है ।

लालरंग के बादल जब आकाश में हो, उस समय यदि दिन में बिजली का प्रकाश दिखाई पड़े तो वर्षा के अभाव की सूचना समझनी चाहिये । इसप्रकार की बिजली दुष्काल पड़ने की भी सूचना देती है । यदि इसी प्रकार की बिजली आषाढ माह के प्रारम्भ में दिखाई पड़े तो उस वर्ष में दुष्काल का योग समझ लेना चाहिये ।

वायव्यकोण में बिजली गड़गड़ शब्द के साथ चमके तो अल्प जल की वर्षा समझनी चाहिये । वर्षा के काल में ही उक्तप्रकार की बिजली का निमित्त घटित होता है ।

ईशानकोण में तिरछी चमकती हुई बिजली पूर्वदिशा की ओर गमन करे तो जल की वर्षा होती है। यदि इस कोण की बिजली गर्जना के साथ चमके तो उसे तूफान की सूचना समझनी चाहिये। आषाढ़ और श्रावण माह में उत्तम प्रकार की विद्युत् का यह फल घटित होता है।

दक्षिणदिशा में बिजली का प्रकाश उत्पन्न हो और सफेद रंग की चमक दिखाई पड़े तो सात दिनों तक लगातार जल की वर्षा हो सकती है। दक्षिणदिशा में यदि मात्र बिजली की ही चमक दिखाई पड़े तो धूप होने की सूचना समझनी चाहिये। जब लाल और काले रंग के बादल आकाश में छाए हुए हो और बार-बार तेजी से बिजली चमकती हो तो साधारणतया पूरे दिन धूप रहने के पश्चात् रात में वर्षा होती है। दक्षिणदिशा से पूर्व दिशा में गमन करती हुई बिजली चमके और उत्तर दिशा में इसका तेज प्रकाश भर जाये तो तीन दिनों तक सतत जल की वर्षा होती है। यहाँ इतना और विशेषरूप से समझ लेना चाहिये कि वर्षा के साथ-साथ ओले भी पड़ते हैं। यदि इसप्रकार की बिजली शरदऋतु में चमकती है तो नियम से ओले ही पड़ते हैं, जल की वर्षा नहीं होती। ग्रीष्म ऋतु में उक्त प्रकार की बिजली चमकती है तो वायु के साथ तेज धूप पड़ती है परन्तु वर्षा नहीं होती। गोल आकार के रूप में दक्षिणदिशा में बिजली चमके तो आगे आने वाले ग्यारह दिनों तक जल की अखंडित वर्षा होती है। इस प्रकार की बिजली अतिवृष्टि की सूचना देती है।

आषाढ़ वदी प्रतिपदा को दक्षिणदिशा में आवाजरहित बिजली चमकती है तो आगामी वर्ष में फसल निकृष्ट होती है। उत्तरदिशा में आवाजरहित बिजली चमकती है तो फसल साधारण होती है। पश्चिम दिशा में आवाजरहित बिजली चमकती है तो फसल मध्यम होती है और पूर्वदिशा में शब्दरहित बिजली चमकती है तो उस वर्ष में फसल बहुत अच्छी होती है।

यदि इन्हीं दिशाओं में शब्दसहित बिजली चमके तो क्रम से आधी, तिहाई, साधारणतः पूर्ण और सवाई फसल उत्पन्न होती है।

यदि आषाढ़ वदी द्वितीया चतुर्थी से विद्ध हो और उसमें दक्षिण दिशा से निकलती हुई बिजली उत्तरदिशा की ओर जाये तथा इसकी चमक बहुत तेज हो तो उसे घोर दुर्भिक्ष की सूचना समझनी चाहिये। इस

प्रकार की बिजली से वर्षा भी अवरुद्ध होती है। तेज चमचमाहट करती हुई चमकने वाली बिजली को वर्षा का अभाव और घोर उपद्रव की सूचना समझनी चाहिये।

ऋतुओं के अनुसार भी विद्युत् के चमकने से प्राप्त होने वाले फल में परिवर्तन होते रहते हैं। यथा –

**शिशिरऋतु :-** माघ और फाल्गुन मास में आने वाले ऋतु को शिशिर कहा जाता है। इस ऋतु में नीले या पीले वर्ण की बिजली चमके तथा आकाश सफेद वर्ण का दिखाई पड़े तो ओलों के साथ-साथ जलवर्षा होती है। यह वर्षा कृषि के लिए हानिकारक होती है।

माघ कृष्णा प्रतिपदा को बिजली चमकती है तो गुड़, चीनी, मिश्री आदि वस्तुयें महँगी होती हैं तथा कपड़ा, सूत, कपास, रुई आदि वस्तुयें सस्ती हो जाती हैं। शेष वस्तुओं का मूल्य सामान्य रहता है। इस दिन बिजली का गरजना बीमारियों की सूचना भी देता है।

माघ कृष्णा द्वितीया, षष्ठी और अष्टमी को यदि पूर्वदिशा में बिजली दिखाई पड़े तो आने वाले वर्ष में अधिक व्यक्तियों के अकाल मरण होने की सूचना समझनी चाहिये। यदि चन्द्रबिम्ब के चारों ओर परिवेष होने पर उस परिवेष के समीप ही बिजली चमकती हुई दिखाई पड़े तो आगामी आषाढ़ माह में अच्छी वर्षा होती है। माघ कृष्णा द्वितीया को गर्जना के साथ बिजली दिखाई पड़े तो आने वाले वर्ष में फसल साधारण तथा वर्षा की कमी होती है।

माघ माह की पूर्णिमा को मध्यरात्रि में उत्तर और दक्षिणदिशा में चमकती हुई बिजली दिखाई पड़े तो आने वाला वर्ष राष्ट्र के लिए उत्तम होता है। व्यापारियों को भी सभी वस्तुओं के व्यापार में लाभ होता है। यदि दूसरी रात्रि में चन्द्रोदय के समय ही अड़तालिस मिनट तक बिजली चमकती है तो आने वाले वर्ष में उस राष्ट्र में अनेक प्रकार की विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा।

फाल्गुन माह की कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया और तृतीया को मेघ आकाश में छाए हुए हो और उसमें पश्चिमदिशा की ओर बिजली चमकती हुई दिखाई पड़े तो आने वाले वर्ष में फसल अच्छी होती है और तत्काल ओलों के साथ-साथ जल वृष्टि होती है। यदि होली की रात्रि में

पूर्वदिशा में बिजली चमके तो आने वाले वर्ष में अकाल, वर्षा का अभाव, बीमारियों की वृद्धि एवं धन-धान्य की हानि होती है। दक्षिणदिशा में बिजली चमके तो आने वाले वर्ष में साधारण वर्षा, चेचक का विशेष प्रकोप, अन्न एवं खनिज पदार्थ सामान्यरूप से महँगे होते हैं। पश्चिम दिशा की ओर से बिजली चमके तो उपद्रव, झगड़े, लूट-पीट, चोरी, हत्यायें एवं आने वाले वर्ष में अनेक प्रकार की विपत्तियों का आगमन होगा। उत्तरदिशा में बिजली चमके तो अग्नि का भय, आपसी विरोध, नेताओं में मतभेद, आरम्भ में वस्तुयें सस्ती बाद में महँगी होगी एवं आकस्मिक दुर्घटनाओं में वृद्धि हो जायेगी। होली के दिन आकाश में बादलों का छाना और बिजली का चमकना अशुभ है।

**वसन्तऋतु :-** चैत्र और वैशाख माह में आने वाले ऋतु को वसन्तऋतु कहा जाता है। इस ऋतु में बिजली का चमकना प्रायः निरर्थक होता है।

चैत्र कृष्णा प्रतिपदा को आकाश में बादल व्याप्त हो और बूँदा-बाँदी के साथ-साथ बिजली चमके तो आने वाले वर्ष के लिए अत्यन्त अशुभ होता है। फसल तो नष्ट होती ही है मगर साथ ही मोती, माणिक्य आदि जवाहरात भी नष्ट होते हैं। यदि उस दिन दैवसिक काल में बादल छा जाये और वर्षा के साथ बिजली चमके तो अत्यन्त अशुभ होता है। आगामी वर्ष के लिए उक्त प्रकार का निमित्त विशेषरूप से अशुभ की सूचना देता है। चैत्र कृष्ण प्रतिपदा तृतीया से विद्ध हो तथा उस दिन भरणी नक्षत्र हो तो इस दिन चमकने वाली बिजली आने वाले वर्ष में मनुष्य और पशुओं के लिए नाना प्रकार के अरिष्टों की सूचना देती है। पशुओं में आगामी आश्विन, कार्तिक, माघ और चैत्र माह में भयानक रोग फैलता है तथा मनुष्यों को भी इन्हीं माहों में बीमारियाँ होती हैं। इस बिजली को भूकम्प की सूचना भी समझनी चाहिये।

चैत्र माह की पूर्णिमा को अचानक आकाश में बादल छा जायें और पूर्व और पश्चिमदिशा में बिजली गरजे तो आने वाला वर्ष उत्तम रहता है और वर्षा भी अच्छी होती है। फसल के लिए यह निमित्त बहुत अच्छा है। इसप्रकार के निमित्त से सभी वस्तुओं का मूल्य घट जाता है।

वैशाख माह की पूर्णिमा को दिन में तेज धूप हो और रात्रि में बिजली चमके तो आने वाले वर्ष में वर्षा अच्छी होती है।

**ग्रीष्मऋतु** :- ज्येष्ठ और आषाढ़ माह में आने वाले ऋतु को ग्रीष्मऋतु कहा जाता है। इस ऋतु में साधारणतः बिजली चमके तो वर्षा नहीं होती है। ज्येष्ठ माह में बिजली चमकने का फल मात्र तीन दिन घटित होता है, शेष दिनों में कुछ भी फल नहीं मिलता। ज्येष्ठ कृष्णा प्रतिपदा, ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या और पूर्णिमा इन तीन दिनों में बिजली चमकने पर विशेष फल की प्राप्ति होती है।

यदि प्रतिपदा को मध्यरात्रि के बाद निरभ्र आकाश में दक्षिण और उत्तरदिशा की ओर गमन करती हुई बिजली दिखाई पड़े तो आने वाले वर्ष के लिए अनिष्टकारक फल होता है। पूर्व और पश्चिमदिशा संध्याकाल के दो घंटे बाद तड़-तड़ करती हुई बिजली इसी दिन दिखाई पडे तो घोर दुर्भिक्ष और शब्दरहित बिजली दिखाई पडे तो समयानुसार वर्षा होती है। अमावस्या के दिन बूँदा-बाँदी के साथ बिजली चमके तो जंगली जानवरों को कष्ट, धातुओं की उत्पत्ति में कमी एवं नागरिकों में परस्पर कलह होता है।

ज्येष्ठ माह की पूर्णिमा को आकाश में बिजली तड़-तड़ शब्द के साथ चमके तो वह आने वाले वर्ष के लिए शुभ होती है। उस वर्ष समय के अनुसार वर्षा होगी। उस समय में धन-धान्य की उत्पत्ति अधिक परिमाण में होती है।

**वर्षाऋतु** :- श्रावण और भाद्रपद में आने वाले ऋतु को वर्षाऋतु कहते हैं। इस ऋतु में ताम्रवर्ण की बिजली चमकती है तो वर्षा का अवरोध अवश्य होता है।

श्रावण माह में कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया, सप्तमी, एकादशी, चतुर्दशी और अमावस्या आदि तिथियों में तथा श्रावण माह में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा, पंचमी, अष्टमी, द्वादशी और पूर्णिमा इन तिथियों में विद्युत् के निमित्त को अवगत कर लेना विशेषरूप से महत्वपूर्ण माना गया है। शेष रही तिथियों में लाल और सफेद रंग की बिजली चमकने से वर्षा का संकेत प्राप्त होता है और अन्य रंग की बिजली चमकने से वर्षा के अभाव का सूचन होता है।

श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को रात में लगातार दो घण्टे तक बिजली चमकती रहे तो श्रावण माह में वर्षा की कमी होती है। द्वितीया को रह-

रहकर बिजली चमके तथा गर्जन भी होता हो तो भाद्रपद में कम वर्षा होती है और श्रावण माह में साधारण वर्षा होती है।

श्रावण कृष्णा सप्तमी को पीले रंग की बिजली चमके तथा आकाश में नाना रंग के बादल एकत्रित हो तो सामान्यरूप से वर्षा होती है। एकादशी को निरभ्र गगन में बिजली चमके तो फसल में कमी और अनेक प्रकार से अशान्ति की सूचना समझनी चाहिये।

चतुर्दशी के दिन यदि दिन में बिजली चमके तो उत्तम वर्षा होती है और रात में चमके तो साधारण वर्षा होती है। अमावस्या के दिन यदि हरित, नील और ताम्रवर्ण की बिजली चमकती रहे तो वर्षा का अवरोध होता है।

भाद्रपद माह में कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को निरभ्र गगन में बिजली चमके तो अकाल की सूचना और बादलों से आच्छादित गगन में बिजली चमकती हुई दिखाई पड़े तो सुभिक्ष की सूचना समझनी चाहिये। कृष्णपक्ष की सप्तमी और एकादशी को गर्जना के साथ-साथ स्निग्ध और रश्मि से युक्त बिजली चमके तो परम सुभिक्ष का विस्तार होगा। समयानुसार वर्षा होगी और सभी प्रकार के वर्णों में सन्तोष होगा एवं सभी वस्तुयें सस्ती होती हैं। पूर्णिमा और अमावस्या को बूँदा-बूँदी के साथ-साथ बिजली आवाज करती हुई चमके तो वर्षा अच्छी होती है तथा फसल भी अच्छी होती है।

**शरदऋतु :-** आश्विन और कार्तिक माह में आने वाले ऋतु को में बिजली का चमकना निरर्थक होता है। केवल दशहरे के दिन बिजली चमके तो आने वाले वर्ष के लिए अशुभ सूचना समझनी चाहिये।

कार्तिक माह में भी बिजली चमकने का फल अमावस्या और पूर्णिमा के अतिरिक्त अन्य तिथियों में नहीं होता है। अमावस्या को बिजली चमकने से खाद्यपदार्थ महँगे और पूर्णिमा को बिजली चमकने से रासायनिक पदार्थ महँगे होते हैं।

**हेमन्तऋतु :-** मार्गशीर्ष और पौष माह में आने वाले ऋतु को हेमन्त ऋतु कहा जाता है। इस ऋतु में काली और ताम्रवर्ण की बिजली चमकने से वर्षा का अभाव तथा लाल, हरी, पीली और रंग-बिरंगे वर्ण की बिजली चमकने से वर्षा होती है।

# मेघयोग प्रकरण

**अह मग्गासिर देवे वरसइ जत्थेय देस णयरम्मि।**
**सो मुयइ जिट्ठमासे सलिलं णियमेण तत्थेय ॥१६३॥**

**अर्थ :-**

यदि मार्गशीर्ष माह में पानी बरसे तो जेठ माह में पानी का अवश्य नाश होगा।

**अह पोसमास वरिसइ विज्जलउणहयलम्मि जइ देवो।**
**छट्ठे मासे वरिसइ बहुयं चव पुचए तत्थ ॥१६४॥**

**अर्थ :-**

यदि पौष मास में बिजली चमकते हुए पानी बरसे तो आषाढ माह में अच्छी बरसात होगी।

**अह माह फग्गुणेसुय दीतीणब्भियाउ अब्भाउ।**
**छट्ठेउ णवउ मासे वरिसइ दे मुत्ति णायव्वो ॥१६५॥**

**अर्थ :-**

माघ और फाल्गुन मास के शुक्लपक्ष में यदि लगातार तीन दिन वर्षा हो तो छठे माह या नौवें माह में पानी अवश्य बरसेगा।

**अब्भाणे मेहपत्ती काले काले जहा पयासिज्ज।**
**तो होहदि वाहिभयं वासररत्तेण संदेहो ॥१६६॥**

**अर्थ :-**

यदि आकाश में बादल छाये रहे और प्रति समय बरसते रहे तो वहाँ पर रात-दिन व्याधि रहेगी। इसमें किसीप्रकार का सन्देह नहीं है।

**अह कित्तियाहि वरसइ सस्साण विणासणो हवइ देवो।**

**रोहिणिसु सुपत्ती देसस्सवि णत्थि संदेहो ॥१६७॥**

**अर्थ :-**

कृतिकानक्षत्र में यदि वर्षा होवे तो अनाज की हानि होती है। यदि रोहिणीनक्षत्र में वर्षा होती है तो देश की हानि होती है।

**जइ मयसिरम्मि वरसइ तत्थ सुभिक्खं ति होइ णायव्वो।**
**अद्दाए चित्तलवो पुणव्वसे मास वरिसंति ॥१६८॥**

**अर्थ :-**

मृगशिर नक्षत्र में पानी बरसने पर अवश्य सुभिक्ष होगा। यदि आर्द्रा नक्षत्र में वर्षा होवे तो खण्डवृष्टि होगी। यदि पुनर्वसु नक्षत्र में पानी गिरे तो एक माह तक वर्षा होगी।

**पुस्से वाउम्मासं सस्साण य उच्छहोइ संपत्ति।**
**असलेसे बहुउदयं सस्साण विणासणं होई ॥१६९॥**

**अर्थ :-**

यदि पुष्य नक्षत्र में पानी बरसे तो श्रेष्ठ वर्षा होगी और अनाज अच्छा होगा। यदि आश्लेषा नक्षत्र में पानी बरसे तो अनाज की हानि होगी।

**मह फग्गुणी हि वरसइ खेम सुभिक्खं हवेइ णायव्वं।**
**उत्तरफग्गुणि हत्थे खेम सुभिक्खं वियाणाहि ॥१७०॥**

**अर्थ :-**

यदि मघा व पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में पानी बरसे तो कुशल और सुभिक्ष होता है। यदि उत्तराफाल्गुनी और हस्त नक्षत्र में पानी बरसे तो भी यही फल जानना चाहिये।

**चित्ता हि मंदवरिसं साइहिमिह वइवादि परिखेऊ।**
**बहु वरिसं च विसाहा अणुहाहेणावि बहु वरिसं ॥१७१॥**

**अर्थ :-**

चित्रा नक्षत्र में पानी बरसने पर वर्षा मन्द होगी। यदि स्वाती नक्षत्र में पानी पडे तो वर्षा अल्प होगी। विशाखा या अनुराधा नक्षत्र में वर्षा होने पर उस वर्ष पानी खूब बरसेगा।

**जिट्ठिसु अण्णादिट्ठी मूलेणुदयं णिरंतरं देइ।**
**तइ होइ वाइ वरिसं उत्तरपुव्वे ण संदेहो॥१७२॥**

**अर्थ :-**

यदि जेष्ठा नक्षत्र में पानी बरसे तो पानी की कमी होगी। मूल नक्षत्र में वर्षा होने पर पानी अच्छा गिरेगा। पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा नक्षत्र में पानी बरसे तो पानी अच्छा बरसेगा व हवा भी चलेगी। इसमें किसीप्रकार का सन्देह नहीं है।

**सवणे कत्तियमासे वरिसं णासेइ णत्थि संदेहो।**
**उदये हवइ धणाए वरिसइ देऊ ण संदेहो॥१७३॥**

**अर्थ :-**

श्रवण नक्षत्र में यदि वर्षा हो तो कार्तिक माह में पानी का नाश होगा और यदि धनिष्ठा नक्षत्र में पानी बरसे तो वर्षा खूब होगी।

**सयभिसु भद्दव आऊ पुव्वुत्तरया वि बहु जलदीति।**
**रेवई अस्सिणि भरणी वासारत्ते सुहिं दित्ति॥१७४॥**

**अर्थ :-**

शतभिषा, पूर्वभाद्रपदा और उत्तर भाद्रपदा इन तीन नक्षत्रों में वर्षा होने पर बहुत वर्षा होगी। रेवती, अश्विनी अथवा भरणी इन तीन नक्षत्रों में वर्षा होना सुखदायक है।

**एए रिक्खव योगा वासासरस्स गब्भकालम्मि।**
**णिच्चं व चिंतयंतो णाणविदगसो हणो होदी॥१७५॥**

**अर्थ :-**

जो नक्षत्रों के योग कहे गये हैं, उन्हें गर्भकाल कहा गया है। जो ज्ञानीजन इनके अनुसार कार्य करते हैं उनको निश्चित ही फल मिलता है।

## प्रकरण का विशेषार्थ

सत्ताईस नक्षत्र हैं। ग्रन्थकर्त्ता ने किस नक्षत्र पर वर्ष की प्रथम वर्षा होने पर क्या फल होता है? इसका वर्णन किया ही है। अन्य संहिता ग्रन्थों में प्रथम वर्षानक्षत्र के फल निम्नांकित हैं -

**१= अश्विनी :-** अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में वर्षा का आरम्भ होने से चातुर्मास में अच्छी वर्षा होती है और फसल भी अच्छी होती है। विशेषतः चैत्रीय फसल अच्छी होती है। मनुष्य और पशुओं को सुख-शान्ति प्राप्त होती है। यद्यपि इस वर्ष वायु और अग्नि का अधिक प्रकोप होता है, फिर भी किसी प्रकार की बड़ी क्षति नहीं होती है। ग्रीष्म ऋतु में लू अधिक चलती है तथा गर्मी में भीषणता होती है। देश के नेताओं में मतभेद और उपद्रव होते हैं। व्यापारियों के लिए यह वर्षा लाभदायक होती है।

अश्विनी नक्षत्र का प्रथम चरण लगते ही वर्षा का आरम्भ हो और समस्त नक्षत्र के अन्त तक वर्षा होती रहे तो वह वर्ष उत्तम नहीं रहता है। चातुर्मास के उपरान्त जल नहीं बरसता, फसल भी अच्छी नहीं होती।

अश्विनी नक्षत्र के अन्तिम चरण में वर्षा होने पर पौष में वर्षा का अभाव तथा फाल्गुन में वर्षा का बोध होता है। इस चरण में वर्षा का आरम्भ होना साधारण होता है। वस्तुओं के भाव नीचे रहते हैं। आश्विन मास से वस्तुओं के भावों में उन्नति होती है। व्यापारिओं में अशान्ति रहती है। प्रायः बाजारभाव अस्थिर रहता है।

अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में वर्षा का आरम्भ होने पर उत्तम वर्षा और अच्छी फसल होती है।

**२ = भरणी :-** भरणी नक्षत्र में वर्षा का आरम्भ होने पर वर्षा का अभाव रहता है अथवा अल्पवर्षा होती है। फसल के लिए उक्त वर्षा अच्छी

नहीं होती । उक्त नक्षत्र की वर्षा बीमारियों को फैलाती है ।

यदि भरणी नक्षत्र का क्षय हो और कृत्तिका नक्षत्र में वर्षा हो तो उत्तम है । भरणी प्रथम और तृतीय चरण की वर्षा उत्तम है । जनता में शान्ति रहती है और फसल भी अच्छी रहती है । भरणी नक्षत्र में व्दितीय और चतुर्थ चरण में वर्षा होने पर वर्षा का अभाव और फसल का अभाव रहता है । सभी वस्तुयें प्रायः महँगी हो जाती हैं, व्यापारियों के लिए उक्त वर्षा से साधारण लाभ होता है । इस वर्षा से अनेक प्रकार की व्याधियाँ फैलती है ।

**३ = कृत्तिका** :- कृत्तिका नक्षत्र में वर्ष की प्रथम वर्षा होने पर अनाज की हानि होती है । अतिवृष्टि या अनावृष्टि में से किसी एक का योग उस वर्ष हो सकता है ।

**४ = रोहिणी** :- इस नक्षत्र में वर्षा का आरम्भ होने पर असमय में वर्षा होती है । देश की हानि होती है । अनेक प्रकार की व्याधियाँ और अनाज की महँगाई फैलने का भय सतत बना रहता है । परस्पर में कलह और विसंवाद होता है ।

**५ = मृगशिर** :- मृगशिर नक्षत्र में प्रथम वर्षा होने पर सर्वत्र सुभिक्ष होता है । फसल की उत्पत्ति ठीक मात्रा में होती है ।

यदि सूर्यनक्षत्र मृगशिर हो तो खण्डवृष्टि का योग होता है, कृषि में अनेक प्रकार के रोग लगते हैं । यह वर्षा व्यापारियों के लिए शुभ नहीं है । राजा को भी यह वर्षा कष्टप्रद है ।

**६ = आर्द्रा** :- आर्द्रा नक्षत्र में वर्ष की प्रथम वर्षा होने पर खण्डवृष्टि का योग रहता है । फसल प्रमाण से आधी होती है । चीनी और गुड का भाव सस्ता हो जायेगा । श्वेतवर्ण की वस्तुयें महँगी हो जायेगी ।

**७ = पुनर्वसु** :- पुनर्वसु नक्षत्र में यदि वर्ष की प्रथम वर्षा होती है तो एक माहतक लगातार वर्षा होती है । अतिवृष्टि से फसल की हानि होती है । सर्वत्र अशान्ति और असन्तोष फैलता है । जनता धर्म की ओर उन्मुख होती है ।

**८ = पुष्य** :- पुष्य नक्षत्र में प्रथम जलवर्षा होने पर एक वर्षपर्यन्त समयानुकूल जल की वर्षा होती है । कृषि उत्तम होती है । खाद्यान्नों के अतिरिक्त फल और मेवों की उत्पत्ति अधिक मात्रा में होती है । समस्त

वस्तुओं के भाव गिरते हैं। जनता में शान्ति रहती है। प्रशासक वर्ग में समृध्दि बढ़ती है। जन साधारण में परस्पर विश्वास और सहयोग की भावना का विकास होता है।

**९ . आश्लेषा** :- आश्लेषा नक्षत्र में प्रथम वर्षा होने पर वर्षा उत्तम नहीं होती। जनता में असन्तोष और अशान्ति फैलती है। सर्वत्र अनाज की कमी सताती है। अग्निभय और शस्त्रभय से जनता आतंकित रहती है। अराजकता की वृध्दि होती है।

इस नक्षत्र में तेज वायु के साथ वर्षा होने पर उक्त प्रदेश में कष्ट होता है। धूल और कंकड़-पत्थरों के साथ वर्षा हो तो उस प्रदेश में अवश्य ही अकाल पड़ेगा। ऐसी वर्षा प्रशासकों के लिए कष्टकारक होती है।

**१० = मघा** :- यदि प्रथम वर्षा मघा नक्षत्र में होती है तो शेष वर्षा समयानुकूल होगी, उससे फसल भी अच्छी होगी। जनता में सर्वतोमुखेन अमनचैन व्याप्त होगा। उक्त नक्षत्र की वर्षा कलाकार और शिल्पकारों के लिए कष्टप्रद है, मनोरंजक साधनों में कमी आयेगी। राजनीतिक और सामाजिक दृष्टि से यह वर्षा सामान्य फलदायक है।

**११ = पूर्वाफाल्गुनी** :- इस नक्षत्र की वर्षा का फल मघानक्षत्र में होने वाली वर्षा के फल के समान जानना चाहिये।

**१२ = उत्तरा फाल्गुनी** :- यदि उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में प्रथम वर्षा होती है तो सुभिक्ष और आनन्द का विस्तार होता है। वर्षा का प्रमाण अच्छा होगा, फसल अच्छी होगी। खासकर धान की फसल बहुत अच्छी होगी। इस वर्षा का फल पशु-पक्षियों के लिए भी लाभप्रद है। उक्त नक्षत्र की वर्षा आर्थिक विकास में सहयोगिनी होती है। देश में कल कारखानों और व्यापार की वृध्दि होगी।

**१३ = हस्त** :- इस नक्षत्र की वर्षा का फल उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में होने वाली वर्षा के फल के समान जानना चाहिये।

**१४ = चित्रा** :- चित्रा नक्षत्र में प्रथम वर्षा होने से उस वर्ष वर्षा बहुत कम होती है, फिर भी भाद्रपद और आश्विन माह में वर्षा अच्छी होती है।

**१५ = स्वाती** :- स्वाती नक्षत्र में प्रथम वर्षा होने से उस वर्ष वर्षा बहुत कम होती है परन्तु यह वर्षा आश्विन माह में समाधानकारक जलवर्षा

का संकेत करती है।

**१६ = विशाखा :-** विशाखा नक्षत्र में प्रथम वर्षा होने पर उस वर्ष में बहुत जलवर्षा होती है। प्रथम वर्षा में ही तालाब और पोखरे भर जायेंगे। धान, गेहूँ, जूट और तिलहन आदि की फसल अपेक्षाकृत बहुत अच्छी होती है। व्यापार की दृष्टि से वह वर्ष अच्छा माना गया है।

**१७ = अनुराधा :-** अनुराधा नक्षत्र में प्रथम वर्षा होने से जलवृष्टि तो अत्यधिक होगी परन्तु इसके प्रभाव से गेहूँ पर रोग का आक्रमण होगा। गन्ने की फसल बहुत अच्छी होगी। यह वर्षा व्यपार की दृष्टि से शुभ संकेत है। देश के आर्थिक विकास तथा कला-कौशल की उन्नति में यह वर्षा सहयोगिनी मानी गयी है।

**१८ = जेष्ठा :-** इस नक्षत्र की प्रथम वर्षा उस वर्ष में अल्पवर्षा होने का संकेत करती है। इससे पशुओं को कष्ट होता है। तृण के अभाव से मवेशियों का मूल्य सस्ता हो जाता है। दूध की उत्पत्ति कम होगी। उक्त वर्षा से देश को आर्थिक हानि होगी। चेचक आदि संक्रामक रोगों की वृध्दि होगी। सेना में विरोध और जनता में उपद्रव होंगे। यह वर्षा भाद्रपद और आश्विन के माह में केवल सात दिनों की वर्षा को प्रकट करती है। इस वर्षा से फाल्गुन माह में घनघोर वर्षा की सूचना देते है, जिससे फसल की हानि होती है।

**१९ = मूल :-** मूल नक्षत्र में वर्ष की प्रथम वर्षा होने से उस वर्ष वर्षा अच्छी होती है, फसल बहुत अच्छी होती है। विशेषरूप से भाद्रपद और आश्विन माह में उचित समय पर उचित मात्रा में वर्षा होती है। व्यापारिक दृष्टि से यह वर्षा लाभदायक है। यह वर्षा खनिज पदार्थ और वनसम्पत्ति की वृध्दि में कारण होती है।

मूल नक्षत्र में यदि गर्जना के साथ वर्षा हो तो माघ में भी जलवर्षा होती है। यदि बिजली अधिक कड़के तो फसल में कमी आती है। शान्त और मन्दवायु के साथ वर्षा होने पर फसल अत्युत्तम होगी। चना अन्य अनाजों की अपेक्षा से महँगा रहेगा।

**२० = पूर्वाषाढ़ा :-** इस नक्षत्र में प्रथम वर्षा होने पर अधिकांश मूल नक्षत्र में वर्षा के होने से प्राप्त होने वाले फलों के समान ही फल प्राप्त होते हैं।

**२१ = उत्तराषाढ़ा :-** उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में प्रथम वर्षा होती है तथा हवा में भी तेजी हो तो चैत्रीय फसल बहुत अच्छी होगी। अगहनी धान भी अच्छा होगा परन्तु कार्तिकी अनाज में कमी आयेगी। नदियों में बाढ़ आने से जनजीवन अस्ताव्यस्त होगा। भाद्रपद और पौष माह में हवा चलती है, जिससे फसल को क्षति पहुँचती है।

**२२ = श्रवण :-** श्रवण नक्षत्र में वर्ष की प्रथम वर्षा होने पर कार्तिक माह में जलाभाव होगा परन्तु शेष माह में जलवर्षा अच्छी होगी। भाद्रपद माह में अपेक्षाकृत अच्छी वर्षा होगी और उससे धान, मकई, ज्वार और बाजरा की फसलें बहुत अच्छी होंगी। अश्विन माह के शुक्लपक्ष में भी अच्छी वर्षा होगी, जिससे गेहूँ पर कीड़ा लगकर उस फसल की हानि होती है। उक्त नक्षत्र की वर्षा आश्विन, कार्तिक और चैत्र के माह में रोग की सूचना देती है। स्त्रियों की दृष्टि से यह वर्षा लाभदायक है।

**२३ = धनिष्ठा :-** धनिष्ठा नक्षत्र की प्रथम वर्षा श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, माघ और वैशाख माह में घनघोर वर्षा की सूचना देती है। अतिवृष्टि के कारण किसी-किसी स्थान पर फसल की हानि होगी। आर्थिक दृष्टि से उक्त वर्षा लाभदायक होती है। देश के वैभव की भी वृद्धि होती है।

यदि यह वर्षा गर्जन और तर्जन के साथ होती है उक्त फल का चतुर्थांश ही प्राप्त होता है। व्यापार के लिए ऐसी वर्षा मध्यम फलदायक है। विदेशों से व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ता है।

धनिष्ठा नक्षत्र की प्रथम घटिका में वर्षा हो तो फलप्राप्ति पूर्णरुप से होती है परन्तु अन्तिम तीन घटिका में वर्षा होने पर फल साधारण ही होता है।

**२४ = शतभिषा :-** शतभिषा नक्षत्र में वर्ष की प्रथम वर्षा होने पर पानी बहुत बरसता है। अगहनी फसल मध्यम होती है परन्तु चैत्रीय फसल अच्छी होती है। यद्यपि व्यापार में हानि होती है, मगर जूट और चीनी के व्यापार में साधारण लाभ होता है।

**२५ = पूर्वाभाद्रपदा :-** यदि वर्ष की प्रथम वर्षा पूर्वभाद्रपदा नक्षत्र के प्रथम पाँच घटिकाओं में होती है तो वर्षा और फसल मध्यम होती है। माघ माह में वर्षा का अभाव हो जाने से चैत्रीय फसल में कमी होती है।

यद्यपि चातुर्मास में वर्षा अच्छी होती है फिर भी फसल में न्यूनता ही पायी जाती है।

पूर्वभाद्रपदा नक्षत्र के अन्तिम घटिकाओं में जलवर्षा होने पर अगहन में अच्छी वर्षा होती है, फसल भी अच्छी होती है।

यदि उक्त नक्षत्र के मध्यभाग में वर्षा होती है तो अवश्यकतानुसार जल बरसने से फसल अच्छी होती है। उक्त वर्षा व्यापारियों के लिए हानिकारक होती है।

यदि उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र से विध्द होकर पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र में वर्षा होना शासकों के लिए अशुभकारक है। इससे देश की समृध्दि में कमी आती है।

**२६ = उत्तराभाद्रपदा :-** उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र में प्रथम वर्षा हो तो चातुर्मास में वर्षा अच्छी होती है। अधिक वृष्टि के कारण फसल नष्ट होने की पूर्ण सम्भावना रहती है। कार्तिकी फसल में कमी आती है परन्तु चैत्रीय फसल अच्छी होती है। ज्वार और बाजरा की फसल अत्यल्प होती है।

उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र के प्रथम चरण में वर्षा आरम्भ होकर बन्द हो जावे तो कार्तिक माह में पानी नहीं बरसता परन्तु शेष माह में वर्षा होती है और फसल अच्छी होती है। व्दितीय चरण में वर्षा होकर तृतीय चरण में समाप्त होने पर वर्षा समयानुकूल होगी। तृतीय चरण में वर्षा होने पर चातुर्मास में वर्षा होने के साथ-साथ मार्गशीर्ष और माघ माह में भी पर्याप्त वर्षा होती है। चतुर्थ चरण में वर्षा आरम्भ होने पर भाद्रपद माह में अत्यल्प पानी बरसता है। आश्विन माह में अति-साधारण वर्षा होती है। माघ मास में वर्षा के कारण गेहूँ और चने की फसल अच्छी होती है।

**२७. रेवती :-** वर्ष की प्रथम वर्षा रेवती नक्षत्र में होने पर सारे अनाजों का भाव ऊँचा-नीचा हो जाता है। वर्षा साधारणतः अच्छी होती है। इस वर्षा में श्रावण मास के शुक्लपक्ष में केवल पाँच दिन ही वर्षा होगी। भाद्रपद और आश्विन मास में यथेष्ट जल बरसता है। भाद्रपद मास में वस्त्र और सारे अनाज महँगे हो जायेंगे। कर्तिक मास के अन्त में भी वर्षा होगी।

रेवती नक्षत्र के प्रथम चरण में वर्षा होने पर चातुर्मास में अच्छी वर्षा होगी। पौष और माघ मास में भी वर्षा का योग होगा। वस्तुओं के भाव अच्छे रहते हैं। गुड़ के व्यापार में अच्छा लाभ होगा। देश में सुभिक्ष और शान्ति रहती है।

यदि रेवती नक्षत्र लगते ही वर्षा का आरम्भ हो जाता है तो फसल मध्यम होती है, क्योंकि अतिवृष्टि फसल को हानि पहुँचाती है। चैत्रीय फसल उत्तम होती है। अगहनी फसल में कमी नहीं आती केवल कार्तिकीय फसल में कमी आती है। मोटे अनाजों की उत्पत्ति कम होती है। श्रावण मास में प्रत्येक वस्तु महँगी हो जाती है।

यदि रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण में वर्षा हो तो भाद्रपद मास सूखा जाता है, केवल हल्की वर्षा होकर रुक जाती है। आश्विन मास में अच्छी वर्षा होती है, जिससे फसल अच्छी होती है। श्रावण से आश्विन मास तक सभी प्रकार का अनाज महँगा रहता है। अन्य वस्तुओं में साधारण लाभ होता है। घी का भाव अधिक ऊँचा रहता है। रोगों के कारण मवेशियों की क्षति होती है। गेहूँ ,चना और गुड़ का भाव सस्ता रहता है। मूल्यवान धातुओं के मूल्य की वृध्दि होती है। रेवती नक्षत्र के चतुर्थ चरण में वर्षा होने पर समयानुकूल पानी बरसता है। फसल भी अच्छी होती है। उक्त वर्षा व्यापारियों के लिए लाभदायक है।

यदि रेवती नक्षत्र का क्षय हो और अश्विनी नक्षत्र में वर्षा का आरम्भ हो तो वर्षा अच्छी होगी परन्तु शीत के कारण मनुष्य और पशुओं को कष्ट होगा।

यहाँ वर्षा का प्रभाव श्रावण कृष्ण प्रतिपदा को मानना चाहिये तथा उसके बाद ही नक्षत्र फलानुसार वर्षा का प्रभाव जानना चाहिये।

मेघों की आकृति, उनका काल, वर्ण और दिशा आदि के कारण भी वर्षा के प्रमाण और फल में अन्तर आता है। मेघों के गर्जन और तर्जन से भी शुभ और अशुभ फलों का बोध होता है। मुख्य बात यह है कि मधुर स्वर वाले, सुन्दर वर्ण वाले, शुभ आकृति वाले और बिजली से रहित मेघों को शुभ मेघ माना जाता है। ऐसे मेघ देश में न केवल सुभिक्ष की सूचना देते हैं, अपितु साथ में राज्य में शान्ति, आर्थिक लाभ और रोगों से मुक्ति की सूचना भी देते हैं।

# धूमकेतु प्रकरण

**अह कालपुत्त चरियं केतुस्स हाणिदु ........।**
**........ दि चत्तारि णियमेण ॥१७६॥**

**अर्थ :-**

अब कालपुत्र जो कि धूमकेतु के नाम से प्रसिध्द है, उसके सुख-दुःखरूप फल को कहते हैं।

**केउस्स सुहाणिपुणो सयमिक्कं होइ असुहरूवेण।**
**जत्थेण जत्थ केऊतं दिसणिसासया होई॥१७७॥**

**अर्थ :-**

धूमकेतु प्रायः अशुभरूप होता है और जिस दिशा में उत्पन्न होता है, उस दिशा के नाश में हेतु बनता है।

**अह पच्छिमेण भागे णउड्डिदो पुव्वदो विणासेई।**
**पुव्वेण पच्छिमेण य इणुविचरीय चारेणं॥१७८॥**

**अर्थ :-**

यदि उसका उदय पूर्वदिशा में होवे तो वह पश्चिमदिशा का और यदि उसका उदय पश्चिमदिशा में होवे तो वह पूर्वदिशा का नाश करता है।

**जइ पुच्छं तत्थ भयं जत्थ सिरो तत्थ णिब्भऊ होई।**
**सिरपुच्छमज्झ ऐसे पमुदीदो णत्थि संदेहो॥१७९॥**

**अर्थ :-**

धूमकेतु की पूंछ जिधर की ओर होती है, उधर वह भयकर्ता होता है। जिधर धूमकेतु का मस्तक हो , उधर वह संग्रामकर्ता होता है। जिधर धूमकेतु की पूंछ तथा मस्तिष्क के बीच का भाग होता है, वहाँ वह

आनन्ददायक है।

**जइ सुरगुरुणा सहिओ दीसइ केऊण हम्मि उग्गमिदो।**
**अक्खइ विप्पविणासदि मासचउत्थेण संदेहो॥१८०॥**

**अर्थ :-**

यदि केतु गुरु के पास उगता हुआ दिखाई देवे तो चौथे माह में ब्राह्मणों का नाश होता है।

**भुवि लोए दे सरिसं सस्साण विणासणो हवइ केऊ।**
**सुक्केण खत्ति णासं सोमेण य बालघादो य॥१८१॥**

**अर्थ :-**

गुरु के साथ उदित होने वाला केतु अल्पवृष्टि करता है व अनाज का नाश करता है। यदि केतु का उदय शुक्र के साथ हो तो वह क्षत्रियों का नाश करता है तथा यदि केतु चन्द्रमा के साथ उदित हो तो वह बालकों का घात करता है।

**ससिणा रायविणासं राऊमज्झम्मि सव्वलोयस्स।**
**बुह सहिओ सुहकरणो देसविणासो य सूरेण॥१८२॥**

**अर्थ :-**

चन्द्रमा के साथ उदित हुआ केतु राजमृत्यु का सूचक है। बुध के साथ उदय को प्राप्त केतु अच्छा है। सूर्य के साथ उदयगत केतु देशनाशक है।

**आइव्वा पुण दीसइ णवि किंविदि तत्थ काहदे केऊ।**
**अह रिक्खमग्ग दीसइ तस्स विणासंति पुच्छेण॥१८३॥**

**अर्थ :-**

यदि केतु सन्ध्याकाल में दिखाई देवे अथवा सुकुमार चक्र में दिखाई देवे तो महान अशुभ का कारण है।

**जइ धुवमज्झे दीसइ केऊ सयलं विणासए पुहवी।**
**सवणगणाणं अचलं चलणं च करेदि सत्ताणं॥१८४॥**

**अर्थ :-**

यदि केतु ध्रुव के भीतर दिखाई देवे तो पृथ्वी पर वह चल को अचल व अचल को चल कर देता है।

**पुहवी सव्वविणासो णायव्वो जत्थ दीसए केऊ।**
**तम्हा तं पुण देसे परिहरियव्वं पयत्तेण॥१८५॥**

**अर्थ :-**

जहाँ पर ऐसा केतु दिखाई देता है, वहाँ वह सर्व पृथ्वी के नाश का कारण है। इसलिये ज्ञानियों को चाहिये कि वे उस देश का त्याग करें।

## प्रकरण का विशेषार्थ

मध्यरात्रि में आकाश के पूर्वभाग में दक्षिण के आगे जो केतु दिखाई पड़ता है, उसे धूमकेतु कहते हैं। यह केतु धूम्रवर्ण का है। वैसे ज्योतिषशास्त्र में केतुओं के अनेक भेद किये गये हैं। उनमें धूमकेतु अतिशय प्रभावकारी है। उसके अशुभ प्रभाव की बलवत्ता के कारण ही इस ग्रन्थ में उसे कालपुत्र की संज्ञा दी गयी है।

धूमकेतु प्रायः अशुभरूप ही होता है। वह जिस दिशा में उत्पन्न होता है, उस दिशा में स्थित देशों के लिए हानिकारक है। उस दिशा में रोग और क्षुधा आदि की महाभयंकर पीड़ा होती है। विशेष यह है कि यदि धूमकेतु का उदय पूर्वदिशा में हो तो वह पश्चिमी देशों में स्थित नगरों का विनाश करता है और यदि धूमकेतु का उदय पश्चिमदिशा में हो तो वह पूर्वी देशों में स्थित नगरों का विनाश करता है।

जिधर धूमकेतु की पूँछ होती है, उधर वह सर्वत्र भय को उत्पन्न करता है।

जिधर धूमकेतु का मस्तक होता है, उधर वह युद्ध के भय को

संसूचित करता है।

जिधर धूमकेतु का मध्यवर्ती भाग होता है, उधर वह आनन्द को विस्तारित करने वाला होता है।

यदि केतु का उदय गुरु के पास होवे तो वह ब्राह्मणों का विनाशक है। ऐसा केतु अल्पवृष्टि और धान्यविनाशक भी होता है। यह केतु वृद्ध विव्दान और विशिष्ट राजाओं का भी विनाश करता है।

यदि केतु का उदय शुक्र के पास होवे तो वह क्षत्रियों का विनाशक है। इतना ही नहीं, अपितु वह धान्य, राजा, नाग, दैत्य और शूरवीरों को पीड़ा देने वाला होता है।

यदि केतु का उदय चन्द्रमा के पास होवे तो वह बालकों का घातक माना गया है। ऐसा केतु राजमृत्यु को भी सूचित करता है।

यदि केतु का उदय सूर्य के साथ होवे तो वह देशनाशक है।

यदि केतु का उदय बुध के साथ होवे तो वह शान्तिकारक है।

यदि केतु के दर्शन ध्रुव के मध्य में होते हैं तो वह पृथ्वी के चंचल वस्तुओं को अचल और अचल वस्तुओं को चंचल करेगा ऐसा निश्चयतः जानना चाहिये।

यदि केतु सप्तऋषियों में से किसी एक को भी प्रधूमित करे, तो ब्राह्मणों को समस्त प्रकार के क्लेशों का सामना करना पड़ेगा। ऐसा आचार्य श्री भद्रबाहु जी का मत है।

यदि केतु सन्ध्याकाल में दिखाई पड़ता है अथवा सुकुमारचक्र में दिखाई पड़ता है तो वह महान अशुभकारक है। उसके कारण जलचर जीव, जल और वृद्ध वृक्षों का घात होगा।

केतु के अशुभ फल को जानकर उसका दर्शन होने पर उस देश का त्याग कर देना ही उचित है।

पापकारी केतु की शान्ति के लिए क्या करना चाहिये ? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए आचार्य श्री भद्रबाहु जी ने लिखा है –

**दीक्षितान् अर्हद्देवांश्च, आचार्यांश्च तथा गुरून्।**
**पूजयेच्छान्तिपुष्ट्यर्थं, पापकेतुसमुत्थिते ॥**

**(भद्रबाहुसंहिता :- २१/५४)**

**अर्थात् :-** पापकेतुओं की शान्ति के लिए मुनि, आचार्य, गुरु, दीक्षितसाधु और तीर्थंकरों की पूजा करनी चाहिये।

**संखेवेण विकहियं तणुप्पायाणं तु लक्खणं थोवं।**
**इत्तो जो आहिरित्तं तं पुण अण्णं तु जाणिज्जा॥ १८६॥**

**अर्थ :-**

इस प्रकार यह उत्पातों का स्वरूप मैंने संक्षेप से कहा है। जिनको अधिक जानने की इच्छा हो वे ग्रन्थान्तरों से जान लेवें।

**भावार्थ :-**

ग्रन्थकार ग्रन्थ का समारोप करते हुए कहते हैं कि निमित्तशास्त्र के आधार से उत्पातों का वर्णन मैंने किया है, जो संक्षिप्त है। जो भव्य इसकी विस्तृत जानकारी प्राप्त करने का अभिलाषी है, उसे अन्य ग्रन्थों का स्वाध्याय करना चाहिये।

**एवं बहुप्पयारं णुप्पायपरंपराय णाऊणं।**
**रिसिपुत्तेण मुणिणा सव्वप्पियं अप्पगंथेण॥१८७॥**

**अर्थ :-**

इसतरह अनेक प्रकार से उत्पातों का स्वरूप मुझ ऋषिपुत्र मुनि ने स्व-बुद्धि के अनुसार इस छोटे से ग्रन्थ में बताया है।

**भावार्थ :-**

ग्रन्थकार ने अन्तिम मंगल करते हुए इस कारिका में अपना नामोल्लेख व लघुता का प्रदर्शन किया है।

## निवेदन

श्रुतभक्ति से प्रेरित होकर मैंने इस अनुवाद को करने का प्रयत्न किया है। ज्योतिष विषयक ज्ञान मुझमें नहीं है। इस अनुवाद में हुई त्रुटियों के लिए गुरुजन मुझे क्षमा करें।

विद्वद्गण इस अनुवाद में हुई भूलों का संशोधन प्रस्तुत करके मुझे सहयोग प्रदान करें।

**मुनि सुविधिसागर**

# निमित्तशास्त्रम्

## (अज्ञातकर्तृक भाषानुवाद)

### मंगलाचरण

**दोहा**

ऋषभ जिनेश्वर को नमूं, करन शुद्ध सम्यक्त्व।
तीर्थंकर के न्हयनसों, पावत सुख अव्यक्त ॥

**सोरठा**

वन्दौ गुरु पदपद्म, कृपायतन भवदुःखहर।
महाकर्मतम पुंज, जासु वचन रवि उदयसम ॥

**दोहा**

सरस्वति को नमन करि, प्राकृत गहन विचार।
भाषा शास्त्र निमित्त की, कथूं बुद्धि अनुसार ॥

१. वह ऋषभदेव स्वामी कि जिन्होंने इस अनंत संसार को इन्द्रिय दमन का उपदेश देकर ध्यान में मग्न हो गये, सदाकाल जयवंते रहो।

२. अब मैं ऋषिपुत्र नामका वर्द्धमान तीर्थंकर जो केवलज्ञान रूपी लब्धि करके युक्त है, उनको नमस्कार करके निमित्तशास्त्र को प्ररूपण करता हूं।

३. यह निश्चय है निमित्तशास्त्र तीन प्रकार से जैसा कि ज्ञानियों ने निरूपण किया है मैं ऋषिपुत्र कहता हूं।

४. जो पृथ्वीपर देखा जावै, आकाश में दिखाई दे और जिसका शब्द ही सुनाई दे। इस तरह से निमित्तशास्त्र के तीन भेद है यह ज्ञानबुद्धि से जानना चाहिए।

५. जो चारण मुनियों नें देखा और ज्ञान से शुभाशुभ वर्णन किया और पंडितों नें भी वैसा ही वर्णन किया। उसी ही निमित्तज्ञान को तीन प्रकार जो उपर बतला चुके हैं, कहता हूँ।

६. सूर्योदय पहले समय आकाशसंबंधी निमित्त बतलाते है। सूर्य उदय के पहले और सूर्य अस्त के पश्चात जो चंद्र ग्रहों वगेरह काराता है,

निमित्तज्ञान वाले को उस रास्ते की तरफ देखकर सब हाल मालूम करना चाहिये।

७. सूर्योदय समय सब दिशाएं एकदम लाल मूंगे की मिसाल हो जावे तो जानों इस देश के राजा या निजाम का लड़का मृत्यु को प्राप्त होगा!

८. अगर मानक या खून के मानिंद सूर्योदय समय दिशायें हो जावें तो जान लो कि यहाँ घोर युद्ध होगा और खूब तलवारे चलेंगी।

९. अगर सूर्य से हेमंत ऋतु में गर्मी और ग्रीष्म ऋतु में सरदी हो तो जानों कि मनुष्य बार-बार बीमारी से दुःख उठावेंगे।

१०. सूर्योदय और अस्त होनें के समय ऐसा मालूम हो कि सूर्य के अंदर से आगकी चिनगारियाँ निकलती है तो जानों कि इस देश में हर सूरत से नुकसान पैदा होंगे।

११. सूर्यास्त समय ऐसा मालूम हो कि सूर्य से धूंआ-धूल निकल रहा है तो एक साल के अंदर राजा का मरण होगा।

१२. सूर्योदय और अस्त समय यदि सूर्य वक्रगति मालूम हो तो जानो कि अवश्य राजा या मंत्री का मरण होगा।

१३. अब सूर्य के चिन्ह फल कहते हैं।

अगर सूर्यास्त समय सूर्य के अंदर से जाज्वल्यमान मच्छी के आकार उठता हुआ चिन्ह मालूम दे तो वो मनुष्यों को भय का कारण होता है।

१४. सूर्य से लम्बी ज्वाला उठती हुई दिखाई दे तो छह महीनें के अंदर देश तबाह हो जावे।

१५. सूर्यास्त समय यदि सूर्य के पास ही दूसरा सूर्य उद्योतवंत दिखाई दे तो यह जान लो कि एक माह में राजा और प्रजा को व्याधि से कष्ट होगा।

१६. अगर सूर्य के टूकडे-टुकडे नजर आनें लगें और उसमें धूल-धुआं उठता दिखाई दे तो यह बतलाता है कि व्याधि से देश पीड़ित और दुष्काल से प्रजा को कष्ट होगा।

१७. सूर्यास्त समय यदि सूर्य के इर्द-गिर्द बैंगनी पीला मजीठी और काला मंडल दिखाई दे तो पांचवे रोज अवश्य नव रसों में खराबी पैदा होगी।

१८. अगर सर्प और हस्ती के सदृश सूर्य जाज्वल्यमान दिखाई देवे तो जान लो कि छठे दिन राजा का मरण अवश्य होगा।

१९. सूर्य अस्त होता ऐसा दिखाई दे कि उसमें बहुत पुरुषाकृति शाखाएं जाज्वल्यमान निकल रही है तो जान लो कि पांचवे महीनें बहुत से आदमी हर एक सूरत में रोएंगे।

२०. सूर्य उदय और अस्त समय मैं सूर्य मैं छेद दिखाई दें तो वहाँ पर ऐसी तलवार चलैंगी कि जिससे बहुत से मनुष्य छेदे जावेंगे।

२१. सूर्यास्त समय यदि सूर्य के अंदर से ऐसा मालूम हो कि धुएं के गोले निकल रहे हैं तो जान लो कि तेरहें दिन यहाँ युद्ध होगा।

२२. अब मेघ चिन्ह कहते है।

यदि सूर्य के गिर्द मंडल कमलाकार नजर आवै तो पांचवै दिन हवा चलके पानी बरसैगा।

२३. अगर सूर्य के गिर्द मूशल के आकार मंडल नजर आवे तो जान लो कि सातवैं रोज अवश्य पानी बरसेगा।

२४. सूर्य उदय और अस्त समय यदि गोलमंडल हर्द-गिर्द नजर आवै तो तिसरे दिवस पानी अवश्य बरसैगा।

२५. हेमंत ऋतु मैं सर्दी मिली हुई हवा दक्षिण की चलै तो जान लो वर्षा करीब है।

२६. सूर्योदय और अस्त समय यदि जल ओस के माफिक पडै तो कह दो कि इससे तीसरे रोज अवश्य पानी पडेगा।

२७. यदि प्रचंड हवा चलै और बीच-बीच मैं फिर धीमी हवा चलै तो जान लो कि पांचवे दिन अवश्य पानी बरसैगा।

२८. अचानक कोई पूछै कि क्यों साहब मकान छा लिया? और कपडों में सर्दी मालूम होनें लगै, जल की कलशों का जल गर्म रहै तो जान लो कि आजकल में जरूर पानी आवैगा।

२९. अगर सूर्यास्त या उदय समय आकाश पीला, मंजीठ, नारंगी समान मालूम हो तो यह सूचित करता है कि हवा चलके पानी बरसैगा।

३०. तमाखू रंग का संध्यासमय बादल हो या खाखी रंग का हावे या बादल में छेद से हों तो जान लो कि पानी का अन्त हुआ।

३१. बादल खंड-खंड और गोमूत्र ऐसी आकृति कृष्णवर्ण सूर्यास्त

या उदय समय नजर आवै तौ राजा मरण और अल्पवृष्टि सूचित करता है।

३२. सूर्यास्त और उदय समय यदि बादल टुकडे-टुकडे कई रंग के मालूम दें तो निश्चय बच्चों की मृत्यू और पानी की ना-उमेदी सूचित करता है।

३३. अब आगें चन्द्र चिन्ह कहते हैं।

चंद्रमां का रूप देखकर शुभाशुभ फल कहनें का ज्ञान बतलाते हैं।

३४. बालक चंद्रमां उदय होता हुआ प्रतिपदा या द्वितीया का धनुषाकार दक्षिण-उत्तर समान हो तो सुभिक्ष करता है।

३५. शुभ्र स्वच्छ सम चंद्रमां अच्छा पानी बरषानें वाला और सुभिक्ष करता है।

३६. दक्षिणदिशा जिसकी किनारी उंची हो, वह आरोग्यता करता है। समान किनारेवाला संपत्ति करता है। सपाट लकडी के आकार चंद्र हो तौ मनुष्यों को हर तरह से दंड देता है। धनुषाकार चंद्रमां सम होता है।

३७. (हस्तलिखित प्रति में यह गाथा और उसका अर्थ छूट गया है।)

३८. अगर चंद्रमां लालरंग का दिखाई दे तो ब्राह्मणों को भय का कारण होगा। पीला क्षत्रियों का नाश करता है। खाखी वैश्यों को भय करता है।

३९. काला चंद्रमां शूद्रों को विनाश करता है। पचरंगा, दही के रंगवाला, दूध के रंगवाला चंद्रमां कुल दूध के देनेंवाले पशुओं का नाश करता है।

४०. चंद्रमां के गिर्द खंडित मंडलाकार दिखाई दे तो पांचवें महीनें जरूर दूध का नाश होगा।

४१. जो-जो चिन्ह मंडल वगेरह के सूर्य-चंद्र के पीछे कहे गये हैं, वह निमित्त अवश्य होते हैं।

४२. जो चंद्रमां पर्वरहित हो परंतु राहु ग्रसा जैसा मालुम दे तौ ऐसा चंद्रमां देशपीडा और भय का सूचक है।

४३. वर्षा के लिए जो चिन्ह सूर्य के पहले कह आये हैं, उन्ही चिन्हों से चंद्रमां से भी काम लेना चाहिये।

## उत्पात वर्णन

४४. अब उत्पातों का वर्णन करते हैं।

जहाँ पर बहुत से आदमियों की आवाज सुनाई दे और वह नजर

नहीं आवै तो जान लो कि यहाँ पांचवें महीनें मरी की बेमारी होगी।

४५. जहाँपर बहुत से मनुष्यों के दौडनें की और लडनें की आवाजें मालुम हों और रुदन करते हुए शब्द सुनाई दें तो जानलो कि यहाँ हजारों मनुष्यों का नाश होगा।

४६. संध्या समय यदि शिवा (लोमडी विशेष) चौफेर गांव के रोवें तो जानलो कि राजा का मरण होगा।

४७. अर्द्धरात्रि को परचक्र भयकर्ता, श्याम के वक्त रोग–व्याधि भय करती है और बाकी जिस वक्त रोवे कोई नुकसान नहीं।

४८. जिस देश में कोलाहल शब्द सुनाई दिया करै, उस देश मैं घोर युद्ध अवश्य होगा।

४९. जहाँपर ध्रुव चीजें चलायमान हो जावें और चलायमान चीजें अचल हो जावें तो उस गाँव का तीसरे महीनें में नाश हो जावेगा।

५०. जिस गांव के ईर्द–गिर्द कई किश्म के बाजों की आवाजें सुनाई दें तो उस पुरी का नाश हो जावेगा।

५१. सर्प जुते हुवे हैं जिसमें ऐसी गाडी गांव की तरफ आती हुई दिखाई दे तो जान लो इस ग्राम के खोटे भाग आये।

५२. विना बैलों का हल आपसे आप खेत में खडा होकर नाचनें लगैं तो जानलो कि परचक्र का भय होगा।

५३. विना हवा वगेरा के कोई पेड गिर पडै तौ वहाँ पर मरी की बीमारी जरूरी होगी।

५४. शहर के मध्य मैं अगर कुत्ते ऊंचा मुंह करके रोवैं तो यह बतलाते है कि परचक्र से राजा का नाश होगा।

५५. शहर में पुरुष कंकाल (हड्डियों का पुरुषाकार) जैसें मालुम दें तो जानलो कि परचक्र से राजा का नाश होगा।

५६. आमिषभक्षी पक्षी विना कारण जहाँ बहुतायत से उडते हुवे नजर आवै तो वहाँ जरुर परचक्र से नगर का नाश होगा।

५७. जहाँ पर बच्चे खेलते–खेलते आपस मैं लडाई शुरू करके क्रोध से भिडे तो जान लो कि यहाँ जरुर युद्ध होगा।

५८. बच्चे घरों से खेलने के लिए आग ले–लेकर आवैं और उसमें खेलैं तो पांचवे दिन जरुर उस गांव में आग लगैगी।

५९. जहाँ पर बच्चे खेलते-खेलते यह चोर आया पकडो वगैरह शब्द मुंहसे निकालें तो तीसरे दिन चोरभय होगा।

६० जहाँपर मनुष्य गाते हों वा गाना सुननें को घोडी, हथिनी और कुतिया आकर सुननें लगै तो समझो कि उस देश का नाश होगा।

६१. जहाँ पर पंद्रह दिन घोडी या हथिनी गाना सुना करैं तो छह महीना मैं घोडी और एक साल मैं हथिनी देश नाश करैगी।

६२. अगर पांच महीनें तक यह दोनों पशु गाना सुनते रहैं तो छठे महीनें जरूर ग्राम का नाश होगा।

६३. जहाँ गीदड कुत्ते को और चूहा बिल्ली को मार लगा दे, वहाँ के देश का जरूर नाश होगा।

६४. जहाँ सुखा पेड उखडता दिखाई दे, तो उस ग्राम का, पुर का अवश्य नाश होगा।

६५. ग्राम नगर मैं जहाँ वर्षा संबंधी उत्पात होते हैं, जैसे लोहू की वर्षा, मांस की वर्षा, घी की वर्षा, तेल की वर्षा। उनके फलों को कहते हैं।

६६. जहाँ उपर कही हुई वर्षायें हों, वहाँ घोर मारी की बीमारी होती है।

६७. (आगै इसकी अवधि बतलाते हैं।)

अगर मांस की वर्षा हो तो एक मांस मैं और खून की वर्षा हो तो दो मास मैं, विष्ठा की वर्षा हो तो छह मास मैं और यदि घी-तेल की वर्षा हो तो सात दिन मैं फल करती है।

६८. यह उत्पात परचक्रभय या घोर मरी या राजा की मृत्यु या देशनाशादि भय करते हैं।

६९. अकाल समय लताएं फूलै और वृक्षों से खून की धारा निकलती दिखाई दें, तो अवश्य देश का नाश होगा। (उत्पात योग समाप्त)

७०. (इस गाथा का अनुवाद नहीं किया गया है)

७१. और वह जिस देश-नगर मैं प्रतिमां जी स्थिर या चलते भंग हो जावैं, उनके शुभाशुभ फलों को कहता हूँ।

७२. छत्रभंग होनें से राजा का नुकसान हो। रथ के टूटने से राजा का मरण हो और छठे महीनें शहर का नाश होगा।

७३. भामंडल के भंग होनें से राजा को तीसरे या पांचवैं महीनें मरणांत कष्ट होगा।

७४. प्रतिमा जी का हाथ टूटने से तीसरे महीने राजकुमार की मृत्यू होगी। और पांव के टूटनें से सातवें महीनें मनुष्यों को कष्ट होगा।

७५. अगर प्रतिमा जी आपसे आप चलायमान हो जावे तौ मनुष्यों को और राजा को अचानक कष्ट होगा तीसरे महीनें।

७६. यदि प्रतिमा जी का मस्तकभंग हो जावे तो सातवे महीनें राजा के प्रधान की मृत्यु होगी। भुजा के टूटनें से मनुष्यों को घोर पीड़ा होगी।

७७. प्रतिमाजी से आग निकलै या सिंहासन से गिर पड़ै तो जान लो कि तीसरे महीनें राजा की मृत्यु, अग्नि और चोरभय होगा।

७८. जो ऊपर बतलाये हुओ उत्पात पक्ष (पन्द्रह दिन) तक बराबर होते रहै तौ जरूर बहुत जल्दी दुष्काल का भय होगा।

७९. यदि देव प्रतिमां नांचनें लगै, जीभ निकालै या रोवनें लगै, घूमनें लगै, चलनें लगैं, हंसनै लगै और कई प्रकार के भाव दिखावै तो-

८०. जान लौ कि मनुष्यों को मरी का रोग, दुष्काल, शहर के लोगों को और राजा को कई तरह से कष्ट होगा।

८१. प्रतिमा का रोना राजा की मृत्यु का सूचक है। हंसने से देश मैं विद्धेष होगा। प्रतिमां का चलना और कांपना बतलाता है कि यहाँ संग्राम होगा।

८२. प्रतिमा से धूएं युक्त पसीनें का निकलना कई तरह से फल बतलाता है। यदि शिव की प्रतिमा से ऐसा हो तो ब्राह्मणों का नाश होगा।

८३. कुबेर की प्रतिमा से धूआं युक्त पसीनां निकलै तौ भाइयों में तबाही आजायगी और हाथों में धूआँ निकलै तो कायस्थों में कष्ट होगा। इंद्र की प्रतिमा से ऐसा हो तो राजा का नाश होगा।

८४. कामदेव की प्रतिमा से धूआं निकलैं तो आगम बातों का नुकसान होगा और यदि कृष्ण की प्रतिमा से ऐसा हो तो संपूर्ण जाति के मनुष्यों का नुकसान हो। यदि अरिहन्त, सिद्ध और बौद्ध की प्रतिमा से ऐसा हो तो जातियों का नाश होगा।

८५. चंडिका देवी के बालों से यदि ऐसा हो तो स्त्रियों के नाश होनें का हेतु है। और वाराहीदेवी हाथियों का नाश करती है।

८६. नागनी देवी से धूम निकलै तो गर्भनाश और महानाशदोष करती है। यह जो जो बातैं बतलाई है निश्चै अशुभ करती है।

८७. यदि शिव का लिंग फूटै और उसके अंदर अग्नि की ज्वाला उठै या खून की धारा निकलै उसका फल बतलाते हैं।

८८. शिवलिंग फूटनें से आपस मैं फूट फैल जावै और अग्नि की ज्वाला से देश का नाश हो जावेगा। खून की धारा से घर-घर रोना होगा।

८९. ऐसे उत्पातों के होते ही मनुष्यों को चाहिये कि तीन मास तक भक्तिसंयुक्त देवों की पूजा करें।

९०. देवों का अपमान नुकसान का हेतु है। इसलिए देवों को कभी अपूज्य नहीं रक्खै। और रोजाना पूजन करै, इस ही मैं भलाई है।

९१. पुष्प, गंध, धूप, दीप, नैवैद्य।

९२. देवों को संतुष्ठ हुए वह विनाश नहीं करते और दु:ख संताप वगैरह भी नहीं देते।

९३. छत्र, चमर टूटकर आपसे आप राजा के पास पडै तो पांचवे दिन जरुर राजा की मृत्यु होगी।

९४. जहाँ ढोलक तुरंग, तुरई शंख के बजने की आवाजें कान मैं सुनाई देती हों तो वहीं जरुर पाचवैं महीने राजा की मृत्यु होगी।

९५. जहाँ मूसे से लडते जक्ष दिखाई दें वहाँ जरुर पांचवैं महीनें राजा की मृत्यु होगी।

९६. यदि नगरकोट पर या नगर के दरवाजे पर, देवमंदिर पर या चौराहे पर या राजमहल पर यक्षों को लडते-नाचते देखै तो निम्नोक्त फल जानौ।

९७. कोटपर नाचलें से बच्चों को नुकसान, दरवाजे से स्त्रिया जो गर्भवती है उनको नुकसान, गऊशाला या घुडशाल से साहूकारों को नुकसान होगा।

९८. देव मंदिर से ब्राह्मणों को तकलीफ हो, राजमन्दिर से राजा का मरण हो और चौराहे से शहर का नाश होता है।

९९. सूर्य में छेद से मालूम होनें लगैं और सूर्य के मध्य में कुंजाकृति मनुष्य वगेरह मालुम हों तो भी एक साल में राजा की मृत्यु और संग्राम होगा।

१००. दिन को उल्लु और रात को कौवे रोवैं तो शहरनाश भय होगा।

**अथ इंद्रधनुषे स्वरूप प्रारंभ**

१०१. अब इंद्रधनुष का स्वरूप कहते है।

अगर रात के वक्त श्वेत धनुष नजर आवै तो जान लो कि यहाँ पर संग्राम में रथभंग होंगे और मनुष्यों में कष्ट होगा।

१०२. यदि दिन को इंद्रधनुष पूर्व से दक्षिण को टेढा मालुम होतो जान लो कि खूब हवा चलैगी और पानी नहीं बरसैगा।

१०३. यदि पूर्व से पश्चिम को मालुम दे तो जानलो कि पानी खूब पडैगा। पूर्व से उत्तर को अगर धनुष दीखै तौ भी अच्छा है।

१०४. (इसका अर्थ प्रति में छूट गया है)

१०५. जो ऊपर धनुष के दोष बतलाये हैं वह वहाँ ही समझो कि जिस नगर मैं या जिस राजा के राज मैं आते हैं। इनकी अवधि दो साल तक है।

१०६. जो धनुष उठता हुआ कांपता दिखाई देकर कभी लंबा, कभी चौडा सा दिखाई दे तो जानलो कि राज्य-भय होगा।

१०७. अगर सीधा खडा मालुम दे तौ मंत्री और राजा मैं विरोध हो। अगर धनुष उठता हुआ दिखाई देता उसी वक्त गिर पडै तो राजा का राजभंग हो।

१०८. अगर धनुष टूटता हुआ दिखाई दे तौ राजा की मृत्यु है। यदि बिखरता दिखाई दे तौ रोग-पीडा होगी और यदि अग्नि निकलती दिखाई दे तौ जानलो कि संग्राम होगा।

१०९. यदि धनुष से धूआं उठता हुआ और चारौ तरफ से आग की चिनगारियां उठती दिखाई दे तौ यह बतलाता है कि राजा की मृत्यु और बाद मैं देश का नाश होगा।

११०. मधुके छत्ते की तरह अगर नगर को धनुष वेष्टित कर लौ तो जानलो कि घोर महामारी होगी, जिससै मनुष्य कष्ट उठावैगे और दुष्काल पडैगा।

१११. अगर एक के उपर एक इस तरह से दो इंद्रधनुष नजर आवै तो जानलो कि मनुष्यों को हर तरह से खराबी है और शहर का नाश भी करैगा।

११२. यह इंद्रधनुष संबंधी उत्पात पांचवै रोज या सातवैं रोज अथवा एक साल (वर्ष) के अंदर फल देते है।

११३. यदि उत्पात दोष वर्जित हो तौ नृपति को शांति करने से देश मैं

शांति हो जाती है।

११४. उत्तमपुरुष उत्पातों को विचार कर देश विनाशक हेतु कहते है।

११५. जहाँपर बच्चे खेलते-खेलते रोनें लगें और मुंह से कहें कि भीख दो तो जानलो कि अवश्य दुष्काल पडेगा।

**११६. अब उल्कापात का बखान करते हैं।**

उल्कापात उसे कहते हैं जो कि आकाश में चमकती हुई चिनगारियों की लंबी शिखा बन जावे। पूर्व और उत्तर दिशा में अगर उल्का नजर आवे तो उस नगर का अवश्य ही नाश होगा।

११७. जहाँ पर हर महीनें उल्का नजर आवे, इस तरह यदि छह माह तक उल्का दिखै तौ अवश्य उस जगह के मनुष्यों के प्राण जायेंगे।

११८-११९. सफेद उल्का ब्राह्मणों का नाश करती है और लाल उल्का क्षत्रियों को मृत्यु देती है। पीली उल्का वैश्यों का नाश करती है। और काली उल्का शूद्रों का संहार करती है।

१२०. पंचरंगी उल्का मरी की बीमारी करती है। और जो इधर-उधर से टकारा है वह प्राणनाश करती है।

१२१. संध्या समय की और अर्धरात्रि की उल्का हवा और अग्निभय करती है और सूर्य उदय की पहली उल्का नृपतिनाश करती है।

१२२. जो उल्का पडती हुई नजर आवे तौ सुवर्ण का नाश करती है। और जो उल्का अंगारे लिये हुवे गिरै तो अग्निदाह करती है।

१२३. शुक्रोदय में उल्का जलती हुई नजर पडै तौ रस के भांडों का नाश करती है और खुजली की बीमारी पैदा करती है।

१२४. राहू के उदय में उल्का गिरै तो पानी का नाश करती है।

१२५. पश्चिम दिशा में पडी हुई उल्का घोर पीडा करती है और उत्तर दिशा में पडी हुई कुशल और सुभिक्ष करती है।

१२६. अग्निकौंण में अगर उल्का पडै तौ अग्निभय करती है और दक्षिण दिशा में पडी हुई उल्का पीडा संताप पैदा करती है। नैऋत्य कोण में पडी हुई उल्का द्रव्यनाश करती है।

१२७. नीची या ऊर्ध्व चलती हुई उल्का पानी की वर्षा और हवा लाती है। वायव्य कोंण की उल्का रोग-भय करती है। परंतु अगर उल्का वायव्यकौंण की हों तो शुभ है।

१२८. ईशान कौंन की पडी हुई उल्का स्त्रियों का गर्भ नाश करती है और अगर पूर्व में उल्का पडै तौ घोर भय उत्पन्न करती है।

१२९. यदि उल्का आदित्यवार को पडै तौ पृथ्वीपर गरमी संबंधी आदिक पीडा होवै। और अगर चंद्रवार को गिरै तो कुशल सुभिक्ष करती है।

१३०. जो उल्कापात जहाँ से उठा हो और वहीं वापिस लौट जावै तो अच्छा है। वरना अवश्य बार-बार तकलीफ देता है।

१३१. कृतिका और रोहिणी नक्षत्र में अगर उल्का पडै तो पृथ्वी को संताप देती है और शहर या ग्राम पर राज्य-महल को नष्ट करती है।

१३२. और चौरों का जोर जमीन पर ज्यादा हो जायेगा, ठग बढ जावेंगे। माता पुत्र को और स्त्री पति को त्याग देगी।

१३३. पानी कम पडैगा। नाज वगैरह सरसों का नाश होगा। यह उत्पात इस तरह की उल्का पडनें से होता है।

### अब गंधर्वनगर फल कहते हैं

१३४. गंधर्वनगर उसे कहते हैं जो आकाश में पुद्गलाकार नगर के स्वरूप बनैं। अगर पूर्व दिशा मैं गंधर्वनगर दीखै तौ पश्चिम देश का नाश होगा।

१३५. यदि दक्षिण दिशा मैं गंधर्वनगर दिखै तौ राजा का नाश कहै और यदि पश्चिम दिशा में दिखाई दे तौ पूर्व दिशा का नाश जल्दी होगा।

१३६. उत्तरदिशा मैं दिखाई दे तौ उत्तर ही दिशावालों का नाश करता है और यदि हेमंत ऋतु में दिखाई दे तौ रोगभय करता है। वसन्तऋतु का देखा गंधर्वनगर सुकाल करता है।

१३७. ग्रीषम ऋतु का देखा हुआ नगर नाश करता है और वर्षाकाल मैं गंधर्वनगर दीखै तौ पानी कम होगा और दुष्काल होगा। यदि शरद ऋतु में देखा जावै तो मनुष्यों को पीडा करता है।

१३८. बाकी ऋतुकाल मैं अगर ऐसा हो यानै गंधर्वनगर दिखाई दे तौ उनका फल छह महीनें भीतर राजा का नाश होगा।

१३९. रात्रि को नजर आवै तौ देश नाश करैगा। कुछ रात्रि रहते नजर आवै तौ चोरभय और राजा का नाश करता है।

१४०. यह ऊपर जो कालनियत करे हैं उनके सिवाय अगर कोई काल

में गंधर्वनगर नजर आवै तो सुभिक्ष करता है और रोगहरता होती है।

**अब जिस वर्ण का गंधर्वनगर फसल का नाश करता है यह बतलाते हैं –**

१४१. पंचरंगा गंधर्वनगर भयकर्ता और रोगभय करता है। श्वेत रंग का घी–तेल–दूध का नाश करता है।

१४२. काले रंग का वस्त्रनाश करता है। अतिकाल तक लाल रंग का गंधर्वनगर दिखाई दे तो ज्यादा अशुभ होता है।

१४३. यह गंधर्वनगर जिस शहर में नजर आवे तो उस ही में अशुभ होता है। और जिस दिशा में दिखाई दे तो उस ही दिशा में नुकसान करता है।

१४४. यदि बीच में आकाश के तारों की तरह गंधर्वनगर छाया हुआ नजर आवे तो मध्य देश को अवश्य नाश करता है।

१४५. जितनी दूर तक फैला हुआ गंधर्वनगर नजर आवै तो उतनी दूर तक देश नाश अवश्य करैगा।

१४६. इंद्रधनुषाकार नगर या..... के आकार यदि गंधर्वनगर नजर आवै तो देशनाश, व्याधि से मरण और दुर्भिक्ष अवश्य करैगा।

१४७. अगर शहर के ऊपर नगर गांव के आकार गंधर्वनगर बन जावे और उसके चौफेर कोट दिखाई दे तो निश्चय राजा की मृत्यु होइ।

१४८. पत्थरों का पडना कई तरह से होता है और कई प्रकार के पडते हैं। इसलिए इनका निमित्त कहते हैं।

१४९. चांवल, सरसों या खजूर फल जैसे जहाँ पत्थर गिरे वहां सुभिक्ष होगा।

१५०. बदरीफल जैसे, मूंग जैसे, अरहड जैसे पत्थर का पडना भी सुभिक्ष करता है।

१५१. शंख जैसे सफेद छोटे–छोटे मसूर जैसे पत्थर गिरे तो पानी बरसनें की खबर देते हैं।

१५२. मेंडक, घडे, हाथीदांत जैसे अगर पत्थर पडैं तो जरूर देशनाश करता है।

१५३. मटके जैसे, हाथी जैसे, छत्र जैसे, थाली जैसे या वज्राकार में पत्थर पडैं तो देशनाश करते है और राजा को भी मृत्यु का सूचक है।

**अथ विद्युलता रूपम्**

१५४. यदि उत्तर दिशा को बीजली चमकै तो हवा चलै या अवश्य पानी

बरसैगा।

१५५. यदि अग्निकौंण मैं नजर आवै तो व्याधि से मृत्युसूचक है और तीन माहतक अवश्यमेव पानी बरसैगा।

१५६. और शहर या गांवनाश होगा। सांप, हंस, मच्छर, चूहे इनकी ज्यादा पैदा होगी।

१५७. यदि दक्षिण दिशा को नजर आवै तो सुभिक्ष और आरोग्य करती है। परंतु गर्भनाश और बच्चों को तकलीफ ज्यादा पहुंचाती है।

१५८. अगर नैऋत्यकोण मैं नजर आवै तो हवा ज्यादा चलै और मौके-मौके पर पानी बरसैगा।

१५९. यदि वायव्यकोण मैं चमकै तौ हवा ज्यादा चलै, पानी कम पडै, चोर ज्यादा हों। राजा का देश नाश हों।

१६०. (इस गाथा का अर्थ छूट गया है।)

१६१. यदि पश्चिम को नजर आवै तौ पानी खूब बरसै, नाज अच्छा हो, ठंडी हवा चलैगी।

१६२. ईशानकोंण की बिजली राजा की मृत्यु, चोरभय, सुभिक्ष, रोगहानि बतलाती है।

१६३. (इस गाथा का अर्थ छूट गया है।)

१६४. यदि मार्गशीर्ष महिनें में पानी बरसै तौ अवश्य ज्येष्ठ महीनें मैं पानी का नाश होगा।

१६५. अगर पौष मास मैं बिजली चमक के पानी बरसै तौ अषाढ महीनें में अच्छी वर्षा हो।

१६६. अगर माघ और फाल्गुन मैं शुक्ल पक्ष मैं तीन दिन पानी बरसै तौ छहे और नवें महीनें में जरुर पानी पडैगा।

१६७. अगर आकाश में बादल छाये रहैं और हर वक्त बरसते रहैं तौ यहाँ पर जरुर व्याधि रात-दिन शुरु रहैगी।

१६८. अर कृतिका नक्षत्र को पानी बरसै तौ देश का नुकसान करता है।

१६९. यदि मृगशिर नक्षत्र को पानी बरसै तौ अवश्य सुभिक्ष होगा। आर्द्रा को बरसै तौ खंडवृष्टि हो और पुनर्वसु को बरसै तौ एक मासपर्यंत वर्षा रहैगी।

१७०. पुष्य नक्षत्र को बरसै तौ श्रेष्ठ वर्षा होगी और नाज अच्छा होगा

और अश्लेषा को यदि पानी बरसेगा तौ नाज का नुकसान होगा ।

१७१. मघा और पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र को यदि पानी बरसै तो कुशल और सुभिक्ष होता है । उत्तरा फाल्गुनी और हस्त को पानी बरसै तौ भी सुभिक्ष और आनंद होता है ।

१७२. चित्रा नक्षत्र को पानी बरसै तौ वर्षा मंद होगी । स्वाती कौ बरसै तो मामूली पानी पड़ैगा । विशाखा और अनुराधा नक्षत्र को पानी बरसै तौ खूब मेह होगा ।

१७३. ज्येष्ठा नक्षत्र को पानी बरसै तौ पानी की कमी रहै । और मूल नक्षत्र को पानी बरसैतौ अच्छा पानी गिरैगा । पूर्वा और उत्तराषाढ नक्षत्र को पानी बरसै तौ पानी अच्छा पड़ैगा और पवन चलैगी, इसमैं सन्देह नहीं ।

१७४. श्रवण नक्षत्र को पानी पड़ै तौ कार्तिक मास मैं पानी का नाश होगा । घनिष्टा नक्षत्र मैं पानी बरसै तौ खूब वर्षा होगी ।

१७५. शतभिषा, पूर्वभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद इन नक्षत्रों मैं पानी पड़ैं तौ बहुत वर्षा होगी । और रेवती, अश्विनी तथा भरणी इन नक्षत्रों में पानी पड़ै तौ भाव श्रेष्ठ होता है ।

१७६. यह जो नक्षत्र योग कहे गये है, इनको गर्भकाल कहते हैं । और ज्ञानीजन इनपर अमल करते है, उनके निश्चय ही फल होता है ।

### अथ केतुस्वरूप प्रारंभ

१७७. केतु स्वरूप से यहाँ, दुमवाला तारा लेना चाहिये । अब कालपुत्र जो धूमकेतू नाम से प्रसिद्ध है, उसके सुख-दुख के फल कहते हैं ।

१७८. धूमकेतु अशुभरूप होता है और जिस दिशा में यह पैदा होता, खासकर उस ही दिशा को नाश का हेतु होता है ।

१७९. यदि यह पूर्वदिशा में उदय हो तो पश्चिम दिशा को और पश्चिम मैं उदय हो तो पूर्व दिशा को नाश करता है ।

१८०. जिधर पूंछहो उधर भयकर्ता और जिधर मस्तक हो उधर संग्रामकर्ता है । जहाँ पूँछ और मस्तक का बीच होता है, वहाँ आनंदकर्ता है ।

१८१. अगर गुरु के साथ उगता हुआ केतु दिखाई दे तो चौथे महीनें ब्राह्मणों का नाश करता है ।

१८२. और अनावृष्टि तथा नावों का नाश करता है। केतु शुक्र के साथ उदय हो तो क्षत्रियों का नाश करता है। चंद्रमा के साथ बच्चों का घात करता है।

१८३. और राजा को मृत्युसूचक है। यदि सूर्य के साथ नजर आवै तौ देश नाश करता है।

१८४. अथवा ध्रुव के भीतर नजर आवै तौ तमाम पृथ्वी चल को अचल करै। अचल को चल करकै तबाह कर दे।

१८४. सायंकाल को नजर आवै तौ अथावा शिशुमार चक्र में दिखाई दे तो महा-अशुभ है।

१८५. जहाँ पर केतु नजर आता है वहाँ पर सकल पृथ्वी का नाश करता है। इसलिये ज्ञानियों को चाहिये कि जिस देश में यह दिखाई दे उस देश का त्याग कर दे।

१८६. इस प्रकार संक्षेप से उत्पातौं का स्वरूप कहा। अगर किसी महाशय के अधिक जानने की इच्छा होय तो अन्य ग्रंथनि में देख लेवैं।

१८७. इस प्रकार कितनें ही उत्पातौं का स्वरूप अल्पग्रन्थ में मुझ ऋषिपुत्र मुनिनैं यथामति वर्णन कीया।

**इति श्री ऋषिपुत्र प्रणीत निमित्तशास्त्रं समाप्तम्।**

**श्री सं १९८९ कार्तिककृष्णा ७ भृगु वासरे**
**लि. शंकरलाल शर्म्मा गौड।**
**शुभं भूयात्। श्री**

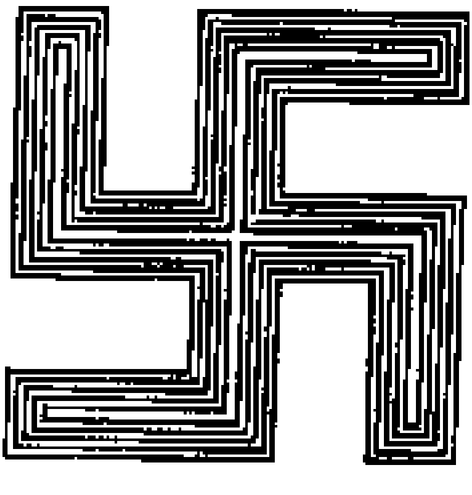

# श्लोकानुक्रमणिका


| क्र. | श्लोकांश | श्लोक |
|---|---|---|
| १ | अग्गीये जइ दीसइ | १५५ |
| २ | अग्गेई अग्गिभयं | १२६ |
| ३ | अण्णह काले वल्ली | ६९ |
| ४ | अणकालम्मि दिहे | १४० |
| ५ | अब्भाणे मेहपत्ती | १६६ |
| ६ | अबलं वियसी सथरो | ३५ |
| ७ | अवमाणिया विणासं | ९१ |
| ८ | अह [illegible] सद्दो | [illegible] |
| ९ | अह उत्तमेहि णीया | ११४ |
| १० | अह कालपुत्त चरियं | १७६ |
| ११ | अह कित्तियाहि वरसइ | १६७ |
| १२ | अह कीलमाणचोरं | ५९ |
| १३ | अह खंड भिण्णभिण्णा | ३१ |
| १४ | अह खलुमारिसिपुत्तिय | ३ |
| १५ | अह जत्थ धुवो चलदी | ४९ |
| १६ | अह जिप्पहोव दीसइ | ११ |
| १७ | अह णच्चंता दीसइ | १९ |
| १८ | अह णंदि तूर सवखा | ९४ |
| १९ | अह तूरवो सुव्वइ | ४८ |
| २० | अह दीसइ जइ खंडो | १६ |
| २१ | अह दीसइ परधीओ | २४ |
| २२ | अह धूमो अच्छयणे | २१ |
| २३ | अह पच्छिमेण भागे | १७८ |
| २४ | अह पौसमास वरिसइ | १६४ |
| २५ | अह बहु सति धावंति | ४५ |
| २६ | अह बाला कीलंता | ५७ |
| २७ | अह मग्गसिर देवे | १६३ |
| २८ | अह मंडलेण णुद्धं | १७ |
| २९ | अह माणसीए मास | ६१ |
| ३० | अह माणुसीय गाएय | ६० |
| ३१ | अह माह फग्गुणेसुय | १६५ |
| ३२ | अह मेहोणइयलये | २२ |
| ३३ | अह रिक्खमज्झ वच्चह | १४४ |
| ३४ | अह वायव्व दिसाए | १५९ |
| ३५ | अहवा रायविणासं | १६२ |
| ३६ | अह वारुणीय दिहा | १६० |
| ३७ | अह वारुणीय पडिया | १२७ |
| ३८ | अह सुक्केणय जुत्ता | १२३ |
| ३९ | अह सूरपास उइवो | १५ |
| ४० | अह हत्थिसरिस मेहो | १८ |
| ४१ | अहि जुत्ताविय सपडा | ५१ |
| ४२ | आइच्चो जई छिद्दो | ९९ |
| ४३ | आइच्चा पुण दीसइ | १८३ |
| ४४ | आमिगपक्खी गामे | ५८ |
| ४५ | आरोगं दक्खिनवो | ३६ |
| ४६ | इंदद्दयमारुढो | १११ |
| ४७ | इंदपुरणयर सहिऊ | १४६ |
| ४८ | इंदम्मि दिसाभाए | १५४ |
| ४९ | इंदो कीलविणासं | १०७ |
| ५० | इंदो वरसइ मंदं | १३३ |
| ५१ | इंदुइवणेय पुणो | १०५ |
| ५२ | ईसाणाए पडिया | १२८ |
| ५३ | उक्का यत्थ जलंती | ११७ |
| ५४ | उइंतो जइ कंपइ | १०६ |
| ५५ | उदयच्छमणे सूरो | १२ |
| ५६ | उदयच्छमणो सूरो | १० |
| ५७ | उदयच्छमणो सूरो | २० |
| ५८ | उप्पलयाणय पडणं | १४८ |
| ५९ | एए दरसण णूवा | १४३ |
| ६० | एए देसरस पुणो | ७१ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ६१ | एए रिक्खव योगा | १७५ | ९३ | जइ मयरिसम्मि वरसइ | १६८ |
| ६२ | एकद्देसे चलिए | ७५ | ९४ | जइ मुंचइ धूमं वा | १०९ |
| ६३ | एढे पुण उप्पादा | ११२ | ९५ | जइ सिवलिंगं फुट्टइ | ८७ |
| ६४ | एयंतेणउ वच्चइ | १४५ | ९६ | जइ सुक्खो विय रुक्खो | ६४ |
| ६५ | एवं बहुप्पयारं | १८७ | ९७ | जइ सुरगुरुणा सहिओ | १८० |
| ६६ | कच्छाइ णाझो सियचडि | ८५ | ९८ | जदि चंडवाद्यु बायदि | २७ |
| ६७ | करिकुंभछत्तसरिसा | १५३ | ९९ | जम्मा दु पुणो दिट्ठो | १५७ |
| ६८ | का इच्छंती दीसइ | ३२ | १०० | जरसय रिक्खे पडिदा | १३० |
| ६९ | किण्णो सुइ विणासो | ३९ | १०१ | जिहिरु अण्णादिट्ठी | १७२ |
| ७० | किण्हो वच्छविणासो | १४२ | १०२ | जूवो हलो विदीसइ | ५२ |
| ७१ | कित्तिय रोहिणिमज्झे | १३१ | १०३ | जे चारणेण दिट्ठा | ५ |
| ७२ | केउरस्स सुहानिपुणो | १७७ | १०४ | जे दिट्ठ भुविरसण्ण | ४ |
| ७३ | कोट णयरस्सदोर | ९६ | १०५ | जे मंडलाय पछिरा | ४१ |
| ७४ | गामे वा णयरे वा | ६५ | १०६ | णमिऊण वड्ढमाणं | २ |
| ७५ | गिम्मेण णयरघादी | १३७ | १०७ | णम्मि यदि तं कंकाल | ५५ |
| ७६ | गेहोणि ते कुणंतं | ५८ | १०८ | णय कुव्वंति विणासं | ९२ |
| ७७ | चंदो सरूपसरिसो | ३३ | १०९ | णयरस्स रच्छमज्झे | ५४ |
| ७८ | चावं मुसली सत्ती | ९५ | ११० | णरणूवेणबभेणं गीढो | १४ |
| ७९ | चित्तलयंत्तिल्लाणं | १२० | १११ | णरवइपहाणमरणं | ७६ |
| ८० | चित्तलवोभयजणणो | १४१ | ११२ | णाइणि गब्भविणासं | ८६ |
| ८१ | चित्ता हि मंदवरिसं | १७१ | ११३ | णाणा दुमउवणीयदि | ५३ |
| ८२ | चोरा लुंपंति मही | १३२ | ११४ | णाणा बहुत्तमणा | ५० |
| ८३ | छत्तस्स पुणो भंगो | ७२ | ११५ | णावालंगलसरिसो | ३४ |
| ८४ | छत्तोणुज्जलदंतो | ९३ | ११६ | णुत्तरणुत्तरियाणं | १३६ |
| ८५ | छाइज्जइ महेणं | १४७ | ११७ | णुप्पयवण्णसरिच्छा | ३० |
| ८६ | छित्तेण कोई पुच्छइ | २८ | ११८ | तद्देसं सो णासदि | १३९ |
| ८७ | जइ छेलएहि गीढो | ६३ | ११९ | तित्थयरछत्तभंगे | ७० |
| ८८ | जइ धुवमज्झे दीसइ | १८४ | १२० | दक्खिणदिसम्मि दिट्ठो | १३५ |
| ८९ | जइ पुण एए सव्वे | ७८ | १२१ | दिवसे उलूय हिंडति | १०० |
| ९० | जइ पुच्छं तत्थ भयं | १७९ | १२२ | दिवहे दीसइ धणुओ | १०२ |
| ९१ | जइ बाला हिंडंता | ११५ | १२३ | देवा णच्चंती जिहं | ७९ |
| ९२ | जइ मच्छासरिमेणं | १३ | १२४ | देवणुले विप्पभओ | ९८ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १२५ | धणियं णइएवित्ता | १०४ | १५६ | रतिम्मिय इंदधणु | १०१ |
| १२६ | पच्छिमभाये पुणओ | १०३ | १५७ | रिउकाल मऊ एसो | १३८ |
| १२७ | पडमाणी णिद्दिट्ठा | १२२ | १५८ | रिक्खम्मि पास वछहरो | ४० |
| १२८ | पडिमा विणिगामेण य | ७७ | १५९ | रुइयेण राइमरणं | ८१ |
| १२९ | परकम्मि जस्स पडिया | १२५ | १६० | लोयस्स दिंति मारी | ८० |
| १३० | [illegible]चक्क[illegible] घोरे | [illegible] | १६१ | व[illegible]च्च कुबेर | ८३ |
| १३१ | पव्वणि रहिओ चंदो | ४२ | १६२ | ववरुव सुररसुदयच्छमणे | २६ |
| १३२ | परिसणे तह वाही | ८२ | १६३ | वाउम्मासिय वरिसं | १५८ |
| १३३ | पायारबालवहो | ९७ | १६४ | वाधीफलसरिसावा | १५० |
| १३४ | पुव्वे उत्तरमुण्णानुक्का | ११६ | १६५ | विप्पाणं देइ भयं | ३८ |
| १३५ | पुव्वदिस्सम्मिय | १३४ | १६६ | विसए गामे णयरे | १५६ |
| १३६ | पुस्से वाउम्मासं | १६९ | १६७ | वेठिज्जइ एहिज्ज | ११० |
| १३७ | पुहवी सव्वविणासो | १८५ | १६८ | समचलणो समवण्णं | ३७ |
| १३८ | फुडिए णयंति भेऊ | ८८ | १६९ | सयभिसु भद्दव आऊ | १७४ |
| १३९ | बहु वरिसइ जइ | १६१ | १७० | सवणे कातियमासे | १७३ |
| १४० | भंगे णरवइ भंगं | १०८ | १७१ | ससलोहिवण्णहोवरि | ८ |
| १४१ | भल्लेहि गंध धूवेहि | ९० | १७२ | ससिणा रायविणासं | १८२ |
| १४२ | भामंडलस्स भंगे | ७३ | १७३ | संखेवेण विकहियं | १८६ |
| १४३ | भुवि लोए दे सरिसं | १८१ | १७४ | संझावेलासमये | ४६ |
| १४४ | भोगवइण कामी | ८४ | १७५ | संवेक्कसुत्तिसरिसा | १५१ |
| १४५ | मज्झणिए संजझाए | १२१ | १७६ | सुक्का हणेइ विप्पा | ११९ |
| १४६ | मज्झण्णे परचक्कं | ४७ | १७७ | सुक्किकदवा धूमाभा | ११८ |
| १४७ | मंडुक्क कुम्भसरिसा | १५२ | १७८ | सुणही पणमासेहि | ६२ |
| १४८ | मह फग्गुणी हि | १७० | १७९ | सूरोदय अच्छमणे | ६ |
| १४९ | माला सरिच्छसरिसं | १४९ | १८० | सूरम्मि तावयंती | १२९ |
| १५० | मारी हाही घोरा जत्थे | ६६ | १८१ | सूरोय उयव्वमणो | ७ |
| १५१ | मासेऊ मासेणं दोमासे | ६७ | १८२ | सूहा पीययवण्णा | २९ |
| १५२ | मासे हि तीइयेहि | ८९ | १८३ | सो जयउ जयउ | १ |
| १५३ | मुसलसरिच्छो मेहो | २३ | १८४ | हत्थत्त पुणो भंगे | ७४ |
| १५४ | मेहाणय जेणूवा | ४३ | १८५ | हेमंतकतुणकगिण्हे | २५ |
| १५५ | यदि सो मोणिसुद्दो | ११३ | १८६ | हेमंतम्मिय उण्णं | ९ |


**गाथा क्रमांक १२४ का पूर्वार्ध नहीं है।**

# हमारे उपलब्ध प्रकाशन

## टीका ग्रन्थ

### १. रत्नमाला :-

यह आचार्य श्री शिवकोटि जी का ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में संक्षिप्त पध्दति से श्रावकाचार का वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ में कुल ६७ श्लोक हैं। बारह व्रत, ग्यारह प्रतिमा, जलप्रयोग की विधि, नित्य-नैमित्तिक क्रिया की विधि आदि अनेक विषय इस ग्रन्थ में वर्णित हैं।

परम पूज्य श्री सुविधिसागर जी महाराज की जादूभरी लेखनी से अनुवादित यह ग्रन्थ ज्ञानवर्धक है।

**सहयोग राशि :- २५ रुपये**

### २. प्रमाण प्रमेय कलिका :-

न्यायशास्त्र के महाभवन का द्वार उद्घाटित करने के लिए सहायकरूप यह ग्रन्थ आचार्य श्री नरेन्द्रसेन जी के द्वारा रचित और परम पूज्य सुविधिसागर जी महाराज के द्वारा अनुवादित है। इस ग्रन्थ का मूल प्रकाशन १९६१ में हुआ था। परन्तु पहली बार अनुवादित होकर यह २००० में प्रकाशित हो पाया।

इस ग्रन्थ में प्रमाणाधिकार व प्रमेयाधिकार ये दो अधिकार हैं तथा कुल ५९ परिच्छेद हैं।

**सहयोग राशि :- २१ रुपये**

### ३. संबोह पंचासिया :-

यह कवि गौतम का अनुपम ग्रन्थ है। इस प्रति में अज्ञात लेखक की संस्कृत टीका भी है। मूल ग्रन्थ प्राकृत भाषा में है। ग्रन्थ अत्यन्त सरल है। इस ग्रन्थ में कुल ५१ गाथायें हैं। वैराग्योत्पादन करने वाले इस ग्रन्थ का एक बार स्वाध्याय अवश्य करना चाहिये।

परम पूज्य युवामुनि श्री सुविधिसागर जी महाराज ने इस ग्रन्थ का अनुवाद किया है।

**सहयोग राशि :- २० रुपये**

## ४. द्रव्यसंग्रह :-

यह सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री नेमिचन्द्र जी की अमरकृति है। आचार्य श्री प्रभाचन्द्र जी की प्रामाणिक टीका इस कृति का श्रेष्ठ अलंकरण है। इस ग्रन्थ की मुख्य विशेषता अनेक पाठान्तरों का प्रयोग है। प्राथमिक शिष्यों के लिए यह ग्रन्थ कुंजी के समान है। इसका अनुवाद पूज्य आर्यिका श्री सुविधिमती माताजी ने किया है।

परम पूज्य युवामुनिश्री सुविधिसागर जी महाराज ने इस कृति की महत्वपूर्ण भूमिका लिखी है।

**सहयोग राशि :- ३० रुपये**

## ५. वैराग्यसार (वेरग्गसारो) :-

यह सतहत्तर दोहों में लिखा गया लघुकाय ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के रचयिता आचार्य श्री सुप्रभ जी चौदहवीं सदी के धरतीभूषण थे।

यह ग्रन्थ अज्ञातकर्तृक संस्कृत टीका से सयुक्त है। ग्रन्थ की शैली अत्यन्त सरल व पारिभाषिक शब्दों की कठिनता से रहित है। इस ग्रन्थ का अनुवाद हस्तलिखित प्रति से पूज्य आर्यिका श्री सुयोगमती माताजी ने किया है।

परमपूज्य श्री सुविधिसागर जी महाराज ने इस कृति की मार्मिक भूमिका लिखी है।

**सहयोग राशि :- १५ रुपये**

## ६. कषाय जय भावना :-

दृष्टान्त शैली से भरपूर, अनेक छन्दों से अलंकृत, भाषा की दृष्टि से अत्यन्त सरल, देवनागरी भाषा में मात्र ४१ छन्दो में लिखा गया यह ग्रन्थ अत्यन्त श्रेष्ठ है। **"यथा नाम तथा गुण"** इस उक्ति को चरितार्थ करने वाला यह ग्रन्थ साधकशिष्यों का अच्छा मार्गदर्शन करता है। इसके रचयिता श्री कनककीर्ति जी महाराज है।

परम पूज्य युवामुनि श्री सुविधिसागर जी महाराज ने इस ग्रन्थ का अतिशय सुन्दर अनुवाद किया है।

**सहयोग राशि :- १० रुपये**

## ७. सज्जनचित्त वल्लभ :-

कौन जैनसाहित्यप्रेमी आचार्य श्री मल्लिषेण जी के नाम से अपरिचित होगा ? आचार्य श्री मल्लिषेण का समय ईसवी सन् १०४७ का है। आचार्यदेव की यह प्रेरणादायक लघुकृति है। इस कृति में मात्र २५ पद्य हैं। एक-एक पद्य में अर्थगाम्भीर्य व उपदेश शैली का पूट है। एक-एक पद्य शिथिलाचार का विरोध व साधक शिष्य के लिए सन्मार्गदर्शन करने वाला है।

इस ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद परम पूज्य युवामुनि श्री सुविधिसागर जी महाराज ने किया है।

**सहयोग राशि :- ११ रुपये**

## ८. ज्ञानांकुशम् :-

परम पूज्य, योगीसम्राट श्री योगीन्द्रदेव आचार्य अध्यात्मपिपासु भव्यों के लिए महान मार्गदर्शक हैं। आचार्य श्री के करकमलों से अक्षर विन्यासित यह लघुकाय कृति है। इस ग्रन्थ में मात्र ४४ श्लोक हैं।

ध्यान के विषय में अत्यन्त उपयोगी सामग्री इस ग्रन्थ में पायी जाती है।

परम पूज्य जिनवाणी कण्ठाभरण, मुनिश्री सुविधिसागर जी महाराज ने अनेक आगम, मनोविज्ञान, ध्यानविज्ञान और शरीरविज्ञान का सहयोग लेकर इस कृति का अनुवाद किया है।

**सहयोग राशि :- ३० रुपये.**

## ९. वैराग्य मणिमाला :-

वैराग्य को परिपुष्ट करने के इच्छुक भव्य को इस ग्रन्थ का स्वाध्याय करना चाहिये। इस ग्रन्थ के रचयिता परम पूज्य आचार्य श्री विशालकीर्ति जी महाराज हैं। ग्रन्थ की भाषा अलंकारिक है। ग्रन्थ में कुल ३३ श्लोक हैं।

परम पूज्य जिनवाणी के अनन्य उपासक, मुनिश्री सुविधिसागर जी महाराज ने इस कृति का अनुवाद किया है।

**सहयोग राशि :- १५ रुपये.**

# विधान साहित्य

## १. कल्याणमन्दिर विधान :-

आचार्य श्री कुमुदचन्द्र जी विरचित **कल्याणमन्दिर स्तोत्र** को जैनों के प्रमुख पाँच स्तोत्रों में स्थान दिया गया है। उसके आधार पर इस विधान की रचना हुई है । संस्कृत भाषा में इस विधान की रचना भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति जी ने की है।

संस्कृत विधान को आधार बनाकर परम पूज्य काव्यविधाता मुनि श्री सुविधिसागर जी ने हिन्दी भाषा में विधान रचना की है।

विधान के साथ-साथ स्तोत्र का अर्थ, इतिहास, व्रत की विधि, व्रतजाप्य, विधान का आकर्षक नक्शा आदि का समावेश इस ग्रन्थ की विशेषता है।

**सहयोग राशि :- १७ रुपये.**

## २. भक्तामर विधान :-

आचार्य श्री मानतुंग जी की भक्तिपूर्ण रचना **भक्तामर स्तोत्र** के आधार पर इस विधान की रचना भट्टारक श्री सोमसेन जी ने की है।

इस पुस्तक में परम पूज्य कविहृदय मुनि श्री सुविधिसागर जी महाराज की हिन्दी रचना भी संलग्न है।

इस कृति में भक्तामर स्तोत्र के उत्पत्ति के विषय में प्रचलित ६ कथायें, स्तोत्र का अर्थ, व्रतविधि, जाप्य, ऋद्धिमन्त्र, विधान का नक्शा आदि समस्त आवश्यक अंगों का समावेश है।

**सहयोग राशि :- २० रुपये.**

## ३. रविव्रत विधान :-

परम पूज्य लेखनी के जादूगर , मुनिश्री सुविधिसागर जी महाराज की यह सुमधुर रचना है।

रविव्रतविधान की विधि, व्रतकथा, व्रतजाप्य, मण्डलविधान का नक्शा आदि अंगों की पूर्णता से कृति अतिशय मनोहर बनी है।

**सहयोग राशि :- १५ रुपये.**

## ४. जिनगुणसम्पत्ति व्रत विधान :-

आदिपुराण जैसे महान ग्रन्थों मे महिमा को प्राप्त इस विधान की रचना परम पूज्य जिनवाणी के लाडले सुपुत्र मुनि श्री सुविधिसागर जी महाराज ने की है। इस कृति में व्रतकथा, व्रतजाप्य, व्रतविधि, विधान का नक्शा आदि भी समाहित है।

**सहयोग राशि :– २० रुपये.**

## ५. रोटतीज विधान :-

परम पूज्य युवासन्त श्री सुविधिसागर जी महाराज की जादुई लेखनी से निःसृत यह अनुपम रचना है। साथ में व्रतविधि, व्रतजाप्य, व्रतकथा और विधान का नक्शा भी है।

**सहयोग राशि :– ११ रुपये.**

## ६. श्रुतस्कन्ध विधान :-

अज्ञातकर्तृक लेखक प्रणीत संस्कृत रचना तथा परम पूज्य युवामुनि श्री सुविधिसागर जी महाराज द्वारा रचित हिन्दी रचना इस कृति का वैशिष्ट्य है। साथ में सरस्वती स्तोत्र, व्रतकथा, व्रतविधि, व्रतजाप्य, सरस्वती मन्त्र और विधान का नक्शा भी इस कृति में सम्मिलित है।

**सहयोग राशि :– १५ रुपये.**

## ७. सुगन्धदशमी व्रत विधान :-

यह रचना परम पूज्य श्री सुविधिसागर जी महाराज के पुनीत करकमलों से हुई है। व्रतकथा, व्रतजाप्य, व्रतविधि और विधान का नक्शा भी इस कृति में प्रस्तुत है।

**सहयोग राशि :– १० रुपये.**

## ८. निर्दुःखसप्तमी व्रत विधान :-

यह रचना परम पूज्य श्री सुविधिसागर जी महाराज के पुनीत करकमलों से हुई है। व्रतकथा, व्रतजाप्य, व्रतविधि और विधान का नक्शा भी इस कृति में प्रस्तुत है।

**सहयोग राशि :– १० रुपये.**

# प्रवचन साहित्य

## १. धर्म और संस्कृति :-

उदात्त चिन्तन से भरपूर तथा राष्ट्रभक्ति को जगाने वाला यह प्रवचन है। प्रवचनकर्ता परम पूज्य प्रखरवक्ता मुनि श्री सुविधिसागर जी महाराज हैं।

**सहयोग राशि :- ५ रुपये.**

## २. कैद मे फँसी है आत्मा :-

परम पूज्य आगमनिष्ठ मुनि श्री सुविधिसागर जी महाराज का यह मंगल प्रवचन है। इसमें चतुर्गति के दुःखों का भावप्रवण वर्णन है। परिशिष्ट के रूप में आगम से महान जानकारियाँ दी गई हैं।

**सहयोग राशि :- ६ रुपये.**

## ३. ए बे - लगाम के घोडे ! सावधान ! :-

परम पूज्य मुनि श्री सुविधिसागर जी महाराज के द्वारा लिखित ३२ पत्र इस महाकृति में हैं।

जिसने भी इस कृति को अबतक पढ़ा, उसने एक ही बात कही कि **तुमसा नहीं देखा**।

**सहयोग राशि :- ७५ रुपये.**

## 4. स्मरणशक्ति का विकास कैसे करें ? :-

परम पूज्य अचिन्त्य प्रज्ञाशक्ति युवामुनि श्री सुविधिसागर जी महाराज की यह कालजयी कृति है।

स्मरणशक्ति का विकास कैसे किया जाय ? इस विषय पर आयुर्वेद, मन्त्र, ध्यान, आसन, मुद्रा, एक्युप्रेशर, प्राकृतिक चिकित्सा, होमियोपैथी, चुम्बक चिकित्सा, आहारविज्ञान आदि के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। स्मरणशक्ति के प्रकार विस्मरण के कारण और याद करने की विधि को इस कृति में अच्छी तरह स्पष्ट किया गया है।

**सहयोग राशि :- १० रुपये.**

# क्रीड़ा विश्व

## १. आध्यात्मिक क्रीडालय :-

खेल-खेल में गहन ज्ञान की प्राप्ति का उपाय यह क्रीड़ालय है। इसमें तोल मोल के बोल, चौबीस तीर्थंकर, बारह भावना, णमोकार मन्त्र, एक दिवसीय क्रिकेट और साँपसीढ़ी है।

छह खेलों के क्रीड़ापट के साथ छह सौ प्रश्नों वाली पुस्तक और सम्पूर्ण आवश्यक सामग्री भी है।

**सहयोग राशि :- ५० रुपये.**

## 2. ज्ञाननिधि क्रीडालय :-

**यथा नाम तथा गुण** इस उक्ति को सार्थक करने वाली यह पावन कृति है। बालकों को सहजरूप से धार्मिक ज्ञान प्रदान कराने वाली यह कृति समाज में अबतक इकलौती है। नौ सौ नब्बे प्रश्नों वाली पुस्तक, क्रीड़ापट और सम्पूर्ण आवश्यक सामग्री प्रदान की जाती है।

**सहयोग राशि :- ५० रुपये.**

## ३. ज्ञानार्जन क्रीड़ा मन्दिर :-

दूरदर्शन पर **कौन बनेगा करोड़पति ?** नामक एक क्रीड़ालय का प्रसारण हो रहा था। उसी के आधार पर १० धार्मिक व १० सामाजिक प्रश्न लेकर बनाया हुआ यह क्रीड़ा मन्दिर है।

धार्मिक प्रश्न हो अथवा सामाजिक। अनेक विषयों के आधार से प्रश्नों का संकलन किया गया है। इसतरह का क्रीडालय जैन समाज में प्रथम बार ही प्रकाशित हुआ है।

**सहयोग राशि :- ३५ रुपये.**

## ४. सन्मति क्रीडालय :-

ताश के ५२ पत्तों के माध्यम से जैनधर्म की शिक्षा देने वाला यह अनुपम क्रीड़ालय है। अनोखे प्रश्नों से युक्त जैन समाज में प्रकाशित हुआ इसतरह का अद्वितीय क्रीड़ालय लेने प्रमाद मत कीजियेगा।

**सहयोग राशि :- ५०रुपये.**

# मुक्तक साहित्य

## १. सुविधि मुक्तक मणिमाला - भाग 1

इस कृति में १०८ मुक्तकों का संकलन किया गया है।

**सहयोग राशि :- ५ रुपये.**

सूचना :- अन्तिम पाँच कृतियों के कुशल सर्जक परम पूज्य मुनि श्री सुविधिसागर जी महाराज हैं।

# कैसेट

## १-२. स्तोत्र पाठपुंज - भाग १ व २

इस ओडिओ कैसेट में भक्तामर, कल्याणमन्दिर, एकीभाव, विषापहार और चतुर्विंशतिका स्तोत्र का संकलन है। ९०/९० मीनटों वाली इन दो कैसेटों में मुनिश्री की सुमधुर आवाज है। नागपुर रेडिओ स्टेशन की उद्घोषिका श्रीमती श्रद्धा भारद्वाज की आवाज में स्तोत्रार्थ है तो विदर्भ के सुप्रसिद्ध संगीतकार श्री अनिल अगरकर के संगीत से यह कैसेट सुसज्जित है।

**सहयोग राशि :- प्रत्येकी ५० रुपये.**

## ३. गीतगुंजन

इस कैसेट में मुनिश्री के व्दारा रचित और उनकी ही सुमधुर स्वरलहरियों में निबद्ध भजनों का संकलन किया गया है। इस ७० मीनट की कैसेट को अनिल अगरकर ने संगीत दिया है।

**सहयोग राशि :- ५० रुपये.**

## ४. काव्यकुंज

इस कैसेट में मुनिश्री के व्दारा रचित और उनकी ही सुमधुर स्वरलहरियों में निबद्ध ओजस्वी कविताओं का संकलन किया गया है। इस ६० मीनट की कैसेट को अनिल अगरकर ने संगीत दिया है।

**सहयोग राशि :- ५० रुपये.**